The Horoscope of

Sample Chart

Date	07/05/1973 (Monday)
Time	03:30:29
Place	DELHI
Latitude	028.39.N
Longtitude	077.13.E

Zodiac Sign	Taurus
Lunar Sign	Gemini
Nakshatra Sign	Ardra
Pada	4

नाम	Sample Chart	दादा का नाम	
लिंग	पुरुष	पिता का नाम	
जन्म तिथि	07/05/1973	माता का नाम	
दिन वार	सोमवार	जाति	
जन्म समय	03:30:29 घन्टे	गोत्र	
(समय घटी में)	54:43:24 घटी		
जन्म स्थान	DELHI , INDIA		
अक्षांश	028.39 उत्तर	विक्रमी संवत्	2030
रेखांश	077.13 पूर्व	शक संवत्	1895
समयक्षेत्र	.05.30 घन्टे	मास	वैशाख
समय संशोधन	00.00 घन्टे	पक्ष	शुक्ल
स्थानीय समय	03:09:21 घन्टे	चन्द्र तिथि	5
स्थानीय तिथि	07/05/1973	सूर्योदय कालीन तिथि	4
सूर्योदय	5: 37: 7 घन्टे	तिथि समाप्ति काल	13:1:57 घन्टे
सूर्यास्त	18: 59: 41 घन्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	मृगशिरा
दिनमान	13: 22: 34 घन्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	7:19:46 घन्टे
विषुव काल	18: 7: 48 घन्टे	सूर्योदय कालीन योग	सुकर्मा
भयात	50:24:37 घटी	योग समाप्ति काल	14:38:31 घन्टे
भभोग	54:52:59 घटी	सूर्योदय कालीन करण	विष्टि
ऋतु	वसन्त	करण समाप्ति काल	13:1:57 घन्टे
भोग्य दशा	राहु 1व 5मा 10दि		

अवकहड़ा चक्र

लग्न	मीन
लग्नेश	गुरु
राशि	मिथुन
राशीश	बुध
नक्षत्र	आरद्रा
नक्षत्र स्वामी	राहु
चरण	4
पाया (चंद्र–नक्षत्र)	लोहा–चांदी
योग	धृति
करण	बालव
गण	मनुष्य
योनि	श्वान
नाड़ी	आदि
वर्ण	शूद्र
वश्य	मनुष्य
वर्ग	व्याघ्र
नामाक्षर	छ
युंजा	मघ्य
हंसक तत्व	वायु

घात चक्र

मास	आषाढ़
तिथि	2- 7- 12
दिन	सोमवार
नक्षत्र	स्वाती
योग	परिघ
करण	कौलव
प्रहर	3
वर्ग	मृग
चंद्रमा	कुम्भ

शुभ दिन, वार, रत्न

शुभ दिन	मंगलवार
शुभांक	8
शुभ रंग	गहरा लाल
शुभ रत्न	मूंगा
रत्न धातु	तांबा
रत्न धारक अंगुली	अनामिका (अंगूठें से तीसरी)

जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	स्थिति		राशीश	नक्षत्र	चरण	स्वामी	उपस्वामी
लग्न	मीन	09 17 46			गुरु	उ भाद्रपद	2	शनि	शुक्र
सूर्य	मेष	22 43 50	उच्च		मंगल	भरणी	3	शुक्र	शनि
चन्द्र	मिथुन	18 55 39	मित्र		बुध	आरद्रा	4	राहु	चन्द्र
मंगल	कुम्भ	05 37 30	सम		शनि	घनिष्ठा	4	मंगल	चन्द्र
बुध	मेष	07 59 48	सम		मंगल	अश्विनी	3	केतु	गुरु
गुरु	मकर	17 44 28	नीच		शनि	श्रवण	3	चन्द्र	शनि
शुक्र	मेष	29 48 23	सम	अस्त	मंगल	कृतिका	1	सूर्य	राहु
शनि	वृष	25 39 55	मित्र		शुक्र	मृगशिरा	1	मंगल	राहु
राहु (व)	धनु	15 26 35	सम		गुरु	पूर्वाषाढ़ा	1	शुक्र	शुक्र
केतु (व)	मिथुन	15 26 35	सम		बुध	आरद्रा	3	राहु	शुक्र
यूरेनस (व)	कन्या	26 29 01			बुध	चित्रा	1	मंगल	गुरु
नेप्च्यून (व)	वृश्चिक	13 07 20			मंगल	अनुराधा	3	शनि	राहु
प्लूटो (व)	कन्या	08 31 09			बुध	उ फाल्गुनी	4	सूर्य	शुक्र

चित्रपक्षीय अयनांश 23: 29: 5अंश
राहु व केतु के स्पष्ट अंश हैं

जन्म लग्न

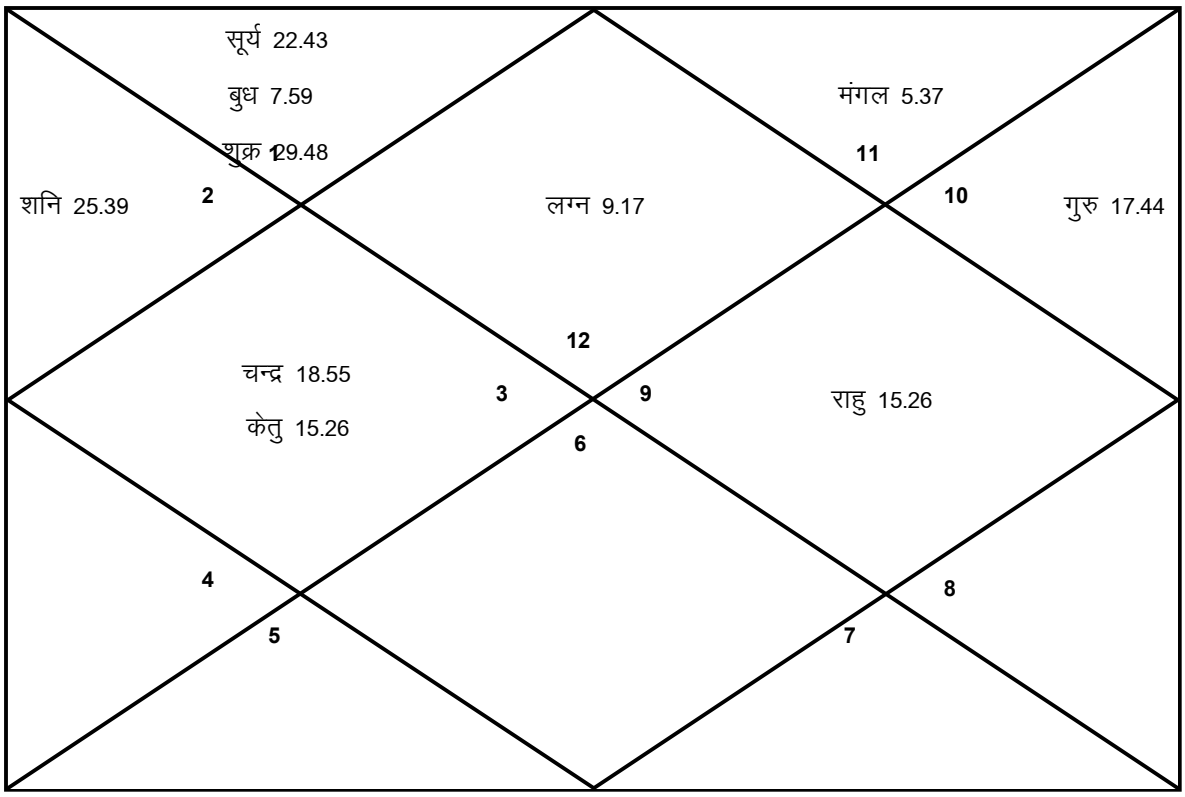

कारकत्व एवं अवस्थाएं

ग्रह	कारक		अवस्थाएं	
	चर कारक	स्थिर कारक	बालादि	शयानादि
सूर्य	भ्रातृ	पिता	वृद्ध	गमनेच्छा
चन्द्र	मातृ	माता	वृद्ध	शयन
मंगल	दारा	पराक्रम	बाल	प्रकाश
बुध	ज्ञाति	बुद्धि	कुमार	गमनेच्छा
गुरु	पुत्र	धन	युवा	भोजन
शुक्र	आत्म	कलत्र	मृत	शयन
शनि	अमात्य	आयुष्य	बाल	शयन
राहु		भ्रम	युवा	शयन
केतु		मोक्ष	युवा	शयन

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आरद्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	मघा	पू फाल्गुनी	उ फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	घनिष्ठा
शतभिषा	पू भाद्रपद	उ भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा

चन्द्र लग्न

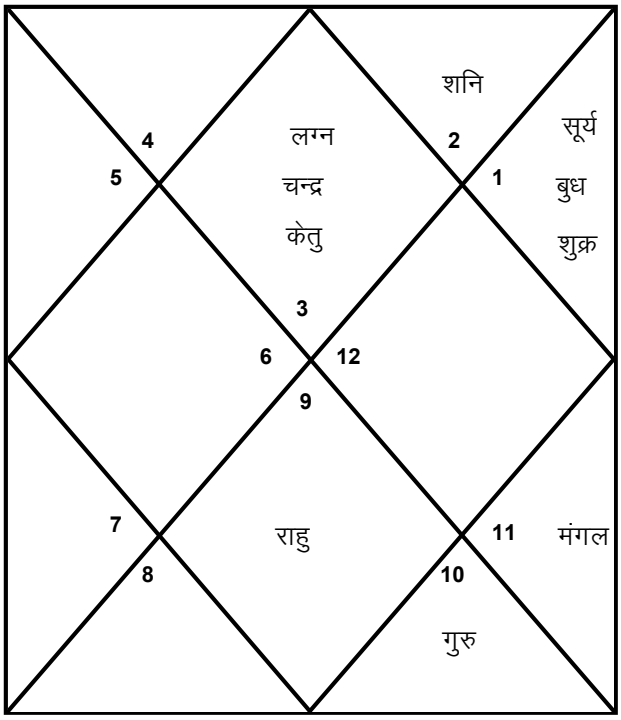

नवमांश

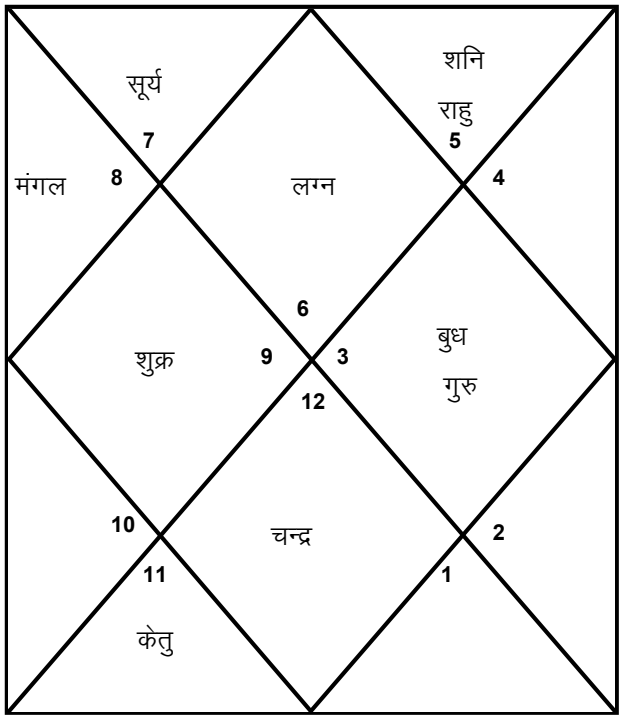

भाव एवं निरयण भाव (कस्प)

भाव	आरम्भ		मध्य	
1	कुम्भ	24:07'	मीन	09:17'
2	मीन	24:07'	मेष	08:57'
3	मेष	23:47'	वृष	08:37'
4	वृष	23:28'	मिथुन	08:18'
5	मिथुन	23:28'	कर्क	08:38'
6	कर्क	23:47'	सिंह	08:57'
7	सिंह	24:07'	कन्या	09:17'
8	कन्या	24:07'	तुला	08:57'
9	तुला	23:47'	वृश्चिक	08:37'
10	वृश्चिक	23:28'	धनु	08:18'
11	धनु	23:28'	मकर	08:38'
12	मकर	23:47'	कुम्भ	08:57'

भाव	राशि	अंश
1	मीन	09: 17'46"
2	मेष	16: 23'38"
3	वृष	14: 24'21"
4	मिथुन	08: 18'01"
5	कर्क	02: 26'28"
6	सिंह	01: 13'40"
7	कन्या	09: 17'46"
8	तुला	16: 23'38"
9	वृश्चिक	14: 24'21"
10	धनु	08: 18'01"
11	मकर	02: 26'28"
12	कुम्भ	01: 13'40"

भाव "चलित"

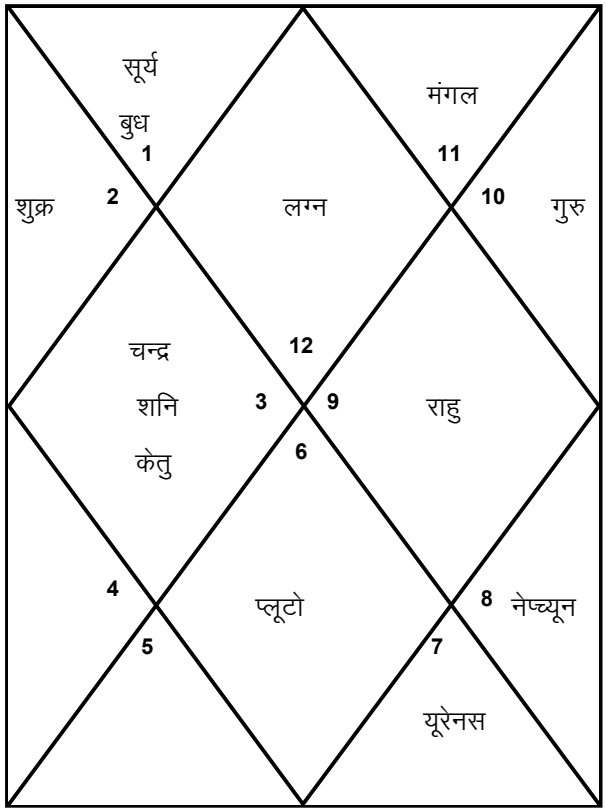

निरयण भाव (कस्प)

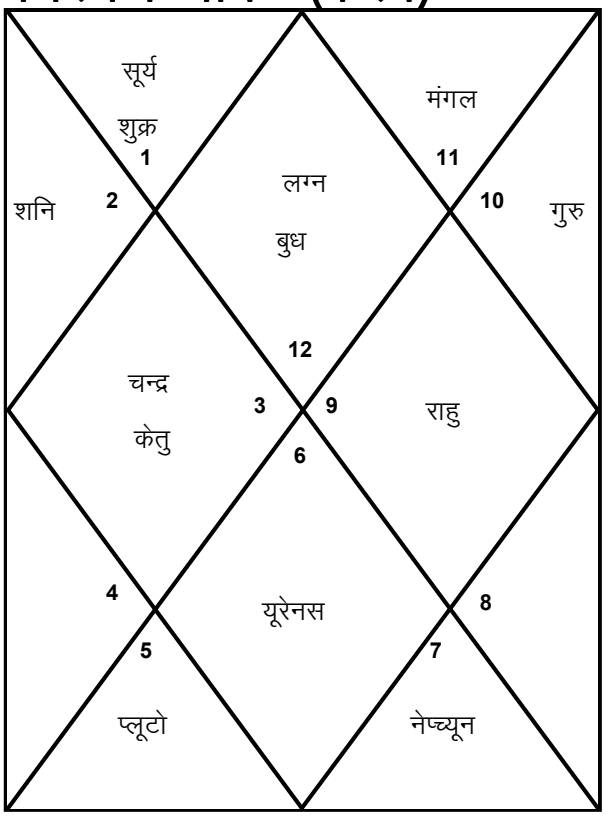

षोडशवर्ग

जन्म लग्न

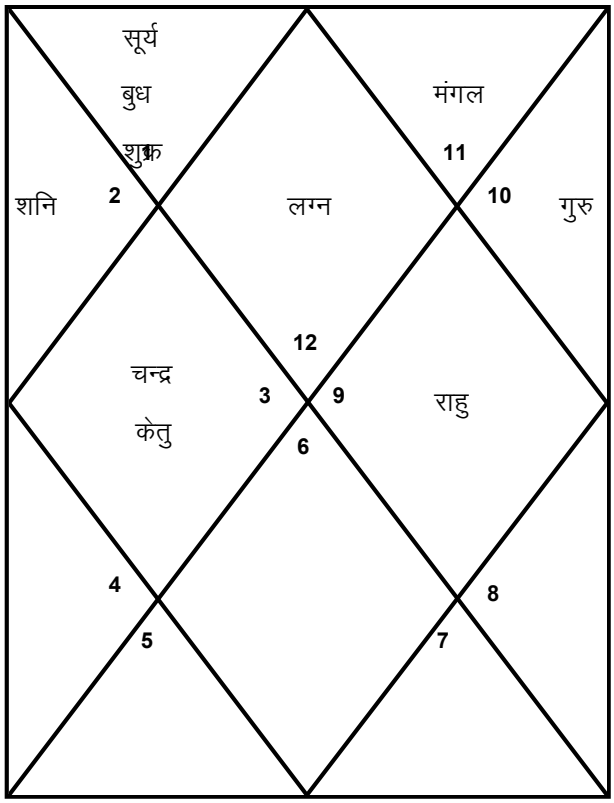

होरा "सम्पति के लिए"

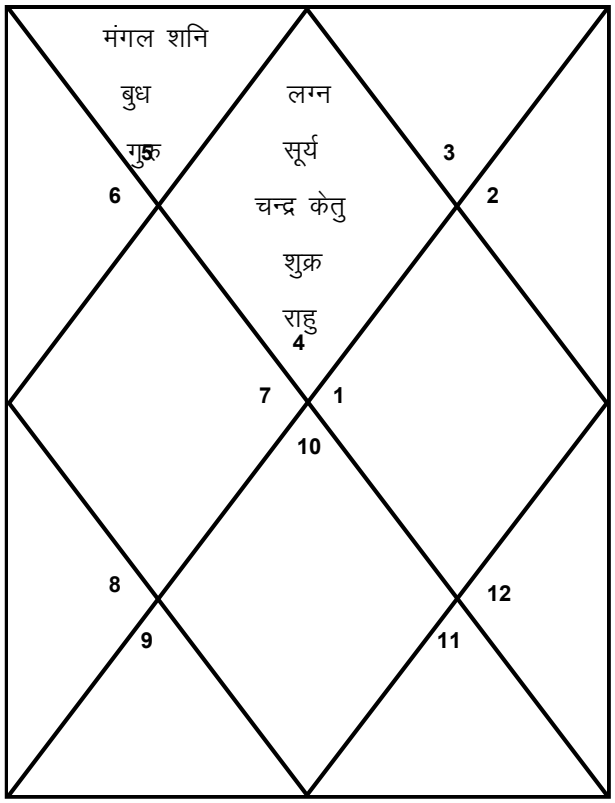

द्रेष्काण "भाई व बहनों के लिए"

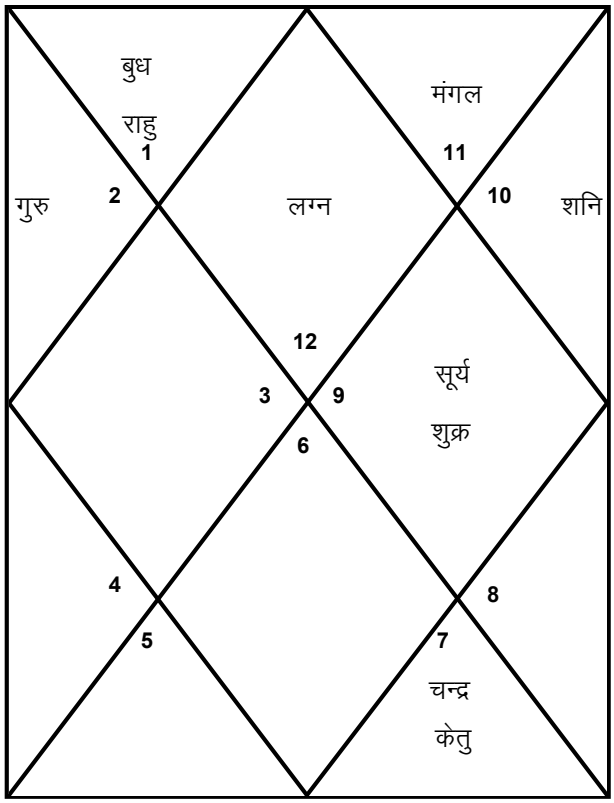

चतुर्थांश "भाग्य के लिए"

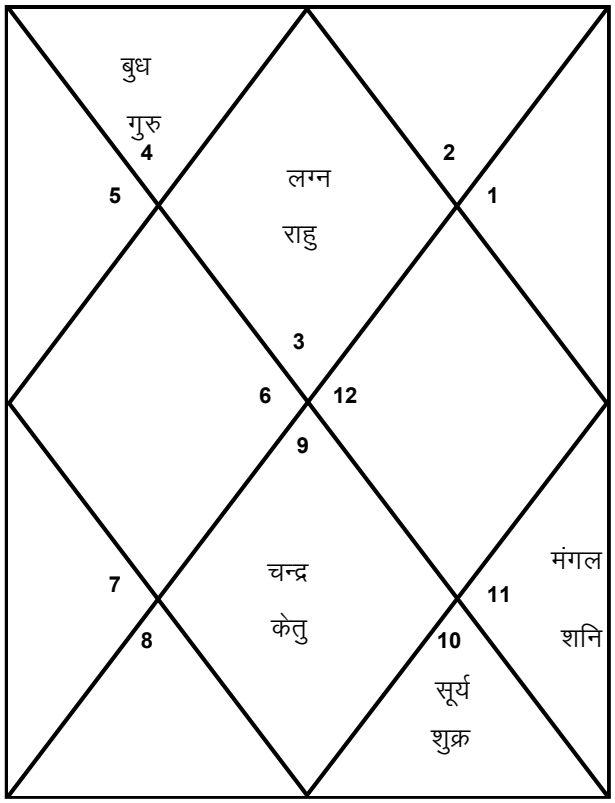

षोडशवर्ग

सप्तमांश "बच्चों के लिए"

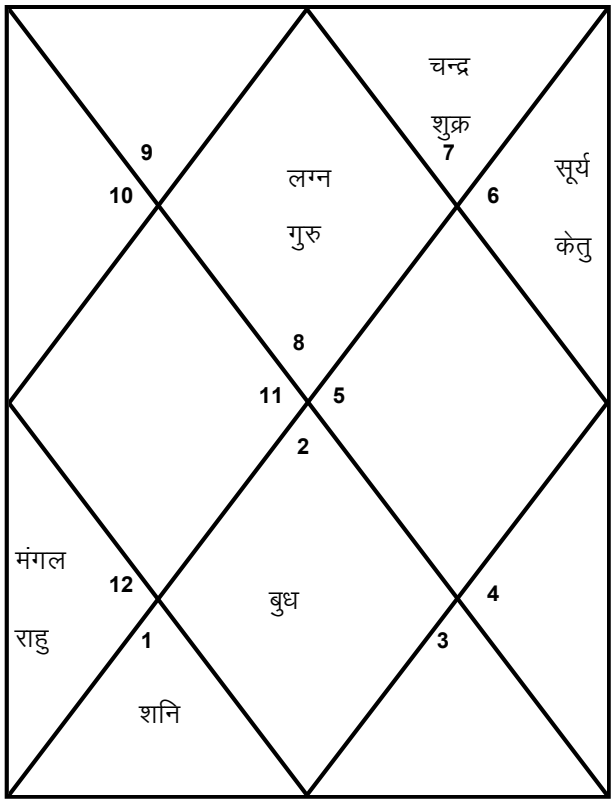

नवमांश

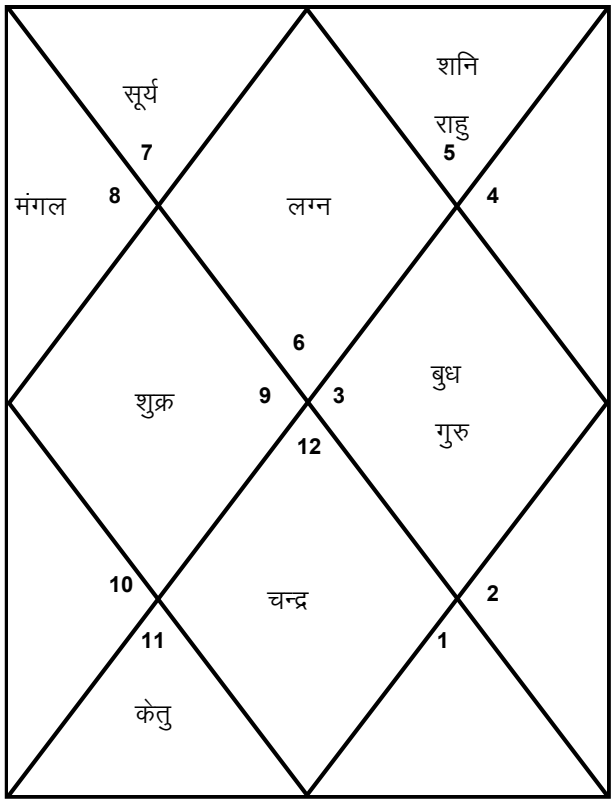

दशमांश "जीवन यापन के लिए"

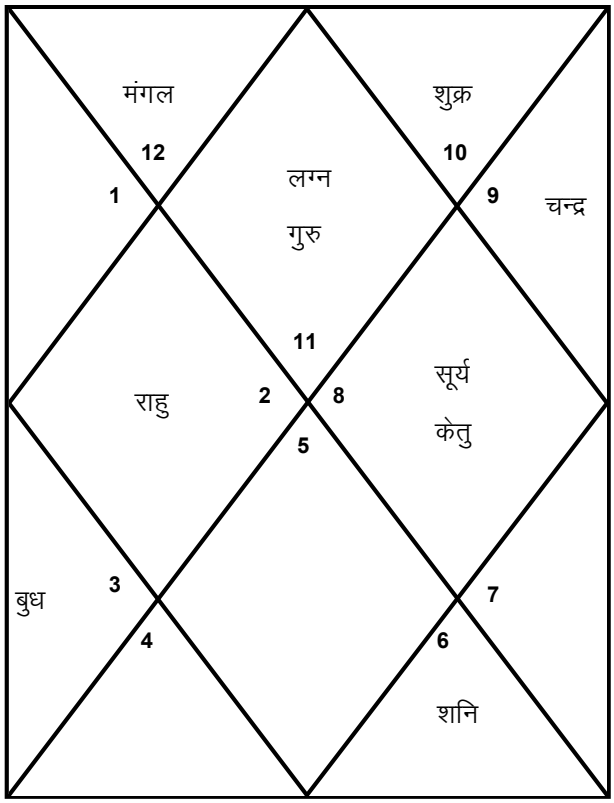

द्वादशांश "माता पिता के लिए"

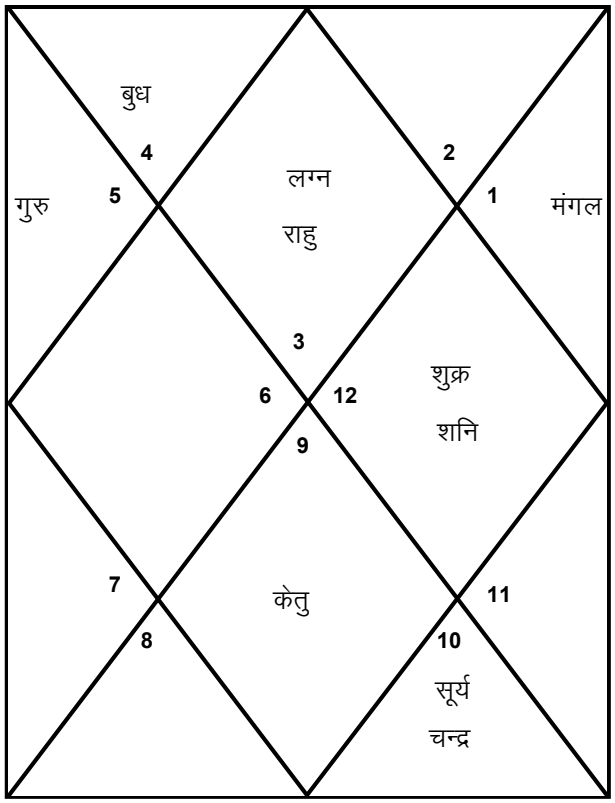

षोडशवर्ग

षोडशांश "वाहन के लिए"

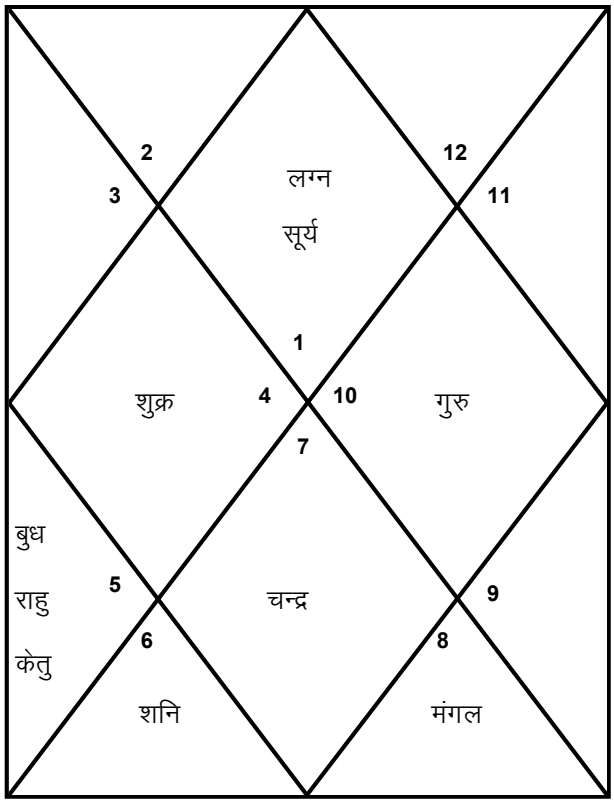

विशांश "धार्मिक प्रवृति के लिए"

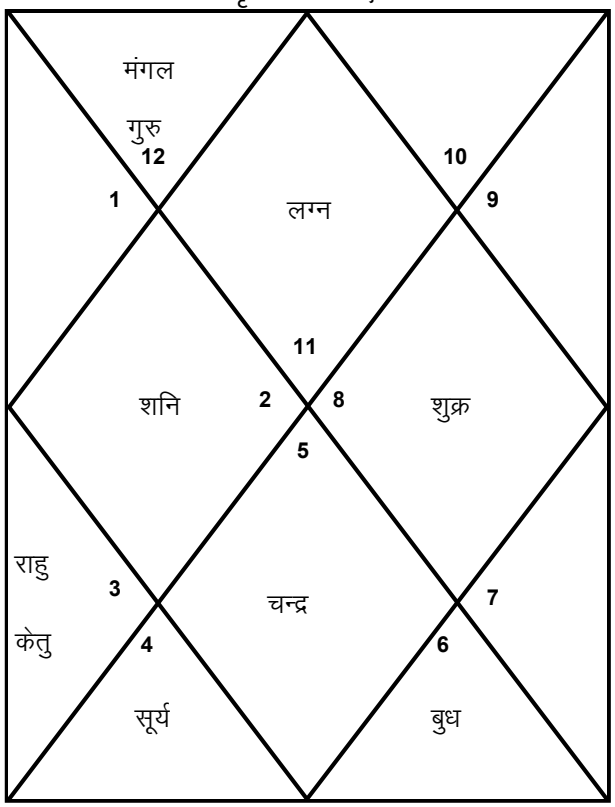

चतुर्विंशांश "विद्या के लिए"

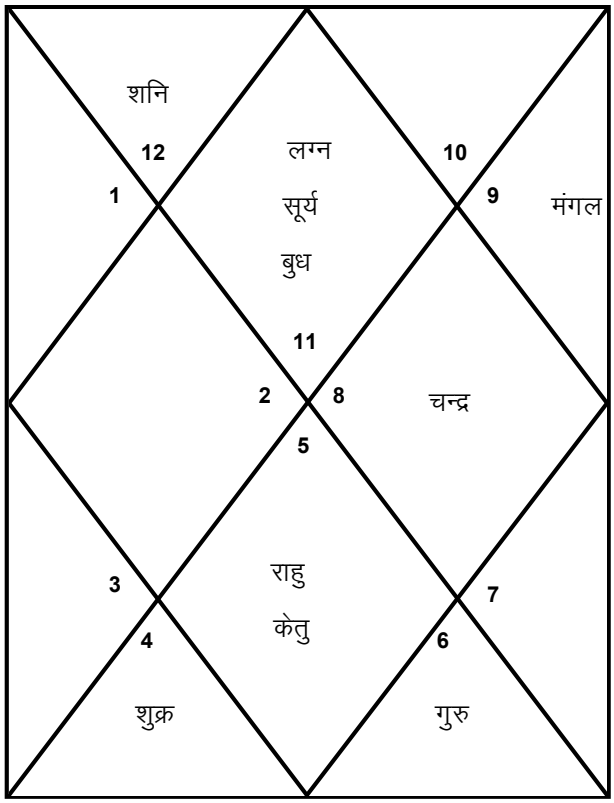

सप्तविशांश "बलाबल के लिए"

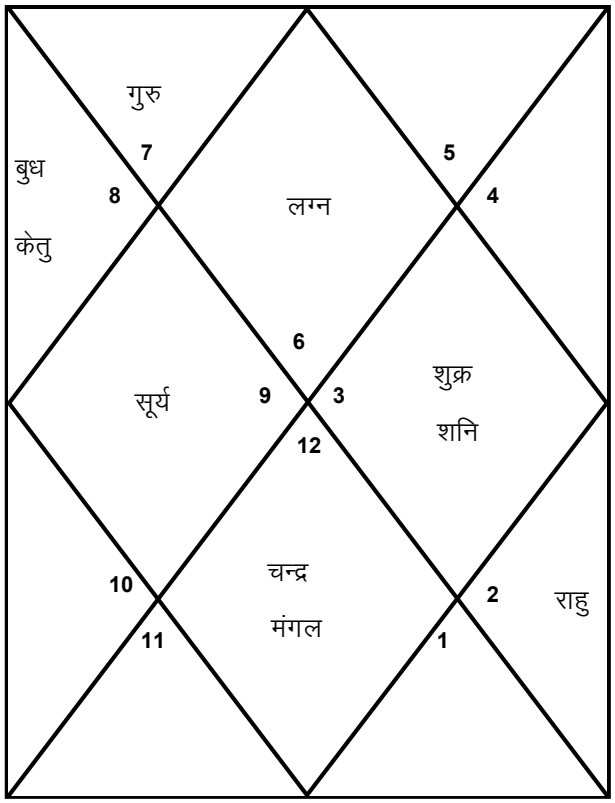

षोडशवर्ग

त्रिंशांशा "अरिष्ट के लिए"

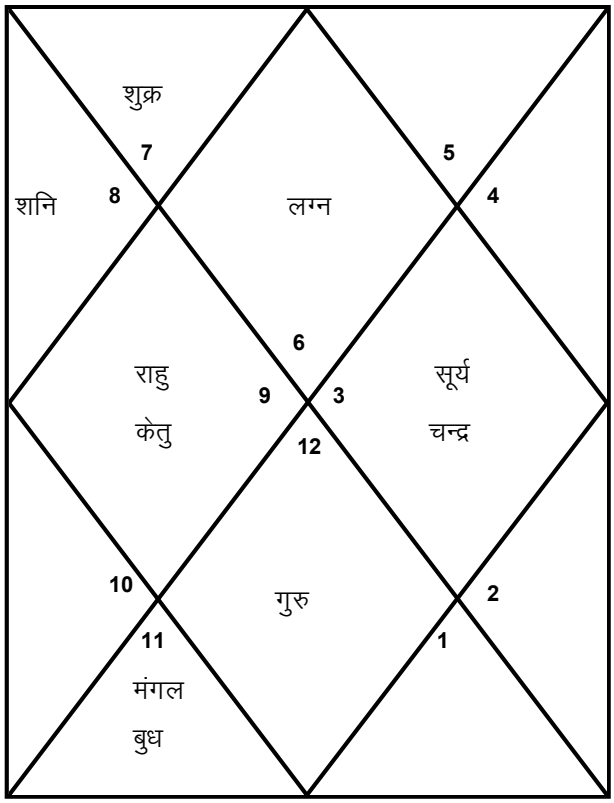

खवेदांश "शुभ के लिए"

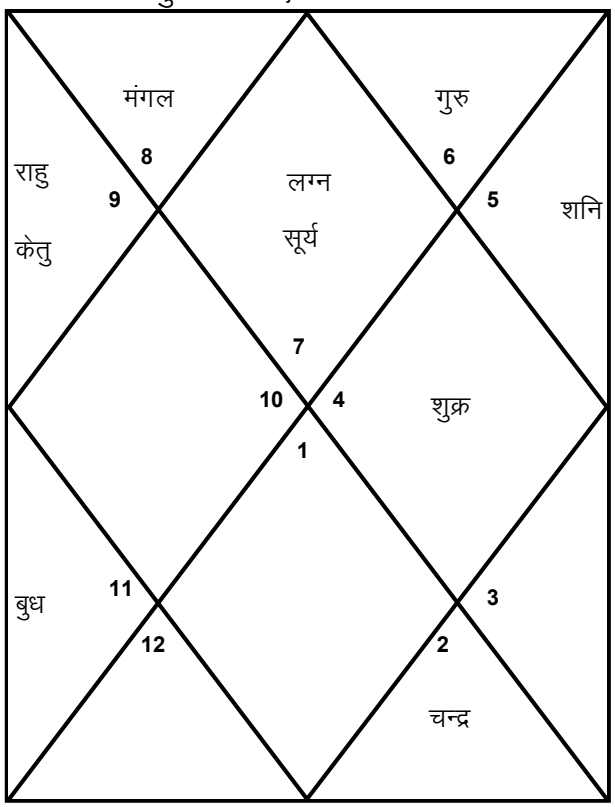

अक्षवेदांश "सर्वास्थिति के लिए"

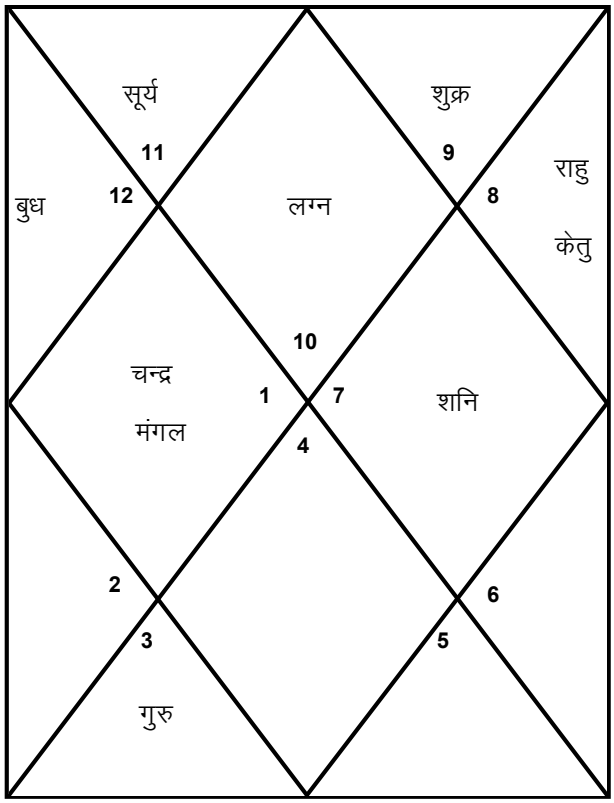

षष्ट्यंश "सर्वास्थिति के लिए"

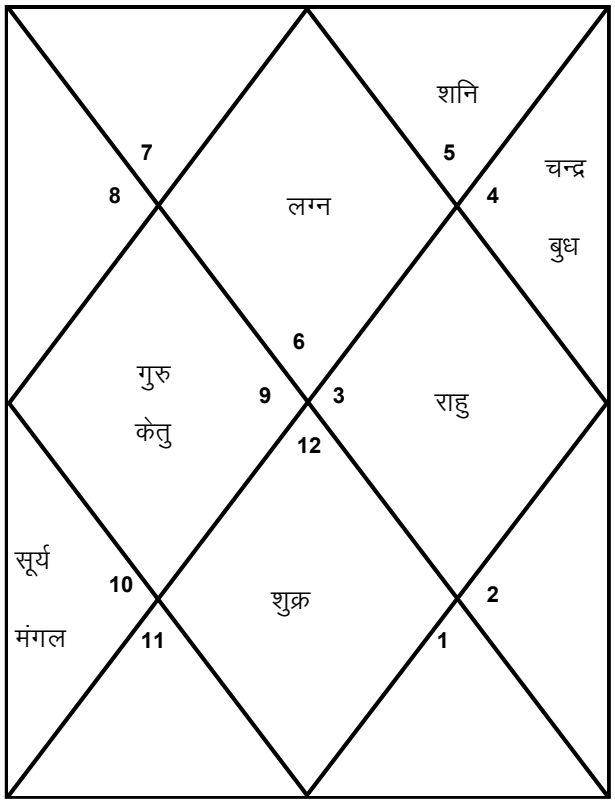

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
जन्म लग्न	मीन	मेष	मिथुन	कुम्भ	मेष	मकर	मेष	वृष	धनु	मिथुन
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	मीन	धनु	तुला	कुम्भ	मेष	वृष	धनु	मकर	मेष	तुला
चतुर्थांश	मिथुन	मकर	धनु	कुम्भ	कर्क	कर्क	मकर	कुम्भ	मिथुन	धनु
सप्तमांश	वृश्चिक	कन्या	तुला	मीन	वृष	वृश्चिक	तुला	मेष	मीन	कन्या
नवमांश	कन्या	तुला	मीन	वृश्चिक	मिथुन	मिथुन	धनु	सिंह	सिंह	कुम्भ
दशमांश	कुम्भ	वृश्चिक	धनु	मीन	मिथुन	कुम्भ	मकर	कन्या	वृष	वृश्चिक
द्वादशांश	मिथुन	मकर	मकर	मेष	कर्क	सिंह	मीन	मीन	मिथुन	धनु
षोडशांश	मेष	मेष	तुला	वृश्चिक	सिंह	मकर	कर्क	कन्या	सिंह	सिंह
विशांश	कुम्भ	कर्क	सिंह	मीन	कन्या	मीन	वृश्चिक	वृष	मिथुन	मिथुन
चतुर्विंशांश	कुम्भ	कुम्भ	वृश्चिक	धनु	कुम्भ	कन्या	कर्क	मीन	सिंह	सिंह
सप्तविशांश	कन्या	धनु	मीन	मीन	वृश्चिक	तुला	मिथुन	मिथुन	वृष	वृश्चिक
त्रिंशांशा	कन्या	मिथुन	मिथुन	कुम्भ	कुम्भ	मीन	तुला	वृश्चिक	धनु	धनु
खवेदांश	तुला	तुला	वृष	वृश्चिक	कुम्भ	कन्या	कर्क	सिंह	धनु	धनु
अक्षवेदांश	मकर	कुम्भ	मेष	मेष	मीन	मिथुन	धनु	तुला	वृश्चिक	वृश्चिक
षष्ट्यंश	कन्या	मकर	कर्क	मकर	कर्क	धनु	मीन	सिंह	मिथुन	धनु

विंशोपक बल

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	13.40	14.55	17.05	15.25	11.20	14.75	14.10	9.70	12.15
सप्तवर्ग	12.93	15.55	17.20	13.75	13.25	15.25	12.83	10.20	11.23
दशवर्ग	12.78	16.10	16.80	13.00	14.15	15.23	12.93	9.40	10.15
षोडशवर्ग	12.50	14.80	17.15	13.88	12.65	14.40	13.60	8.93	10.30

सुदर्शन चक्र

07 / 05 / 1973
03:30:29
लग्न
मंगल
12
11
सूर्य बुध शुक्र
लग्न चन्द्र केतु
शनि
गुरु
1
3
2
10
सूर्य बुध शुक्र
लग्न सूर्य बुध शुक्र
शनि
मंगल
राहु
2
चन्द्र केतु
गुरु
चन्द्र केतु
यूरे प्लूट
राहु
मंगल
नेप्च
नेप्च
यूरे प्लूट
गुरु
नेप्च
राहु
यूरे प्लूट

मैत्री चक्र

नैसर्गिक

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	..	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चन्द्र	मित्र	..	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	..	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	..	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	..	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	..	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	..	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	..	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	..

तात्कालिक

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	..	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
चन्द्र	मित्र	..	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	..	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	..	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	..	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	..	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	..	शत्रु	मित्र
राहु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	..	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	..

पंचधा

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	..	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	अतिशत्रु	सम	अतिशत्रु	सम
चन्द्र	अतिमित्र	..	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	अतिशत्रु	अतिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	..	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	सम	सम	मित्र	..	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	..	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	अतिशत्रु	सम	मित्र	सम	मित्र	..	अतिमित्र	सम	अतिमित्र
शनि	सम	सम	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	..	सम	सम
राहु	अतिशत्रु	अतिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	..	अतिशत्रु
केतु	सम	अतिशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अतिशत्रु	..

प्रस्ताराष्टक वर्ग

लग्न

	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	कुल
शनि	|	0	|	0	|	|	0	|	0	0	0	|	6
गुरु	0	|	|	|	|	0	|	|	|	0	|	|	9
मंगल	0	|	0	0	|	0	0	0	|	|	0	|	5
सूर्य	|	0	0	|	|	0	|	0	0	0	|	|	6
शुक्र	0	|	|	|	|	|	0	0	|	|	0	|	8
बुध	0	|	|	0	|	0	|	0	|	0	|	|	7
चन्द्र	|	|	0	0	0	|	0	0	|	0	0	0	4
लग्न	0	0	|	0	0	|	0	0	0	|	|	0	4
कुल	3	5	5	3	6	4	3	2	5	3	4	6	49

03.45
07.30
11.15
15.00
18.45
22.30
26.15
30.00

सूर्य

	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	कुल
शनि	0	|	|	0	|	0	0	|	|	|	|	|	8
गुरु	0	|	|	0	0	|	0	|	0	0	0	0	4
मंगल	0	|	0	0	|	|	|	|	|	0	|	|	8
सूर्य	|	|	0	|	0	0	|	|	|	|	|	0	8
शुक्र	0	0	0	0	0	|	|	0	0	0	0	|	3
बुध	0	0	|	0	|	|	0	0	|	|	|	|	7
चन्द्र	|	0	0	0	|	0	0	|	0	0	0	|	4
लग्न	0	|	|	0	|	0	0	0	|	|	|	0	6
कुल	2	5	4	1	5	4	3	5	5	4	5	5	48

चन्द्र

	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	मे	वृ	कुल
शनि	0	|	0	|	|	0	0	0	0	|	0	0	4
गुरु	0	|	|	0	|	|	|	|	0	0	|	0	7
मंगल	|	|	0	0	|	|	|	0	0	|	|	0	7
सूर्य	|	0	0	|	|	|	0	|	|	0	0	0	6
शुक्र	|	|	|	0	|	0	|	|	|	0	0	0	7
बुध	|	|	|	0	|	|	0	|	|	0	|	0	8
चन्द्र	|	0	|	0	0	|	|	0	0	|	|	0	6
लग्न	0	0	|	0	0	0	|	|	0	0	0	|	4
कुल	5	5	5	2	6	5	5	5	3	3	4	1	49

03.45
07.30
11.15
15.00
18.45
22.30
26.15
30.00

मंगल

	कु	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुल
शनि	|	|	0	|	0	0	|	0	0	|	|	|	7
गुरु	0	0	0	0	|	0	0	0	|	|	|	0	4
मंगल	|	|	0	|	0	0	|	|	0	|	|	0	7
सूर्य	|	0	0	0	|	0	|	|	0	0	0	|	5
शुक्र	|	|	0	0	0	0	0	|	0	|	0	0	4
बुध	|	0	0	0	|	0	|	|	0	0	0	0	4
चन्द्र	0	0	|	0	0	0	|	0	0	|	0	0	3
लग्न	0	|	0	|	0	0	|	0	0	0	|	|	5
कुल	5	4	1	3	3	0	6	4	1	5	4	3	39

बुध

	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	कुल
शनि	0	|	|	0	|	0	0	|	|	|	|	|	8
गुरु	0	0	|	0	|	0	0	|	|	0	0	0	4
मंगल	0	|	0	0	|	|	|	|	|	0	|	|	8
सूर्य	0	0	0	0	|	|	0	0	|	0	|	|	5
शुक्र	|	|	|	|	|	0	0	|	|	0	|	0	8
बुध	|	0	|	0	|	|	0	0	|	|	|	|	8
चन्द्र	|	0	0	|	0	|	0	|	0	|	0	|	6
लग्न	|	0	|	0	|	0	|	0	|	|	0	|	7
कुल	4	3	5	2	7	4	2	5	7	4	5	6	54

03.45
07.30
11.15
15.00
18.45
22.30
26.15
30.00

गुरु

	म	कु	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	कुल
शनि	0	0	0	|	0	0	|	0	|	|	0	0	4
गुरु	|	|	|	|	0	0	|	|	0	|	|	0	8
मंगल	0	|	|	0	|	0	0	|	|	0	|	|	7
सूर्य	|	|	0	|	|	|	|	0	0	|	|	|	9
शुक्र	|	|	0	0	|	0	0	|	|	0	0	|	6
बुध	|	|	0	|	|	0	|	|	|	0	0	|	8
चन्द्र	0	|	0	|	0	0	|	0	0	|	0	|	5
लग्न	|	0	|	|	0	|	|	|	|	0	|	|	9
कुल	5	6	3	6	4	2	6	5	5	4	4	6	56

शुक्र

	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	कुल
शनि	0	0	0	|	|	|	0	0	|	|	|	|	7
गुरु	0	|	0	0	|	|	|	|	0	0	0	0	5
मंगल	|	0	|	|	0	0	|	0	|	|	0	0	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	|	0	0	|	|	3
शुक्र	|	|	|	|	|	0	0	|	|	|	|	0	9
बुध	0	0	|	0	|	|	0	0	|	0	|	0	5
चन्द्र	|	|	|	|	|	|	|	0	0	|	|	0	9
लग्न	|	|	|	|	0	0	|	|	0	|	0	|	8
कुल	4	4	5	5	5	4	4	4	4	5	5	3	52

03.45
07.30
11.15
15.00
18.45
22.30
26.15
30.00

शनि

	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	मे	कुल
शनि	0	0	|	0	|	|	0	0	0	0	|	0	4
गुरु	|	|	0	0	0	0	|	|	0	0	0	0	4
मंगल	0	|	|	0	0	0	|	|	|	0	0	|	6
सूर्य	|	0	|	0	0	|	|	0	|	|	0	|	7
शुक्र	0	0	0	0	|	0	0	0	0	|	|	0	3
बुध	0	0	0	0	|	0	|	|	|	|	|	0	6
चन्द्र	0	0	0	|	0	0	|	0	0	0	0	|	3
लग्न	|	|	0	|	0	0	0	|	|	0	|	0	6
कुल	3	3	3	2	3	2	5	4	4	3	4	3	39

अष्टकवर्ग

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कुल
सूर्य	2	5	4	1	5	4	3	5	5	4	5	5	48
चन्द्र	4	1	5	5	5	2	6	5	5	5	3	3	49
मंगल	1	3	3	0	6	4	1	5	4	3	5	4	39
बुध	4	3	5	2	7	4	2	5	7	4	5	6	54
गुरु	6	4	2	6	5	5	4	4	6	5	6	3	56
शुक्र	4	4	5	5	5	4	4	4	4	5	5	3	52
शनि	3	3	3	3	2	3	2	5	4	4	3	4	39
लग्न	5	5	3	6	4	3	2	5	3	4	6	3	49
कुल	29	28	30	28	39	29	24	38	38	34	38	31	386
कुल लग्न के बिना	24	23	27	22	35	26	22	33	35	30	32	28	337

शोधित अष्टकवर्ग

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कुल
सूर्य	0	1	1	0	3	0	0	4	3	0	2	4	18
चन्द्र	0	0	2	2	1	1	3	2	1	4	0	0	16
मंगल	0	0	2	0	5	1	0	5	3	0	4	4	24
बुध	0	0	3	0	3	1	0	3	3	1	3	4	21
गुरु	1	0	0	3	0	1	2	1	1	1	4	0	14
शुक्र	0	0	1	2	1	0	0	1	0	1	1	0	7
शनि	1	0	1	0	0	0	0	2	2	1	1	1	9
लग्न	2	2	1	3	1	0	0	2	0	1	4	0	16

एकादिपत्य शोधन

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कुल
सूर्य	0	1	1	0	3	0	0	4	0	0	2	1	12
चन्द्र	0	0	2	2	1	0	3	2	1	4	0	0	15
मंगल	0	0	2	0	5	0	0	5	0	0	4	1	17
बुध	0	0	3	0	3	0	0	3	0	1	3	1	14
गुरु	1	0	0	3	0	1	2	0	1	1	4	0	13
शुक्र	0	0	1	2	1	0	0	1	0	1	1	0	7
शनि	1	0	1	0	0	0	0	1	1	1	1	0	6
लग्न	2	2	1	3	1	0	0	0	0	1	4	0	14

पिंड

	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	129	177	105	230	196	104	50	77
ग्रह पिंड	91	26	50	42	49	59	23	40
शोध्य पिंड	220	203	155	272	245	163	73	117

अष्टकवर्ग चक्र

	शोधन से पूर्व	त्रिकोण शोधन	एकादिपत्य शोधन
सूर्य	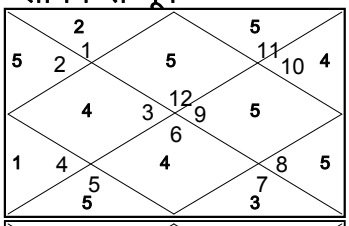	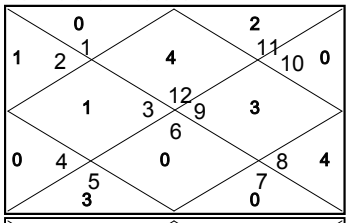	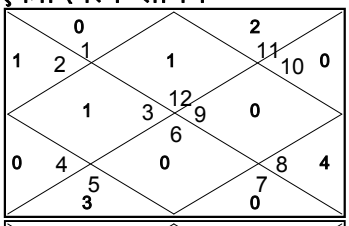
राशि पिंड 177			
ग्रह पिंड 26			
शोध्य पिंड 203			
चन्द्र	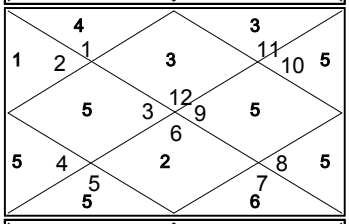	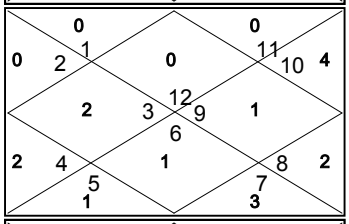	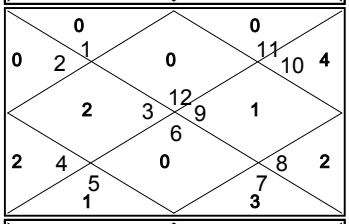
राशि पिंड 105			
ग्रह पिंड 50			
शोध्य पिंड 155			
मंगल	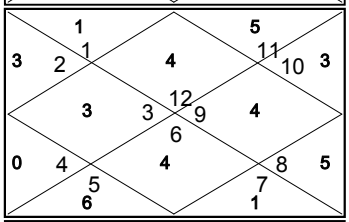	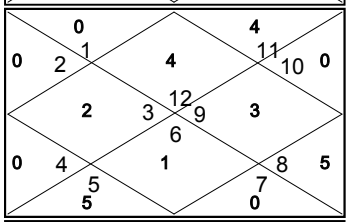	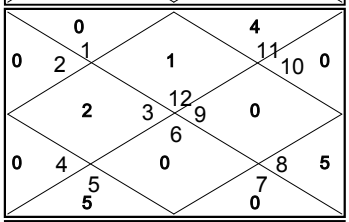
राशि पिंड 230			
ग्रह पिंड 42			
शोध्य पिंड 272			
बुध	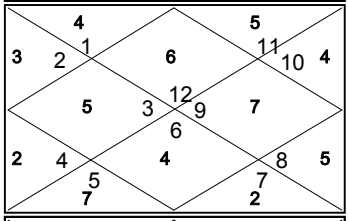	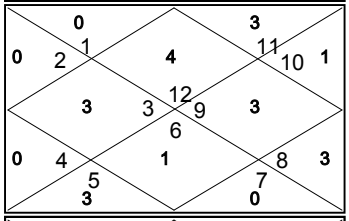	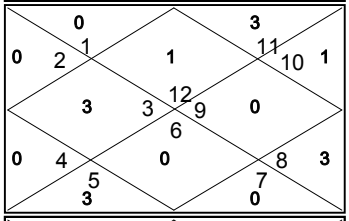
राशि पिंड 196			
ग्रह पिंड 49			
शोध्य पिंड 245			
गुरु	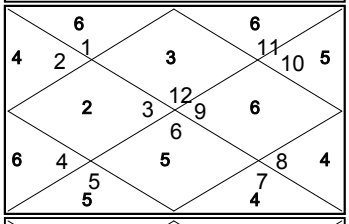	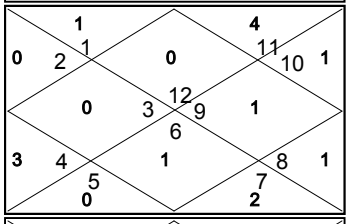	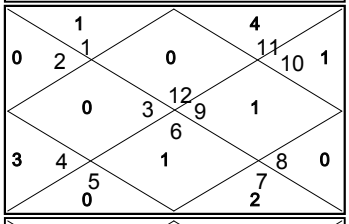
राशि पिंड 104			
ग्रह पिंड 59			
शोध्य पिंड 163			
शुक्र	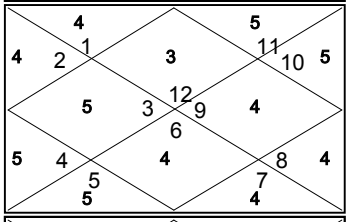	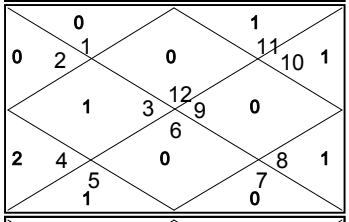	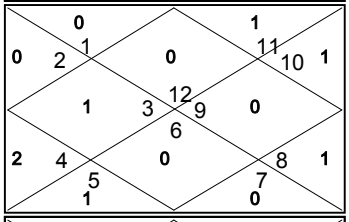
राशि पिंड 50			
ग्रह पिंड 23			
शोध्य पिंड 73			
शनि	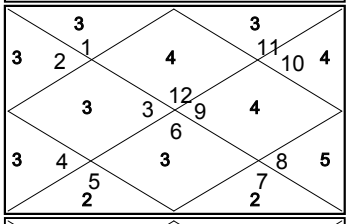	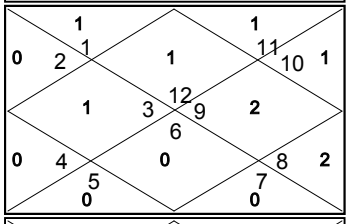	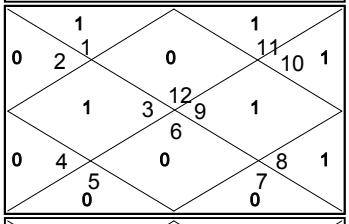
राशि पिंड 77			
ग्रह पिंड 40			
शोध्य पिंड 117			
लग्न	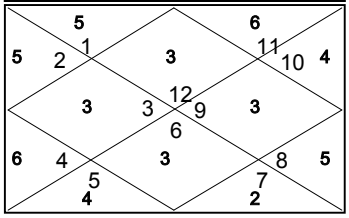	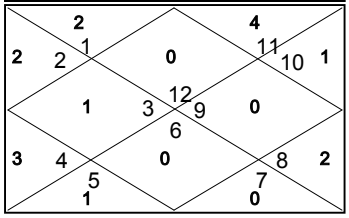	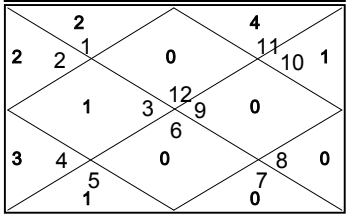
राशि पिंड 129			
ग्रह पिंड 91			
शोध्य पिंड 220			

षडबल

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	55.76	44.69	57.46	7.67	4.25	49.06	11.89
सप्तवर्ग बल	84.38	123.75	150.00	97.50	116.25	127.50	86.25
ओजयुग्मक बल	30.00	15.00	15.00	30.00	15.00	0.00	15.00
केन्द्र बल	30.00	60.00	15.00	30.00	30.00	30.00	15.00
द्रेष्काण बल	0.00	0.00	15.00	0.00	0.00	15.00	0.00
1कुल स्थान बल	200.13	243.44	252.46	165.17	165.50	221.56	128.14
2कुल दिग्बल बल	15.19	56.46	40.89	50.43	42.82	47.17	25.46
नतोन्नत बल	15.78	44.22	44.22	60.00	15.78	15.78	44.22
पक्ष बल	41.27	82.54	41.27	18.73	18.73	18.73	41.27
त्रिभाग बल	0.00	60.00	0.00	0.00	60.00	0.00	0.00
अब्द बल	0.00	15.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मास बल	0.00	0.00	30.00	0.00	0.00	0.00	0.00
वार बल	0.00	45.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
होरा बल	0.00	60.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
अयन बल	102.55	0.90	14.98	45.26	7.89	53.59	0.78
युद्ध बल	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
3कुल काल बल	159.59	307.65	130.47	123.99	102.40	88.10	86.27
4कुल चेष्टा बल	0.00	0.00	31.26	5.02	31.70	5.99	11.99
5कुल नैसर्गिक बल	60.00	51.43	17.14	25.70	34.28	42.85	8.57
6कुल द्रग्बल	2.60	2.02	-14.24	3.10	-16.47	-0.05	2.37
कुल षडबल	437.52	661.00	457.99	373.42	360.22	405.63	262.80
षडबल रुपा में	7.29	11.02	7.63	6.22	6.00	6.76	4.38
न्यूनतम आवश्यकता	5.00	6.00	5.00	7.00	6.50	5.50	5.00
अनुपात	1.46	1.84	1.53	0.89	0.92	1.23	0.88
संबंधित पद	3	1	2	5	6	4	7
इष्ट फल	50.32	28.93	42.38	6.20	11.60	17.15	11.94
कष्ट फल	7.87	25.14	8.55	53.64	39.72	24.30	48.06

भावबल

	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भावाधिपति	360.22	457.99	405.63	373.42	661.00	437.52	373.42	405.63	457.99	360.22	262.80	262.80
भावदिग्बल	30.00	20.00	10.00	30.00	50.00	20.00	0.00	10.00	40.00	30.00	50.00	50.00
भावदृष्टि बल	1.98	32.88	20.25	47.03	81.57	48.90	23.35	102.85	42.84	27.00	18.47	3.79
कुल भावबल	392.20	510.87	435.88	450.44	792.57	506.42	396.76	518.48	540.83	417.22	331.27	316.59
भाव बल रुपा में	6.54	8.51	7.26	7.51	13.21	8.44	6.61	8.64	9.01	6.95	5.52	5.28
संबंधित पद	10	4	7	6	1	5	9	3	2	8	11	12

मिलान तालिका

यदि आप अविवाहित हैं तो निम्न सूचना आपके लिये उपयोगी होगी। अपने भावी जीवन साथी से गुण दोष मिलान के लिए उसका नक्षत्र व चरण निम्न तालिका से मिलाइए ।

नक्षत्र	चरण	गुण	दोष	मिलान
अश्विनी	1 - 4	17	3	अच्छा नहीं है ।
भरणी	1 - 4	26		मध्यम है ।
कृतिका	1 - 1	20	1	मध्यम है ।
कृतिका	2 - 4	17.5	1,4	अच्छा नहीं है ।
रोहिणी	1 - 4	23.5	+4	मध्यम है ।
मृगशिरा	1 - 2	24	0,4	मध्यम है ।
मृगशिरा	3 - 4	33	0	उत्तम है ।
आरद्रा	1 - 4	28	3	मध्यम है ।
पुनर्वसु	1 - 3	24	3	मध्यम है ।
पुनर्वसु	4 - 4	10.5	3,4	अच्छा नहीं है ।
पुष्य	1 - 4	18	4	मध्यम है ।
अश्लेषा	1 - 4	12	1,4	अच्छा नहीं है ।
मघा	1 - 4	22.5	1	मध्यम है ।
पू फाल्गुनी	1 - 4	28.5		मध्यम है ।
उ फाल्गुनी	1 - 1	20.5	3	मध्यम है ।
उ फाल्गुनी	2 - 4	23.5	3	मध्यम है ।
हस्त	1 - 4	22.5	3	मध्यम है ।
चित्रा	1 - 2	27	1	मध्यम है ।
चित्रा	3 - 4	21	1,5	मध्यम है ।
स्वाती	1 - 4	26	+5	मध्यम है ।
विशाखा	1 - 3	21	1,5	मध्यम है ।
विशाखा	4 - 4	14.5	1,6	अच्छा नहीं है ।
अनुराधा	1 - 4	16	2,6	अच्छा नहीं है ।
ज्येष्ठा	1 - 4	3	1,2,36	अच्छा नहीं है ।
मूल	1 - 4	15	1,3	अच्छा नहीं है ।
पूर्वाषाढ़ा	1 - 4	27		मध्यम है ।
उत्तराषाढ़ा	1 - 1	26		मध्यम है ।
उत्तराषाढ़ा	2 - 4	22.5	-6	मध्यम है ।
श्रवण	1 - 4	21.5	-6	मध्यम है ।
घनिष्ठा	1 - 2	17.5	1,6	अच्छा नहीं है ।
घनिष्ठा	3 - 4	20	1,5	अच्छा नहीं है ।
शतभिषा	1 - 4	12	1,3,5	अच्छा नहीं है ।
पू भाद्रपद	1 - 3	18	3,5	अच्छा नहीं है ।
पू भाद्रपद	4 - 4	19	3	अच्छा नहीं है ।
उ भाद्रपद	1 - 4	25.5		मध्यम है ।
रेवती	1 - 4	24.5		मध्यम है ।

दोष प्रकार

0 रन्द्र दोष : 1 गण महा दोषः 2 योनिवर दोषः 3 नाड़ी दोष
4 द्विदाश दोष : 5 नवपंच दोषः 6 भकूट दोषः

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा – राहु 1वर्ष 5मास 10दिन

राहु 18 वर्ष

राहु	00/00/0000 - 00/00/0000
गुरु	00/00/0000 - 00/00/0000
शनि	00/00/0000 - 00/00/0000
बुध	00/00/0000 - 00/00/0000
केतु	00/00/0000 - 00/00/0000
शुक्र	00/00/0000 - 00/00/0000
सूर्य	00/00/0000 - 00/00/0000
चन्द्र	07/05/1973 - 28/09/1973
मंगल	28/09/1973 - 17/10/1974

गुरु 16 वर्ष

गुरु	17/10/1974 - 04/12/1976
शनि	04/12/1976 - 17/06/1979
बुध	17/06/1979 - 22/09/1981
केतु	22/09/1981 - 29/08/1982
शुक्र	29/08/1982 - 29/04/1985
सूर्य	29/04/1985 - 15/02/1986
चन्द्र	15/02/1986 - 17/06/1987
मंगल	17/06/1987 - 23/05/1988
राहु	23/05/1988 - 17/10/1990

शनि 19 वर्ष

शनि	17/10/1990 - 20/10/1993
बुध	20/10/1993 - 29/06/1996
केतु	29/06/1996 - 08/08/1997
शुक्र	08/08/1997 - 07/10/2000
सूर्य	07/10/2000 - 19/09/2001
चन्द्र	19/09/2001 - 21/04/2003
मंगल	21/04/2003 - 30/05/2004
राहु	30/05/2004 - 06/04/2007
गुरु	06/04/2007 - 17/10/2009

बुध 17 वर्ष

बुध	17/10/2009 - 15/03/2012
केतु	15/03/2012 - 12/03/2013
शुक्र	12/03/2013 - 11/01/2016
सूर्य	11/01/2016 - 16/11/2016
चन्द्र	16/11/2016 - 17/04/2018
मंगल	17/04/2018 - 15/04/2019
राहु	15/04/2019 - 01/11/2021
गुरु	01/11/2021 - 07/02/2024
शनि	07/02/2024 - 17/10/2026

केतु 7 वर्ष

केतु	17/10/2026 - 15/03/2027
शुक्र	15/03/2027 - 14/05/2028
सूर्य	14/05/2028 - 19/09/2028
चन्द्र	19/09/2028 - 20/04/2029
मंगल	20/04/2029 - 16/09/2029
राहु	16/09/2029 - 05/10/2030
गुरु	05/10/2030 - 11/09/2031
शनि	11/09/2031 - 20/10/2032
बुध	20/10/2032 - 17/10/2033

शुक्र 20 वर्ष

शुक्र	17/10/2033 - 15/02/2037
सूर्य	15/02/2037 - 16/02/2038
चन्द्र	16/02/2038 - 17/10/2039
मंगल	17/10/2039 - 17/12/2040
राहु	17/12/2040 - 17/12/2043
गुरु	17/12/2043 - 17/08/2046
शनि	17/08/2046 - 17/10/2049
बुध	17/10/2049 - 17/08/2052
केतु	17/08/2052 - 17/10/2053

सूर्य 6 वर्ष

सूर्य	17/10/2053 - 04/02/2054
चन्द्र	04/02/2054 - 05/08/2054
मंगल	05/08/2054 - 11/12/2054
राहु	11/12/2054 - 05/11/2055
गुरु	05/11/2055 - 23/08/2056
शनि	23/08/2056 - 05/08/2057
बुध	05/08/2057 - 11/06/2058
केतु	11/06/2058 - 17/10/2058
शुक्र	17/10/2058 - 17/10/2059

चन्द्र 10 वर्ष

चन्द्र	17/10/2059 - 16/08/2060
मंगल	16/08/2060 - 17/03/2061
राहु	17/03/2061 - 16/09/2062
गुरु	16/09/2062 - 17/01/2064
शनि	17/01/2064 - 17/08/2065
बुध	17/08/2065 - 16/01/2067
केतु	16/01/2067 - 17/08/2067
शुक्र	17/08/2067 - 17/04/2069
सूर्य	17/04/2069 - 17/10/2069

मंगल 7 वर्ष

मंगल	17/10/2069 - 15/03/2070
राहु	15/03/2070 - 03/04/2071
गुरु	03/04/2071 - 09/03/2072
शनि	09/03/2072 - 17/04/2073
बुध	17/04/2073 - 15/04/2074
केतु	15/04/2074 - 11/09/2074
शुक्र	11/09/2074 - 11/11/2075
सूर्य	11/11/2075 - 18/03/2076
चन्द्र	18/03/2076 - 17/10/2076

(प्रत्यंतर)

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा – राहु 1वर्ष 5मास 10दिन

बुध – राहु

राहु	15/04/2019 - 01/09/2019
गुरु	01/09/2019 - 04/01/2020
शनि	04/01/2020 - 30/05/2020
बुध	30/05/2020 - 09/10/2020
केतु	09/10/2020 - 02/12/2020
शुक्र	02/12/2020 - 07/05/2021
सूर्य	07/05/2021 - 22/06/2021
चन्द्र	22/06/2021 - 08/09/2021
मंगल	08/09/2021 - 01/11/2021

बुध – गुरु

गुरु	01/11/2021 - 19/02/2022
शनि	19/02/2022 - 30/06/2022
बुध	30/06/2022 - 26/10/2022
केतु	26/10/2022 - 13/12/2022
शुक्र	13/12/2022 - 30/04/2023
सूर्य	30/04/2023 - 10/06/2023
चन्द्र	10/06/2023 - 18/08/2023
मंगल	18/08/2023 - 06/10/2023
राहु	06/10/2023 - 07/02/2024

बुध – शनि

शनि	07/02/2024 - 12/07/2024
बुध	12/07/2024 - 28/11/2024
केतु	28/11/2024 - 24/01/2025
शुक्र	24/01/2025 - 07/07/2025
सूर्य	07/07/2025 - 25/08/2025
चन्द्र	25/08/2025 - 15/11/2025
मंगल	15/11/2025 - 11/01/2026
राहु	11/01/2026 - 08/06/2026
गुरु	08/06/2026 - 17/10/2026

केतु – केतु

केतु	17/10/2026 - 26/10/2026
शुक्र	26/10/2026 - 20/11/2026
सूर्य	20/11/2026 - 27/11/2026
चन्द्र	27/11/2026 - 09/12/2026
मंगल	09/12/2026 - 18/12/2026
राहु	18/12/2026 - 10/01/2027
गुरु	10/01/2027 - 29/01/2027
शनि	29/01/2027 - 22/02/2027
बुध	22/02/2027 - 15/03/2027

केतु – शुक्र

शुक्र	15/03/2027 - 25/05/2027
सूर्य	25/05/2027 - 15/06/2027
चन्द्र	15/06/2027 - 21/07/2027
मंगल	21/07/2027 - 15/08/2027
राहु	15/08/2027 - 18/10/2027
गुरु	18/10/2027 - 14/12/2027
शनि	14/12/2027 - 19/02/2028
बुध	19/02/2028 - 19/04/2028
केतु	19/04/2028 - 14/05/2028

केतु – सूर्य

सूर्य	14/05/2028 - 21/05/2028
चन्द्र	21/05/2028 - 31/05/2028
मंगल	31/05/2028 - 08/06/2028
राहु	08/06/2028 - 27/06/2028
गुरु	27/06/2028 - 14/07/2028
शनि	14/07/2028 - 03/08/2028
बुध	03/08/2028 - 21/08/2028
केतु	21/08/2028 - 29/08/2028
शुक्र	29/08/2028 - 19/09/2028

केतु – चन्द्र

चन्द्र	19/09/2028 - 07/10/2028
मंगल	07/10/2028 - 19/10/2028
राहु	19/10/2028 - 20/11/2028
गुरु	20/11/2028 - 19/12/2028
शनि	19/12/2028 - 21/01/2029
बुध	21/01/2029 - 21/02/2029
केतु	21/02/2029 - 05/03/2029
शुक्र	05/03/2029 - 10/04/2029
सूर्य	10/04/2029 - 20/04/2029

केतु – मंगल

मंगल	20/04/2029 - 29/04/2029
राहु	29/04/2029 - 21/05/2029
गुरु	21/05/2029 - 10/06/2029
शनि	10/06/2029 - 04/07/2029
बुध	04/07/2029 - 25/07/2029
केतु	25/07/2029 - 03/08/2029
शुक्र	03/08/2029 - 28/08/2029
सूर्य	28/08/2029 - 04/09/2029
चन्द्र	04/09/2029 - 16/09/2029

केतु – राहु

राहु	16/09/2029 - 13/11/2029
गुरु	13/11/2029 - 03/01/2030
शनि	03/01/2030 - 05/03/2030
बुध	05/03/2030 - 28/04/2030
केतु	28/04/2030 - 21/05/2030
शुक्र	21/05/2030 - 23/07/2030
सूर्य	23/07/2030 - 12/08/2030
चन्द्र	12/08/2030 - 13/09/2030
मंगल	13/09/2030 - 05/10/2030

(सूक्ष्म) **विंशोत्तरी दशा**

भोग्य दशा – राहु 1वर्ष 5मास 10दिन

बुध – राहु – राहु

राहु	06/05/2019 03:02:13
गुरु	24/05/2019 18:05:05
शनि	15/06/2019 20:57:15
बुध	05/07/2019 15:56:33
केतु	13/07/2019 19:31:33
शुक्र	06/08/2019 02:20:09
सूर्य	13/08/2019 01:58:43
चन्द्र	24/08/2019 17:23:01
मंगल	01/09/2019 20:58:01

बुध – राहु – गुरु

गुरु	18/09/2019 10:20:38
शनि	08/10/2019 02:13:40
बुध	25/10/2019 16:26:23
केतु	01/11/2019 22:17:30
शुक्र	22/11/2019 15:00:42
सूर्य	28/11/2019 20:01:39
चन्द्र	09/12/2019 04:23:15
मंगल	16/12/2019 10:14:22
राहु	04/01/2020 01:17:14

बुध – राहु – शनि

शनि	27/01/2020 09:39:01
बुध	17/02/2020 07:01:37
केतु	25/02/2020 21:28:34
शुक्र	21/03/2020 11:19:52
सूर्य	28/03/2020 20:17:15
चन्द्र	10/04/2020 03:12:54
मंगल	18/04/2020 17:39:51
राहु	10/05/2020 20:32:01
गुरु	30/05/2020 12:25:03

बुध – राहु – बुध

बुध	18/06/2020 05:01:05
केतु	25/06/2020 21:44:08
शुक्र	17/07/2020 21:30:02
सूर्य	24/07/2020 11:49:48
चन्द्र	04/08/2020 11:42:45
मंगल	12/08/2020 04:25:48
राहु	31/08/2020 23:25:06
गुरु	18/09/2020 13:37:49
शनि	09/10/2020 11:00:25

बुध – राहु – केतु

केतु	12/10/2020 15:04:05
शुक्र	21/10/2020 16:22:59
सूर्य	24/10/2020 09:34:39
चन्द्र	28/10/2020 22:14:06
मंगल	01/11/2020 02:17:42
राहु	09/11/2020 05:52:42
गुरु	16/11/2020 11:43:49
शनि	25/11/2020 02:10:46
बुध	02/12/2020 18:53:49

बुध – राहु – शुक्र

शुक्र	28/12/2020 15:47:53
सूर्य	05/01/2021 10:04:05
चन्द्र	18/01/2021 08:31:05
मंगल	27/01/2021 09:49:59
राहु	19/02/2021 16:38:35
गुरु	12/03/2021 09:21:47
शनि	05/04/2021 23:13:05
बुध	27/04/2021 22:58:59
केतु	07/05/2021 00:17:53

बुध – राहु – सूर्य

सूर्य	09/05/2021 08:10:44
चन्द्र	13/05/2021 05:18:50
मंगल	15/05/2021 22:30:30
राहु	22/05/2021 22:09:04
गुरु	29/05/2021 03:10:01
शनि	05/06/2021 12:07:24
बुध	12/06/2021 02:27:10
केतु	14/06/2021 19:38:50
शुक्र	22/06/2021 13:55:02

बुध – राहु – चन्द्र

चन्द्र	29/06/2021 01:08:35
मंगल	03/07/2021 13:48:02
राहु	15/07/2021 05:12:20
गुरु	25/07/2021 13:33:56
शनि	06/08/2021 20:29:35
बुध	17/08/2021 20:22:32
केतु	22/08/2021 09:01:59
शुक्र	04/09/2021 07:28:59
सूर्य	08/09/2021 04:37:05

बुध – राहु – मंगल

मंगल	11/09/2021 08:40:41
राहु	19/09/2021 12:15:41
गुरु	26/09/2021 18:06:48
शनि	05/10/2021 08:33:45
बुध	13/10/2021 01:16:48
केतु	16/10/2021 05:20:24
शुक्र	25/10/2021 06:39:18
सूर्य	27/10/2021 23:50:58
चन्द्र	01/11/2021 12:30:25

भोग्य दशा – मंगला 0वर्ष 0मास 29दिन

योगिनी दशा

मंगला		पिंगला		धान्या	
मंगला	00/00/0000 - 00/00/0000	पिंगला	05/06/1973 - 16/07/1973	धान्या	05/06/1975 - 04/09/1975
पिंगला	00/00/0000 - 00/00/0000	धान्या	16/07/1973 - 14/09/1973	भ्रामरी	04/09/1975 - 04/01/1976
धान्या	00/00/0000 - 00/00/0000	भ्रामरी	14/09/1973 - 05/12/1973	भद्रिका	04/01/1976 - 04/06/1976
भ्रामरी	00/00/0000 - 00/00/0000	भद्रिका	05/12/1973 - 16/03/1974	उल्का	04/06/1976 - 04/12/1976
भद्रिका	00/00/0000 - 00/00/0000	उल्का	16/03/1974 - 16/07/1974	सिद्धा	04/12/1976 - 05/07/1977
उल्का	00/00/0000 - 00/00/0000	सिद्धा	16/07/1974 - 05/12/1974	संकटा	05/07/1977 - 06/03/1978
सिद्धा	00/00/0000 - 00/00/0000	संकटा	05/12/1974 - 16/05/1975	मंगला	06/03/1978 - 05/04/1978
संकट	07/05/1973 - 05/06/1973	मंगला	16/05/1975 - 05/06/1975	पिंगला	05/04/1978 - 05/06/1978

भ्रामरी		भद्रिका		उल्का	
भ्रामरी	05/06/1978 - 14/11/1978	भद्रिका	05/06/1982 - 14/02/1983	उल्का	05/06/1987 - 04/06/1988
भद्रिका	14/11/1978 - 05/06/1979	उल्का	14/02/1983 - 15/12/1983	सिद्धा	04/06/1988 - 05/08/1989
उल्का	05/06/1979 - 04/02/1980	सिद्धा	15/12/1983 - 04/12/1984	संकटा	05/08/1989 - 05/12/1990
सिद्धा	04/02/1980 - 14/11/1980	संकटा	04/12/1984 - 14/01/1986	मंगला	05/12/1990 - 04/02/1991
संकटा	14/11/1980 - 05/10/1981	मंगला	14/01/1986 - 06/03/1986	पिंगला	04/02/1991 - 05/06/1991
मंगला	05/10/1981 - 14/11/1981	पिंगला	06/03/1986 - 15/06/1986	धान्या	05/06/1991 - 05/12/1991
पिंगला	14/11/1981 - 03/02/1982	धान्या	15/06/1986 - 14/11/1986	भ्रामरी	05/12/1991 - 05/08/1992
धान्या	03/02/1982 - 05/06/1982	भ्रामरी	14/11/1986 - 05/06/1987	भद्रिका	05/08/1992 - 05/06/1993

सिद्धा		संकटा		मंगला	
सिद्धा	05/06/1993 - 15/10/1994	संकटा	05/06/2000 - 16/03/2002	मंगला	05/06/2008 - 15/06/2008
संकटा	15/10/1994 - 05/05/1996	मंगला	16/03/2002 - 06/06/2002	पिंगला	15/06/2008 - 05/07/2008
मंगला	05/05/1996 - 15/07/1996	पिंगला	06/06/2002 - 15/11/2002	धान्या	05/07/2008 - 05/08/2008
पिंगला	15/07/1996 - 05/12/1996	धान्या	15/11/2002 - 16/07/2003	भ्रामरी	05/08/2008 - 14/09/2008
धान्या	05/12/1996 - 06/07/1997	भ्रामरी	16/07/2003 - 05/06/2004	भद्रिका	14/09/2008 - 04/11/2008
भ्रामरी	06/07/1997 - 16/04/1998	भद्रिका	05/06/2004 - 16/07/2005	उल्का	04/11/2008 - 04/01/2009
भद्रिका	16/04/1998 - 06/04/1999	उल्का	16/07/2005 - 15/11/2006	सिद्धा	04/01/2009 - 16/03/2009
उल्का	06/04/1999 - 05/06/2000	सिद्धा	15/11/2006 - 05/06/2008	संकटा	16/03/2009 - 05/06/2009

योगिनी अधिपति

मंगला	: चन्द्र	धान्या	: गुरु	भद्रिका	: बुध	सिद्धा	: शुक्र
पिंगला	: सूर्य	भ्रामरी	: मंगल	उल्का	: शनि	संकटा	: राहु – केतु

भोग्य दशा – मंगला 0वर्ष 0मास 29दिन

योगिनी दशा

पिंगला

पिंगला	05/06/2009 - 16/07/2009
धान्या	16/07/2009 - 14/09/2009
भ्रामरी	14/09/2009 - 05/12/2009
भद्रिका	05/12/2009 - 16/03/2010
उल्का	16/03/2010 - 16/07/2010
सिद्धा	16/07/2010 - 05/12/2010
संकटा	05/12/2010 - 16/05/2011
मंगला	16/05/2011 - 05/06/2011

धान्या

धान्या	05/06/2011 - 04/09/2011
भ्रामरी	04/09/2011 - 04/01/2012
भद्रिका	04/01/2012 - 04/06/2012
उल्का	04/06/2012 - 04/12/2012
सिद्धा	04/12/2012 - 05/07/2013
संकटा	05/07/2013 - 06/03/2014
मंगला	06/03/2014 - 05/04/2014
पिंगला	05/04/2014 - 05/06/2014

भ्रामरी

भ्रामरी	05/06/2014 - 14/11/2014
भद्रिका	14/11/2014 - 05/06/2015
उल्का	05/06/2015 - 04/02/2016
सिद्धा	04/02/2016 - 14/11/2016
संकटा	14/11/2016 - 05/10/2017
मंगला	05/10/2017 - 14/11/2017
पिंगला	14/11/2017 - 03/02/2018
धान्या	03/02/2018 - 05/06/2018

भद्रिका

भद्रिका	05/06/2018 - 14/02/2019
उल्का	14/02/2019 - 15/12/2019
सिद्धा	15/12/2019 - 04/12/2020
संकटा	04/12/2020 - 14/01/2022
मंगला	14/01/2022 - 06/03/2022
पिंगला	06/03/2022 - 15/06/2022
धान्या	15/06/2022 - 14/11/2022
भ्रामरी	14/11/2022 - 05/06/2023

उल्का

उल्का	05/06/2023 - 04/06/2024
सिद्धा	04/06/2024 - 05/08/2025
संकटा	05/08/2025 - 05/12/2026
मंगला	05/12/2026 - 04/02/2027
पिंगला	04/02/2027 - 05/06/2027
धान्या	05/06/2027 - 05/12/2027
भ्रामरी	05/12/2027 - 05/08/2028
भद्रिका	05/08/2028 - 05/06/2029

सिद्धा

सिद्धा	05/06/2029 - 15/10/2030
संकटा	15/10/2030 - 05/05/2032
मंगला	05/05/2032 - 15/07/2032
पिंगला	15/07/2032 - 05/12/2032
धान्या	05/12/2032 - 06/07/2033
भ्रामरी	06/07/2033 - 16/04/2034
भद्रिका	16/04/2034 - 06/04/2035
उल्का	06/04/2035 - 05/06/2036

संकटा

संकटा	05/06/2036 - 16/03/2038
मंगला	16/03/2038 - 06/06/2038
पिंगला	06/06/2038 - 15/11/2038
धान्या	15/11/2038 - 16/07/2039
भ्रामरी	16/07/2039 - 05/06/2040
भद्रिका	05/06/2040 - 16/07/2041
उल्का	16/07/2041 - 15/11/2042
सिद्धा	15/11/2042 - 05/06/2044

मंगला

मंगला	05/06/2044 - 15/06/2044
पिंगला	15/06/2044 - 05/07/2044
धान्या	05/07/2044 - 05/08/2044
भ्रामरी	05/08/2044 - 14/09/2044
भद्रिका	14/09/2044 - 04/11/2044
उल्का	04/11/2044 - 04/01/2045
सिद्धा	04/01/2045 - 16/03/2045
संकटा	16/03/2045 - 05/06/2045

पिंगला

पिंगला	05/06/2045 - 16/07/2045
धान्या	16/07/2045 - 14/09/2045
भ्रामरी	14/09/2045 - 05/12/2045
भद्रिका	05/12/2045 - 16/03/2046
उल्का	16/03/2046 - 16/07/2046
सिद्धा	16/07/2046 - 05/12/2046
संकटा	05/12/2046 - 16/05/2047
मंगला	16/05/2047 - 05/06/2047

योगिनी अधिपति

मंगला	: चन्द्र	धान्या	: गुरु	भद्रिका	: बुध	सिद्धा	: शुक्र
पिंगला	: सूर्य	भ्रामरी	: मंगल	उल्का	: शनि	संकटा	: राहु – केतु

भोग्य दशा – मंगला 0वर्ष 0मास 29दिन

योगिनी दशा

धान्या		भ्रामरी		भद्रिका	
धान्या	05/06/2047 - 04/09/2047	भ्रामरी	05/06/2050 - 14/11/2050	भद्रिका	05/06/2054 - 14/02/2055
भ्रामरी	04/09/2047 - 04/01/2048	भद्रिका	14/11/2050 - 05/06/2051	उल्का	14/02/2055 - 15/12/2055
भद्रिका	04/01/2048 - 04/06/2048	उल्का	05/06/2051 - 04/02/2052	सिद्धा	15/12/2055 - 04/12/2056
उल्का	04/06/2048 - 04/12/2048	सिद्धा	04/02/2052 - 14/11/2052	संकटा	04/12/2056 - 14/01/2058
सिद्धा	04/12/2048 - 05/07/2049	संकटा	14/11/2052 - 05/10/2053	मंगला	14/01/2058 - 06/03/2058
संकटा	05/07/2049 - 06/03/2050	मंगला	05/10/2053 - 14/11/2053	पिंगला	06/03/2058 - 15/06/2058
मंगला	06/03/2050 - 05/04/2050	पिंगला	14/11/2053 - 03/02/2054	धान्या	15/06/2058 - 14/11/2058
पिंगला	05/04/2050 - 05/06/2050	धान्या	03/02/2054 - 05/06/2054	भ्रामरी	14/11/2058 - 05/06/2059

उल्का		सिद्धा		संकटा	
उल्का	05/06/2059 - 04/06/2060	सिद्धा	05/06/2065 - 15/10/2066	संकटा	05/06/2072 - 16/03/2074
सिद्धा	04/06/2060 - 05/08/2061	संकटा	15/10/2066 - 05/05/2068	मंगला	16/03/2074 - 06/06/2074
संकटा	05/08/2061 - 05/12/2062	मंगला	05/05/2068 - 15/07/2068	पिंगला	06/06/2074 - 15/11/2074
मंगला	05/12/2062 - 04/02/2063	पिंगला	15/07/2068 - 05/12/2068	धान्या	15/11/2074 - 16/07/2075
पिंगला	04/02/2063 - 05/06/2063	धान्या	05/12/2068 - 06/07/2069	भ्रामरी	16/07/2075 - 05/06/2076
धान्या	05/06/2063 - 05/12/2063	भ्रामरी	06/07/2069 - 16/04/2070	भद्रिका	05/06/2076 - 16/07/2077
भ्रामरी	05/12/2063 - 05/08/2064	भद्रिका	16/04/2070 - 06/04/2071	उल्का	16/07/2077 - 15/11/2078
भद्रिका	05/08/2064 - 05/06/2065	उल्का	06/04/2071 - 05/06/2072	सिद्धा	15/11/2078 - 05/06/2080

मंगला		पिंगला		धान्या	
मंगला	05/06/2080 - 15/06/2080	पिंगला	05/06/2081 - 16/07/2081	धान्या	05/06/2083 - 04/09/2083
पिंगला	15/06/2080 - 05/07/2080	धान्या	16/07/2081 - 14/09/2081	भ्रामरी	04/09/2083 - 04/01/2084
धान्या	05/07/2080 - 05/08/2080	भ्रामरी	14/09/2081 - 05/12/2081	भद्रिका	04/01/2084 - 04/06/2084
भ्रामरी	05/08/2080 - 14/09/2080	भद्रिका	05/12/2081 - 16/03/2082	उल्का	04/06/2084 - 04/12/2084
भद्रिका	14/09/2080 - 04/11/2080	उल्का	16/03/2082 - 16/07/2082	सिद्धा	04/12/2084 - 05/07/2085
उल्का	04/11/2080 - 04/01/2081	सिद्धा	16/07/2082 - 05/12/2082	संकटा	05/07/2085 - 06/03/2086
सिद्धा	04/01/2081 - 16/03/2081	संकटा	05/12/2082 - 16/05/2083	मंगला	06/03/2086 - 05/04/2086
संकटा	16/03/2081 - 05/06/2081	मंगला	16/05/2083 - 05/06/2083	पिंगला	05/04/2086 - 05/06/2086

योगिनी अधिपति

मंगला	: चन्द्र	धान्या	: गुरु	भद्रिका	: बुध	सिद्धा	: शुक्र
पिंगला	: सूर्य	भ्रामरी	: मंगल	उल्का	: शनि	संकटा	: राहु – केतु

लाल किताब

नाम	Sample Chart	दादा का नाम	
लिंग	पुरुष	पिता का नाम	
जन्म तिथि	07/05/1973	माता का नाम	
दिन वार	सोमवार	जाति	
जन्म समय	03:30:29 घन्टे	गोत्र	
जन्म समय (समय घटी में)	54: 43: 24 घटी		
जन्म स्थान	DELHI	विक्रमी संवत्	2030
अक्षांश	028.39 उत्तर	शक संवत्	1895
रेखांश	077.13 पूर्व	मास	वैशाख
स्थानीय समय	03:09:21 घन्टे	पक्ष	शुक्ल
स्थानीय तिथि	07/05/1973	चन्द्र तिथि	5
सूर्योदय	5: 37: 7 घन्टे	सूर्योदय कालीन तिथि	4
सूर्यास्त	18: 59: 41 घन्टे	तिथि समाप्ति काल	13: 1: 57 घन्टे
दिनमान	13: 22: 34 घन्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	मृगशिरा
विषुव काल	18: 7: 48 घन्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	7: 19: 46 घन्टे
भयात	50:24:37 घटी	सूर्योदय कालीन योग	सुकर्मा
भभोग	54:52:59 घटी	योग समाप्ति काल	14: 38: 31 घन्टे
ऋतु	वसन्त	सूर्योदय कालीन करण	विष्टि
भोग्य दशा	राहु 1व 5मा 10दि	करण समाप्ति काल	13: 1: 57 घन्टे

शत्रु–मित्र सारिणी

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	––	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम
चन्द्र	मित्र	––	सम	मित्र	सम	सम	सम	सम	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	––	शत्रु	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	सम	––	सम	मित्र	सम	मित्र	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	––	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	––	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	––	मित्र	सम
राहु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	––	मित्र
केतु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	सम	मित्र	––

ग्रह फल / राशि फल

ग्रह	वर्णन	ग्रह फल / राशि फल
सूर्य	अपने भुजा बल का स्वामी	..
चन्द्र	खर्चने पर और बढ़ने वाली आय की नदी	ग्रह
मंगल	सुख का राजा	..
बुध	योगी, राजा, मतलब परस्त, ब्रह्मज्ञानी	..
गुरु	खजूर के पेड़ की भांति अकेला	ग्रह
शुक्र	कुटिया उसकी गऊ घाट	..
शनि	अगर हुआ तो दो गुणा मंदा	राशि
राहु	साँप की मणि	..
केतु	बच्चो को डराने वाला कुत्ता	राशि

चन्द्र लग्न

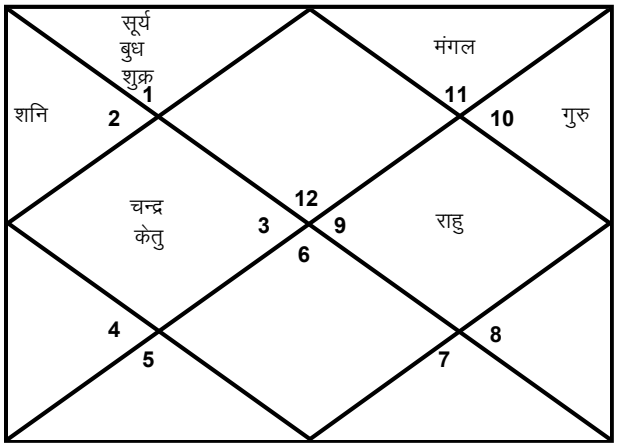

चन्द्र लग्न लाल किताब

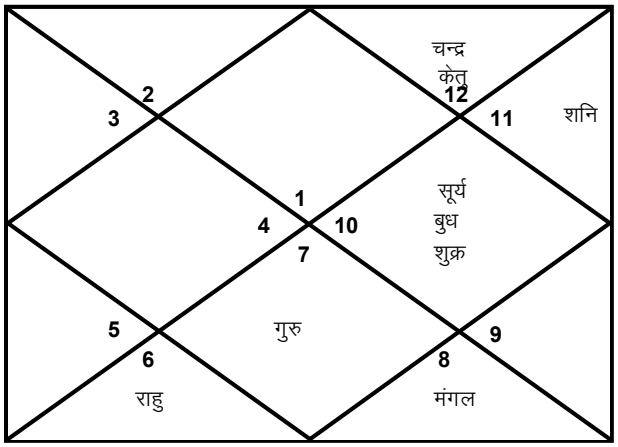

लाल किताब दशा

शनि 6 वर्ष		राहु 6 वर्ष		केतु 3 वर्ष	
मंगल	07/05/1973 - 07/05/1975	केतु	07/05/1979 - 07/05/1981	शुक्र	07/05/1985 - 07/05/1986
गुरु	07/05/1975 - 07/05/1977	बुध	07/05/1981 - 07/05/1983	मंगल	07/05/1986 - 07/05/1987
शुक्र	07/05/1977 - 07/05/1979	मंगल	07/05/1983 - 07/05/1985	बुध	07/05/1987 - 07/05/1988

गुरु 6 वर्ष		सूर्य 2 वर्ष		चन्द्र 1 वर्ष	
बुध	07/05/1988 - 07/05/1990	शनि	07/05/1994 - 07/01/1995	सूर्य	07/05/1996 - 07/09/1996
सूर्य	07/05/1990 - 07/05/1992	राहु	07/01/1995 - 07/09/1995	शनि	07/09/1996 - 07/01/1997
शनि	07/05/1992 - 07/05/1994	केतु	07/09/1995 - 07/05/1996	राहु	07/01/1997 - 07/05/1997

शुक्र 3 वर्ष		मंगल 6 वर्ष		बुध 2 वर्ष	
केतु	07/05/1997 - 07/05/1998	केतु	07/05/2000 - 07/05/2002	राहु	07/05/2006 - 07/01/2007
चन्द्र	07/05/1998 - 07/05/1999	शुक्र	07/05/2002 - 07/05/2004	केतु	07/01/2007 - 07/09/2007
गुरु	07/05/1999 - 07/05/2000	चन्द्र	07/05/2004 - 07/05/2006	सूर्य	07/09/2007 - 07/05/2008

शनि 6 वर्ष		राहु 6 वर्ष		केतु 3 वर्ष	
मंगल	07/05/2008 - 07/05/2010	केतु	07/05/2014 - 07/05/2016	शुक्र	07/05/2020 - 07/05/2021
गुरु	07/05/2010 - 07/05/2012	बुध	07/05/2016 - 07/05/2018	मंगल	07/05/2021 - 07/05/2022
शुक्र	07/05/2012 - 07/05/2014	मंगल	07/05/2018 - 07/05/2020	बुध	07/05/2022 - 07/05/2023

गुरु 6 वर्ष		सूर्य 2 वर्ष		चन्द्र 1 वर्ष	
बुध	07/05/2023 - 07/05/2025	शनि	07/05/2029 - 07/01/2030	सूर्य	07/05/2031 - 07/09/2031
सूर्य	07/05/2025 - 07/05/2027	राहु	07/01/2030 - 07/09/2030	शनि	07/09/2031 - 07/01/2032
शनि	07/05/2027 - 07/05/2029	केतु	07/09/2030 - 07/05/2031	राहु	07/01/2032 - 07/05/2032

शुक्र 3 वर्ष		मंगल 6 वर्ष		बुध 2 वर्ष	
केतु	07/05/2032 - 07/05/2033	केतु	07/05/2035 - 07/05/2037	राहु	07/05/2041 - 07/01/2042
चन्द्र	07/05/2033 - 07/05/2034	शुक्र	07/05/2037 - 07/05/2039	केतु	07/01/2042 - 07/09/2042
गुरु	07/05/2034 - 07/05/2035	चन्द्र	07/05/2039 - 07/05/2041	सूर्य	07/09/2042 - 07/05/2043

लाल किताब दशा

शनि 6 वर्ष		राहु 6 वर्ष		केतु 3 वर्ष	
मंगल	07/05/2043 - 07/05/2045	केतु	07/05/2049 - 07/05/2051	शुक्र	07/05/2055 - 07/05/2056
गुरु	07/05/2045 - 07/05/2047	बुध	07/05/2051 - 07/05/2053	मंगल	07/05/2056 - 07/05/2057
शुक्र	07/05/2047 - 07/05/2049	मंगल	07/05/2053 - 07/05/2055	बुध	07/05/2057 - 07/05/2058

गुरु 6 वर्ष		सूर्य 2 वर्ष		चन्द्र 1 वर्ष	
बुध	07/05/2058 - 07/05/2060	शनि	07/05/2064 - 07/01/2065	सूर्य	07/05/2066 - 07/09/2066
सूर्य	07/05/2060 - 07/05/2062	राहु	07/01/2065 - 07/09/2065	शनि	07/09/2066 - 07/01/2067
शनि	07/05/2062 - 07/05/2064	केतु	07/09/2065 - 07/05/2066	राहु	07/01/2067 - 07/05/2067

शुक्र 3 वर्ष		मंगल 6 वर्ष		बुध 2 वर्ष	
केतु	07/05/2067 - 07/05/2068	केतु	07/05/2070 - 07/05/2072	राहु	07/05/2076 - 07/01/2077
चन्द्र	07/05/2068 - 07/05/2069	शुक्र	07/05/2072 - 07/05/2074	केतु	07/01/2077 - 07/09/2077
गुरु	07/05/2069 - 07/05/2070	चन्द्र	07/05/2074 - 07/05/2076	सूर्य	07/09/2077 - 07/05/2078

शनि 6 वर्ष		राहु 6 वर्ष		केतु 3 वर्ष	
मंगल	07/05/2078 - 07/05/2080	केतु	07/05/2084 - 07/05/2086	शुक्र	07/05/2090 - 07/05/2091
गुरु	07/05/2080 - 07/05/2082	बुध	07/05/2086 - 07/05/2088	मंगल	07/05/2091 - 07/05/2092
शुक्र	07/05/2082 - 07/05/2084	मंगल	07/05/2088 - 07/05/2090	बुध	07/05/2092 - 07/05/2093

गुरु 6 वर्ष		सूर्य 2 वर्ष		चन्द्र 1 वर्ष	
बुध	07/05/2093 - 07/05/2095	शनि	07/05/2099 - 07/01/2100	सूर्य	07/05/2101 - 07/09/2101
सूर्य	07/05/2095 - 07/05/2097	राहु	07/01/2100 - 07/09/2100	शनि	07/09/2101 - 07/01/2102
शनि	07/05/2097 - 07/05/2099	केतु	07/09/2100 - 07/05/2101	राहु	07/01/2102 - 07/05/2102

शुक्र 3 वर्ष		मंगल 6 वर्ष		बुध 2 वर्ष	
केतु	07/05/2102 - 07/05/2103	केतु	07/05/2105 - 07/05/2107	राहु	07/05/2111 - 07/01/2112
चन्द्र	07/05/2103 - 07/05/2104	शुक्र	07/05/2107 - 07/05/2109	केतु	07/01/2112 - 07/09/2112
गुरु	07/05/2104 - 07/05/2105	चन्द्र	07/05/2109 - 07/05/2111	सूर्य	07/09/2112 - 07/05/2113

धर्मी टेवा

लाल किताब में कुछ कुन्डली धर्मी टेवा से प्रभावित होती है । लाल किताब के अनुसार राहु, केतु एवं शनि अशुभ ग्रह माने जाते है । मंगल का प्रभाव यदि अशुभ हो तो यह ग्रह भी अशुभ माना जाता है । धर्मी टेवा में अशुभ ग्रहों का प्रभाव बहुत हद तक कम हो जाता है ।
यदि टेवा में बृहस्पति, शनि के साथ किसी भी घर में स्थित हो या फिर शनि 11वें घर में हो, तो वह धर्मी टेवा कहलाता है । यदि बृहस्पति के साथ शनि हो तो वह कई कष्टों का निवारक होता है एवं जीवन को नियंत्रित कर देता है । खास तौर पर 6ठे, 9वें, 11वें या फिर 12वें घरों में बृहस्पति–शनि का सेंयोग बहुत फलदायक होता है । यदि किसी टेवा में राहु या केतु में से कोई ग्रह 4थे घर में स्थित हो तो भी वह धर्मी टेवा कहलाता है । टेवा में चंद्र का सेंयोग राहु या फिर केतु के साथ किसी भी घर में हाने पर भी वह धर्मी टेवा हो जाता है ।
धर्मी टेवा वाले जातक को परेशानियों के समय ईश्वर की सहायता एवं कृपा प्राप्त हाती है । शनि जो कि भागय एवं मुश्किलों का कारक होता है, बृहस्पति के सेंयोग से जातक के जीवन में शुभ फल प्रदान करता है । वैसे ही राहु अथवा केतु जो कि अशुभ ग्रह माने जाते है, यदि 4थे घर में स्थित हो या फिर चंद्र के साथ किसी भी घर में हो, तो वह जातक को कोई हानि नहर्ि पहुंचाते । धर्मी टेवा में अशुभ ग्रहों कि अशुभता तथा सारी समस्याओं का अंत हो जाता है ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में धर्मी टेवा हैं ।

रतांध ग्रह / अर्द्ध–अंधे ग्रह

लाल किताब के अनुसार कुछ कुन्डली में ग्रहों की स्तिथी अनुकूल होने पर भी वह शुभ फल प्रदान नहर्ि करते । इस प्रकार का टेवा व्यावसायिक जीवन, मन की शांति एवं ग्रहस्थ जीवन के लिए अशुभ सिद्ध होते है । इस प्रकार के टेवे (रतांध ग्रह) उस इन्सान कि तरह होते है जो दिन में देख सकते है परंतु रात्रि में अंधे हो जाते हैं ।
यदि टेवा में 4थे घर में सूर्य और 7वें घर में शनि स्थित हो तो वह अर्द्ध–अंधा टेवा कहलाता है । एसी स्थिती में शनि अपनी दसवर्ि पूर्ण दृष्टि से सूर्य को प्रभावित करता है । शनि की दृष्टि सूर्य पर पड़ने से सूर्य के शुभता, अशुभता में बदल जाती है क्यों कि शनि, 7वें घर में होने से बहुत शक्तिशाली हो जाता है । शनि कि स्थिती से नवम, प्रथम तथा चतुर्थ भाव (जो कि भाग्य, स्वास्थ्य तथा सुख के स्थान है) भी प्रभावित होते हैं और उनके शुभ फल अशुभता में

परिणत हो जाते है ।
अतः एसी स्थिती में सूर्य के उपायों कि कोई मान्यता नहिं है । शनि के अशुभ फलों को नष्ट करने के लिए, जातक को मात्र शनि के उपायों का ही पालन करना चाहिए ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में रतांध ग्रह / अर्द्ध–अंधे ग्रह से प्रभावित नहिं हैं ।

अंधा ग्रह

कुन्डली में दशम भाव का बहुत महत्व होता है क्यों कि यह भाव कर्म से सम्बन्धित होता है । शारीरिक तौर पर यह भाव हड्डीयाँ, पीठ तथा घुटनो के जोड़ से सम्बन्धित है । इस भाव से ओहदा, कीर्ति, उद्योग, व्यापार, बड़ी पदवी की प्राप्ति, अधिकार, नौकरी, राज्य, सत्ता, ऐश्वर्य–भोग एवं प्रतिष्ठा का विचार किया जाता है ।
इस से सम्बन्धित रोग एंव विकार चर्म रोग तथा घुटनो का दर्द है । यदि टेवा में, 10वें घर में कोई भी ग्रह न हो अर्थात खाली हो या फिर 10वें घर में शत्रु ग्रह स्थित हो तो वह अंधा टेवा कहलाता है ।
उदाहरण के तौर पर चंद्र–केतु, शनि–सूर्य, सूर्य–राहु आदि शत्रु ग्रह हैं । इस तरह के ग्रह 10वें भाव में होने से, अपना प्रभाव दूसरे ग्रहों कि शुभता पर ड़ालते है और वह अशुभ फल में परिणत हो जाते हैं ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में अंधा ग्रह से प्रभावित हैं ।

नाबालिग टेवा

लाल किताब के अनुसार चंद कुन्डली कुछ हालतो में बारह साल की उम्र तक नाबालिक टेवे होते है । इस तरह कि कुन्डली वाले जातक की किस्मत 12 साल तक शक्की होती है । एसे बालक के जीवन पर 12 साल तक, कुन्डली का नहिं बलकि उसके पिछले जन्म के भाग्य के असर का प्रभाव रहता है । इस तरह कि कुन्डली के ग्रहों का प्रभाव उस नाबालिक के समान होता है, जो अपने परिवार के बड़ों पर निर्भर हैं और अपने बल पर ज्यादा कुछ हासिल नहिं कर सकता । वैसे ही नाबालिग टेवा में ग्रहों की स्तिथी अनुकूल होने पर भी वह अपना पूर्ण शुभ फल प्रदान नहिं कर पाते ।

यदि टेवा में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम भाव (केंद्र स्थान) में कोई भी ग्रह न हो अर्थात खाली हो अथवा उनमें सिर्फ पापी ग्रह (शनि, राहु या केतु) हो, या फिर इनमें से किसी स्थानो में अकेला बुध स्थित हो, तो वह नाबालिग ग्रहों का टेवा कहलाता है । लाल किताब के अनुसार, नाबालिक टेवा वाले जातक के जीवन पर हरेक ग्रह का प्रभाव, प्रत्येक वर्ष, 12 साल की आयु तक निम्नलिखित अनुसार पड़ता है ।

जातक को अपने जीवन पर इन ग्रहों से पड़ने वाले अशुभ फलों को शुभ फल में परिणत करने के लिए प्रत्येक वर्ष, उन ग्रहों का उपाय करना चाहिए ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में नाबालिग ग्रहों से प्रभावित नहीं हैं ।

जातक की आयु	प्रभाव ड़ालने वाला घर
1	सांतवें घर के ग्रह
2	चौथे घर के ग्रह
3	नौवें घर के ग्रह
4	दसवें घर के ग्रह
5	ग्यारहवें घर के ग्रह
6	तीसरे घर के ग्रह
7	दूसरे घर के ग्रह
8	पांचवें घर के ग्रह
9	छठे घर के ग्रह
10	बारहवें घर के ग्रह
11	पहले घर के ग्रह
12	आठवें घर के ग्रह

पैतृक ऋणभार एवं उपाय

कुन्डली में कुछ ग्रहों की स्तिथी अनुकूल न होने के कारण जातक अपने जीवन में कई प्रकार से ऋणी हो जाता है । इस स्तिथी में जातक के विकास पर भी असर होता है क्यों कि उन दुषित ग्रहों के प्रभाव से शुभ ग्रह भी अपना अनुकूल फल देना बंद कर देते है । इसलिए इस तरह कि कुन्डली वाले जातको को चाहिए कि वह इन ऋण भार से अपने आप को मुक्त करें ताकि ग्रहों के शुभ फल पा सके एवं अपना शेष जीवन सुख पूर्वक व्यतीत कर सके । नीचे ऋणो के कई प्रकार एवं उनके लक्षण दिए गए हैं जिससे जातक के जीवन पर असर पड़ सकता है । साथ में एसी स्थिती के हाने पर उनके उपाय भी दिए गए हैं ।

पितृ ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में शुक्र, बुध या फिर राहु, इनमें से कोई भी ग्रह दूसरे, पांचवे, नौंवे या बारहवें खाने में स्थित हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है ।

पाप का कारणः– घर के पास बने मंदिर को तोड़ देना । पीपल का पेड़ काटना या फिर खानदान के कुल पुरोहित को बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना ।

उपाय

1. कुल खानदान के हरेक सदस्य जहाँ तक खून का सम्बंध है (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन–बेटी, बुआ, भाई, चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर का हिस्सा लेकर के उसी दिन मंदिर में दान कर देना ।
2. पीपल के पेड़ पर 43 दिन लगातार जल चडाए ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में पितृ ऋण का दोष नहीं हैं ।

स्वदोष ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में शुक्र, शनि, राहु या फिर केतु पांचवे खाने में स्थित हो तो जातक पर स्वदोष ऋण होता है ।

पाप का कारणः– कुल के पुराने रस्मों–रिवाजों का पालन न करना या नास्तिक होना ।

पैतृक ऋणभार एवं उपाय

उपाय

1. कुल खानदान के हरेक सदस्य जहाँ तक खून का प्रभाव हो सबका बराबर का हिस्सा लेकर के सूर्य या विश्नू यज्ञ करना या हवन करना ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में स्वदोष ऋण का दोष नहीं हैं ।

मातृ ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में केतु चौथे खाने में स्थित हो तो जातक पर मातृ ऋण होता है ।

पाप का कारणः– अपनी संतान पैदा होने के बाद माता को दरबदर जुदा करना, दुर्व्यवहार करना या दुःखी करना या उनका खुद ही दुःखी हो जाने पर लापरवाही करना, उनके सुख–दुःख का ख्याल नही खरना ।

उपाय

1. चाँदी का सिक्का लेकर उसे दरिया या बहते पानी में बहाया जाए ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में मातृ ऋण का दोष हैं । ऋण मुक्ति के लिए कृप्या ऊपर दिए उपाय का पालन करें ।

भ्रातृ/पारिवारिक ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में बुध अथवा शुक्र प्रथम अथवा अष्टम खाने में स्थित हो तो जातक पर भ्रातृ/पारिवारिक ऋण होता है ।

पाप का कारणः– किसी के पके हुए खेत को आग लगा देना या किसी का मकान बनने पर आग लगा देना । भाईयों या रिश्तेदारों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन एवं

पारिवारिक त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना ।

उपाय

1. किसी खेराती संस्था को दवाईयँा दान करें ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में भ्रातृ/पारिवारिक ऋण का दोष नहर्हैं ।

स्त्री ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में सूर्य, चंद्र या फिर राहु इनमें से कोई भी ग्रह दूसरे अथवा सातवें खाने में स्थित हो तो जातक पर स्त्री ऋण होता है ।

पाप का कारणः– अपनी पत्नी या कुल की किसी स्त्री का किसी लालच या सम्बंध के कारण मार देना या किसी स्त्री को बच्चे जनने की हालत में किसी लालच के कारण जान से मार देना ।

उपाय

1. 100 गायों को एक ही दिन में चारा खिलाएँ ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में स्त्री ऋण का दोष नहर्हैं ।

कन्या/बहन ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में चंद्र तीसरे अथवा छठे खाने में स्थित हो तो जातक पर कन्या/बहन का ऋण होता है ।

पाप का कारणः– किसी की लड़की या बहन की हत्या करना या हद से ज्यादा जुल्म करना । बहन का ख्याल न रखना या किसी लड़की को धोखा देना ।

पैतृक ऋणभार एवं उपाय

उपाय

1. पीले रंग की कौड़ियां खरीद कर एक जगह इकट्ठी करके जलाकर राख कर उसी दिन दरिया या बहते पानी में बहा दे ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में कन्या/बहन ऋण का दोष नहीं हैं ।

क्रूर/जालिमाना ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में सूर्य, चंद्र या फिर मंगल, इनमें से कोई भी ग्रह दशम अथवा ग्यारहवें खाने में स्थित हो तो जातक पर क्रूर/जालिमाना ऋण होता है ।

पाप का कारणः– किसी का मकान अथवा जमीन धोखेसे ले लेना, उसकी कीमत किसी तरह भी अदा न करना ।

उपाय

1. 100 मजदूरों को अथवा अलग–अलग जगह की 100 मछलियों को एक ही दिन में खाना खिलाएँ ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में क्रूर/जालिमाना ऋण का दोष नहीं हैं ।

अजन्म/पैदा न हुए का ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में सूर्य, शुक्र अथवा मंगल, इनमें से कोई भी ग्रह बारहवें खाने में स्थित हो तो जातक पर आजन्मकृत ऋण होता है ।

पाप का कारणः– ससुराल से धोखा या आपसी रिश्तेदारी में धोखा फरेब की घटनाएँ, ऐसे ढंग से कि दूसरों का कुल ही तबाह हो गया हो ।

पैतृक ऋणभार एवं उपाय

उपाय

1. एक नारियल लेकर उसी दिन दरिया या बहते पानी में बहा दे ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में अजन्म/पैदा न हुए का ऋण का दोष नहीं हैं ।

प्रकृती ऋण

लक्षण :– लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुन्डली में चंद्र या फिर मंगल छठे खाने में स्थित हो तो जातक पर प्रकृती/कुदरती ऋण होता है ।

पाप का कारणः– कुत्तों को मारना या मरवाना, बदचलनी या अपने भतीजे से धोखा करना, ऐसे ढंग से कि हद से अधिक तबाही हो जाए ।

उपाय

1. 100 कुत्तों को एक ही दिन में खाना खिलाएँ ।
2. किसी विदवाह की सेवा करके उसका आशीर्वाद प्राप्त करें ।

निष्कर्ष

आपकी पत्री में प्रकृती ऋण का दोष नहीं हैं ।

सूर्य ग्रह का प्रभाव

दूसरे घर में सूर्य की स्थिति हुनरमंद बनाती है और आपको बढ़िया वाहन का सुख मिलता है । यदि आपकी पत्नी अथवा घन मंदी हालत में हो तो आपको नारियल एवं बादाम दान करने चाहिए । आपको अपनी बाजुओं पर भरोसा होना चाहिए । जहाँ तक हो सके आप किसी से कुछ भी चीज मुफ्त न लिया करें, ।

उपाय

1. नारियल और बादाम का दान करें
2. किसी से कुछ भी मुफ्त न लें।

चन्द्र ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्म पत्रिका में चंद्रमा चौथे घर में यह दर्शाता है कि आपको जमीन और वाहन का अच्छा सुख मिलेगा । कपड़े से सम्बन्धित कार्य करना आपके लिए शुभ है । इस घर का चंद्रमा बुढ़ापे में भी सुख देता है तथा सरकारी खर्चे से विदेशी यात्रा करने के लिए अवसर मिलते हैं । आप जितना घन खर्च करेंगे उतना ही आपका घन बढ़ेगा ।

उपाय

1. दुग्ध उत्पादों का व्यवसाय न करें।
2. मां के साथ मिलकर कपड़े का व्यवसाय करने से लाभ होगा।
3. दूध एवं पानी का दान करते रहें।

मंगल ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्म पत्रिका के बारहवें खाने में मंगल की स्थिति यह दर्शाती है कि आपको मुसिबत के समय दैवीय सहायता मिलेगी । आपके और आपकी पत्नी के विचारों में मतभेद रहेंगे । आपके बारे में झूठी अफवाहें फैल सकती हैं । आपके नेत्रों में कोई विकार उत्पन्न हाने की

सम्भावना है । आप घन को अच्छे कार्यों में खर्च करते हैं । आपके हाथों पर चोट लगने की सम्भावना हो सकती है ।

उपाय

1. सुबह उठते ही बिना कुल्ला किए थोड़ा सा शहद खाएं।
2. मंगलवार के दिन मन्दिर में प्रसाद अवश्य चढ़ाएं।
3. घर में बिना धार का चाकू व हथियार न रखें।
4. मीठा दान करते रहने से आप तकलीफों से दूर रहेंगे।

बुध ग्रह का प्रभाव

दूसरे घर में बुघ होने से आपके पिता की स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है । आप मेहनत से ही घनी बनेंगे और अपनी पत्नी के साथ सहयोग करते रहेंगे । आपको अच्छी संगीत की पहचान है । आप उपदेश देने की कला में माहिर हैं । आप पर कोई इल्जाम लग सकता है अतः सावघान रहे । मांसाहारी होने से मान–सम्मान में कमी एवं आर्थिक हानि होने की पूरी सम्भावना है ।

उपाय

1. कुंवारी कन्याओं की सेवा करें।
2. मंदिर में दूध एवं चावल का दान करें।
3. चौड़े पत्तों वाले पौधे घर में न रखें।

गुरु ग्रह का प्रभाव

ग्यारहवें भाव में गुरु की स्थिति यह उजागर करती है कि आपको जीवन में सहायता एवं लाभ प्राप्त होता रहेगा । आपके पिताजी का दीर्घजीवि होना आपके लिए सौभाग्यशाली रहेगा । परिवार के साथ मिलजुल कर कार्य करने से आपको लाभ रहेगा परंतु अकेले रहने पर आप दुखी हो सकते हैं । आप दीन दुखी निर्घन लोगों की सहायता करेंगे तथा घर्म पर

विश्वास रखेंगे जिससे आपकी उन्नति होगी । नेत्र विकार होने की सम्भावना रहेगी । मित्रजनों के साथ आपकी अच्छी मित्रता रहेगी तथा आपके जीवन में आमदनी के कई स्रोत होंगे । लेकिन घन की स्थिरता कम रहेगी इसलिए सावघानी रखें ।

उपाय

1. शराब न पीएं।
2. छोटी कन्याओं का आशीर्वाद लें।
3. गौ माता की सेवा करें।
4. केशर एवं हल्दी अपने घर में अवश्य रखें।

शुक्र ग्रह का प्रभाव

आपके जन्म समय में शुक्र दूसरे घर में होने से आपको आयु–आरोग्य का लाभ प्राप्त होगा तथा घन ऐश्वर्य एवं औलाद का सुख रहेगा । आप मेहनती भी हैं तथा आपको पारिवारिक सुख सहयोग रहेगा एवं काम–काज अच्छा चलता रहेगा । आयु के साथ – साथ आपके घन में भी वृद्धि होती चली जाएगी । भगवान पर विश्वास करने से आपकी सभी इच्छाएँ पूर्ण होंगी । स्त्री का पूरा सुख प्राप्त होगा । अपना चरित्र ठीक रखें जिससे आपको सफलता प्राप्त होगी । संतान की उत्पत्ति में बाघा हो सकती है । गुप्त रोगों के प्रति जीवन में सावघानी रखें ।

उपाय

1. अपना चरित्र अच्छा रखें।
2. गाय का घी मंदिर में दान करें।
3. सवा किलो आलू हल्दी में रंग कर गाय को खिलायें।

शनि ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्म कुण्डली के तीसरे खाने में शनि होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा । आप

पराक्रमी होंगे तथा परिश्रम से घन कमाएंगे । आप दूसरों की मदद करेंगे । आप चल तथा अचल सम्पत्ति को जोड़ने के प्रति क्रियाशील रहेंगे । आप संघर्षशील जीवन यापन करेंगे । आँखों के प्रति सावघानी रखें तथा आँखों की दवा दूसरों को न दें इससे आपकी आँखों पर बुरा असर हो सकता है । भाई – बहनों का सुख सहयोग मध्यम रहेगा ।

उपाय

1. काली बस्तुओं का दान करें।
2. भूरा या काला कुत्ता पालें।
3. घर के मुख्य दरवाजे की चौखट के नीचे कीलें गाड़ दें।

राहु ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्म पत्रिका के दसवें घर में राहु होने से आप पराक्रमी, साहसी एवं अच्छी सूझ–बूझ व्यक्ति होंगे । लंबी आयु तक आपकी मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी । आपको जीवन में शासन की ओर से उच्च अधिकार तथा यश लाभ प्राप्त होगा । आप वैभव से युक्त रहेंगे । स्वतन्त्र रूप से व्यापार व कार्य करने से आपको उत्तम लाभ की प्राप्ति होगी । माता के लिए बुरा असर रहेगा । नेत्रों में विकार हो सकता है ।

उपाय

1. काले रंग के वस्त्रों को धारण न करें।
2. दिल खोल कर दान करें, आधिक कंजूसी न करें।
3. बहते जल में मसूर बहाएं।

केतु ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्म कुण्डली के चौथे खाने में केतु की स्थिति यह दर्शाती है कि आप धैर्यवान् हैं । ईश्वर पर आपकी श्रद्धा भक्ति रहेगी । आप चारित्रिक गुणो से सम्पन्न हैं । आपके घर में लड़की का जन्म होना सौभाग्य सूचक रहेगा । घर में घन ऐश्वर्य की वृद्धि होगी । सम्पत्ति

सम्बन्धी सामान्य परेशानी आदि होने के योग हैं । आप अच्छे आवास तथा वाहन के सुख से सम्पन्न रहेंगे । आपकी माता को सामान्य कष्ट हो सकता है ।

उपाय

1. चितकबरे कुत्ते को पालें।
2. गुरु से सम्बन्धित वस्तुएं बहते पानी में बहाएं या भूमि में दबा दें।
3. चांदी का छल्ला धारण करें।

Sample Chart

वर्ष 2019 - 2020 लाल किताब वर्ष कुण्डली

जन्म लग्न

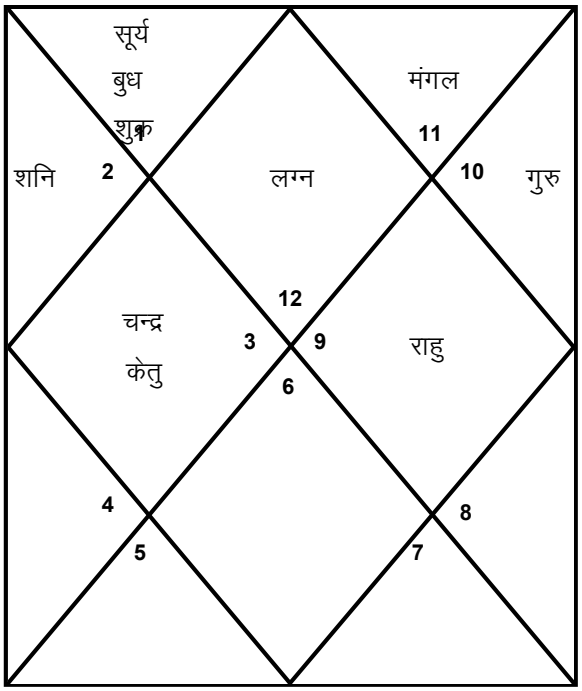

लाल किताब कुण्डली

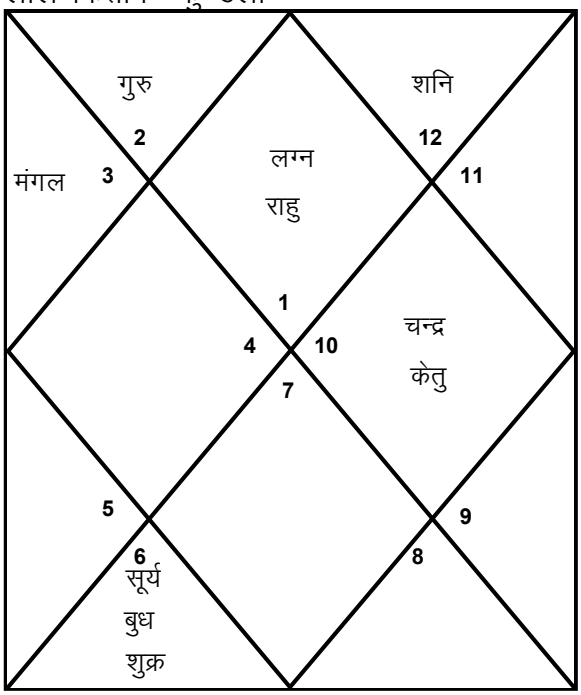

लाल किताब उपाय

ग्रह	उपाय
सूर्य	भूरी चींटियों को आटा ड़ालें । तांबे के चौकोर टुकड़े जमीन में दबाएं ।
चन्द्र	सूर्यास्त के बाद दूध का सेवन न करें ।
मंगल	सबसे छोटी उंगली में शुद्ध चाँदी का ढलाई द्वारा निर्मित छल्ला पहनें ।
बुध	पन्ना घारण करें ।
गुरु	माथे पर हल्दी अथवा केसर का तिलक लगाएँ । यदि आपके घर / दफ्तर के पास गढ्ढे हैं तो उन्हे फौरन भरवा दें ।
शुक्र	नहाने के पानी में कुछ दही मिलाकर स्नान करें ।
शनि	झूठ न बोलें ।
राहु	गले में चाँदी की चेन में चाँदी का चौकोर टुकड़ा पहनें । नीले व काले कपड़े न पहनें ।
केतु	घर / दफ्तर में चाँदी की गोल डिब्बी में शहद भरकर रखें ।

उपग्रह एवं आरुढ़

उपग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	चरण
लग्न	मीन	09 17 46	उ भाद्रपद	2
गुलिक	वृश्चिक	27 35 15	ज्येष्ठा	4
काल	धनु	15 56 15	पूर्वाषाढ़ा	1
मृत्यू	कुम्भ	00 12 40	घनिष्ठा	3
यमघंटक	तुला	23 20 34	विशाखा	2
अर्द्धप्रहर	वृश्चिक	27 35 15	ज्येष्ठा	4
घूम	कन्या	06 03 50	उ फाल्गुनी	3
व्यतिपात	तुला	23 56 10	विशाखा	2
परिवेश	मेष	23 56 10	भरणी	4
इन्द्रचाप	मीन	06 03 50	उ भाद्रपद	1
उपकेतू	मीन	22 43 50	रेवती	2

उपग्रह

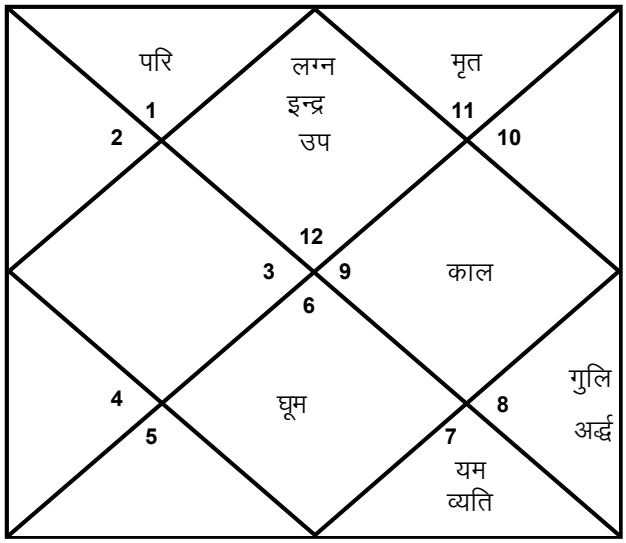

विशेष लग्न

भाव लग्न	कुम्भ	07:38:16	64वां नवमांश	मिथुन
होरा लग्न	वृष	02:20:50	22वां द्रेष्काण	तुला
घटिका लग्न	वृश्चिक	13:33:21	इन्दु लग्न	धनु
बीज स्फुट	मीन	10:16:41		
प्राणपद	कर्क	18:43:50		

चर कारक

आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा
शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	गुरु	बुध	मंगल
29 48	25 39	22 43	18 55	17 44	07 59	05 37

नवमांश

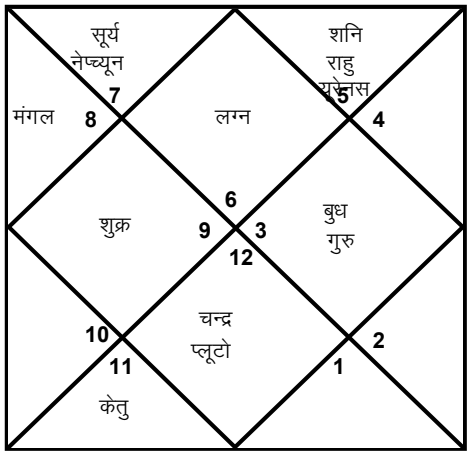

जन्म लग्न

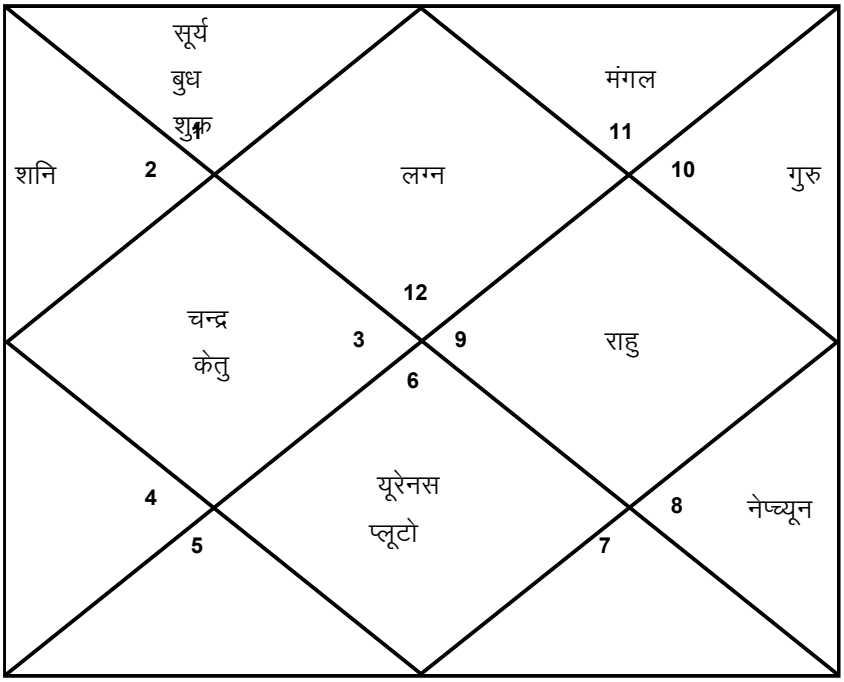

पद कुण्डली

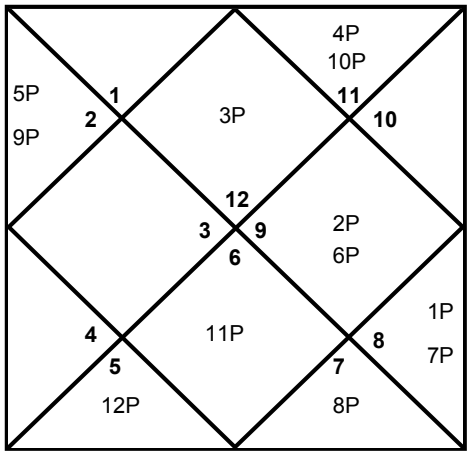

कारकाँश कुण्डली

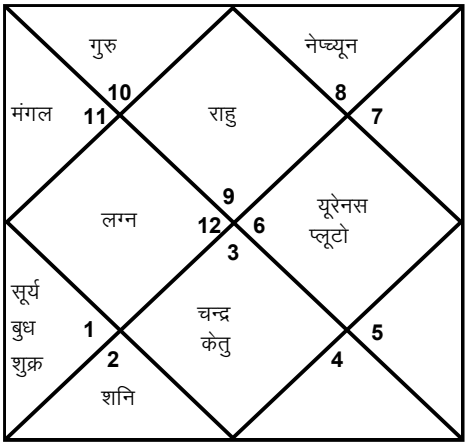

स्वांश कुण्डली

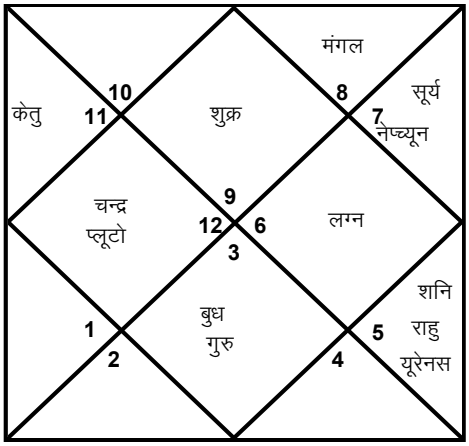

जैमिनी दृष्टि

सूर्य	मंगल
चन्द्र	राहु,केतु
मंगल	सूर्य,बुध,शुक्र
बुध	मंगल
गुरु	शनि
शुक्र	मंगल
शनि	गुरु
राहु	चन्द्र,केतु
केतु	चन्द्र,राहु

चर दशा

मीन	2 Yr 07/05/1973 - 07/05/1975	कर्क	1 Yr 07/05/2006 - 07/05/2007	वृश्चिक	7 Yr 07/05/2022 - 07/05/2029
मेष	10 Yr 07/05/1975 - 07/05/1985	सिंह	4 Yr 07/05/2007 - 07/05/2011	धनु	1 Yr 07/05/2029 - 07/05/2030
वृष	11 Yr 07/05/1985 - 07/05/1996	कन्या	5 Yr 07/05/2011 - 07/05/2016	मकर	8 Yr 07/05/2030 - 07/05/2038
मिथुन	10 Yr 07/05/1996 - 07/05/2006	तुला	6 Yr 07/05/2016 - 07/05/2022	कुम्भ	9 Yr 07/05/2038 - 07/05/2047

नाम	Sample Chart
लिंग	पुरुष
जन्म तिथि	07/05/1973
दिन वार	सोमवार
जन्म समय	03:30:29 घन्टे
(समय घटी में)	54:43:24 घटी
सूर्योदय	5:37:7 घन्टे
जन्म स्थान	DELHI
अक्षांश	028.39 उत्तर
रेखांश	077.13 पूर्व

नक्षत्र	आरद्रा
नक्षत्र स्वामी	राहु
चरण	4
पाया (चंद्र–नक्षत्र)	लोहा–चांदी
योग	धृति
करण	बालव
गण	मनुष्य
योनि	श्वान
नाड़ी	आदि
वर्ण	शूद्र

ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	स्थिति	
लग्न	मीन	09 17 46		
सूर्य	मेष	22 43 50		उच्च
चन्द्र	मिथुन	18 55 39		मित्र
मंगल	कुम्भ	05 37 30		सम
बुध	मेष	07 59 48		सम
गुरु	मकर	17 44 28		नीच
शुक्र	मेष	29 48 23	अस्त	सम
शनि	वृष	25 39 55		मित्र
राहु (व)	धनु	15 26 35		सम
केतु (व)	मिथुन	15 26 35		सम

विंशोत्तरी दशा

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
बुध	15/03/2012	केतु	15/03/2027
केतु	12/03/2013	शुक्र	14/05/2028
शुक्र	11/01/2016	सूर्य	19/09/2028
सूर्य	16/11/2016	चन्द्र	20/04/2029
चन्द्र	17/04/2018	मंगल	16/09/2029
मंगल	15/04/2019	राहु	05/10/2030
राहु	01/11/2021	गुरु	11/09/2031
गुरु	07/02/2024	शनि	20/10/2032
शनि	17/10/2026	बुध	17/10/2033

भोग्य दशा – राहु 1वर्ष 5मास 10दिन
उपरोक्त तिथि अंतिम तिथि है

जन्म लग्न

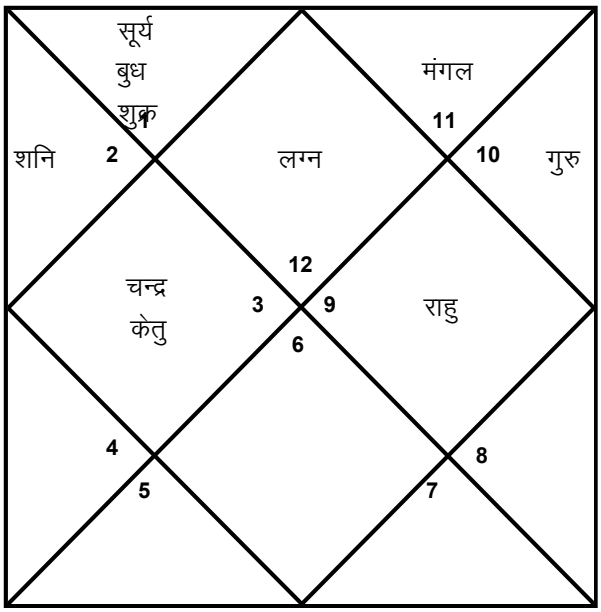

नवमांश

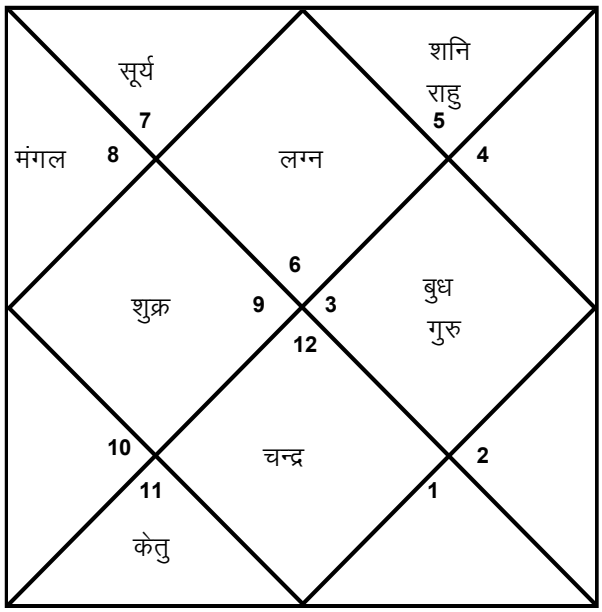

नाम	Sample Chart
लिंग	पुरुष
जन्म तिथि	07/05/1973
दिन वार	सोमवार
जन्म समय	03:30:29 घन्टे
(समय घटी में)	54:43:24 घटी
सूर्योदय	5:37:7 घन्टे
जन्म स्थान	DELHI
अक्षांश	028.39 उत्तर
रेखांश	077.13 पूर्व

नक्षत्र	आरद्रा
नक्षत्र स्वामी	राहु
चरण	4
पाया (चंद्र–नक्षत्र)	लोहा–चांदी
योग	धृति
करण	बालव
गण	मनुष्य
योनि	श्वान
नाड़ी	आदि
वर्ण	शूद्र

ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	स्थिति
लग्न	मीन	09 17 46	
सूर्य	मेष	22 43 50	उच्च
चन्द्र	मिथुन	18 55 39	मित्र
मंगल	कुम्भ	05 37 30	सम
बुध	मेष	07 59 48	सम
गुरु	मकर	17 44 28	नीच
शुक्र	मेष	29 48 23	अस्त सम
शनि	वृष	25 39 55	मित्र
राहु (व)	धनु	15 26 35	सम
केतु (व)	मिथुन	15 26 35	सम

विंशोत्तरी दशा

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
बुध	15/03/2012	केतु	15/03/2027
केतु	12/03/2013	शुक्र	14/05/2028
शुक्र	11/01/2016	सूर्य	19/09/2028
सूर्य	16/11/2016	चन्द्र	20/04/2029
चन्द्र	17/04/2018	मंगल	16/09/2029
मंगल	15/04/2019	राहु	05/10/2030
राहु	01/11/2021	गुरु	11/09/2031
गुरु	07/02/2024	शनि	20/10/2032
शनि	17/10/2026	बुध	17/10/2033

भोग्य दशा – राहु 1वर्ष 5मास 10दिन
उपरोक्त तिथि अंतिम तिथि है

जन्म लग्न

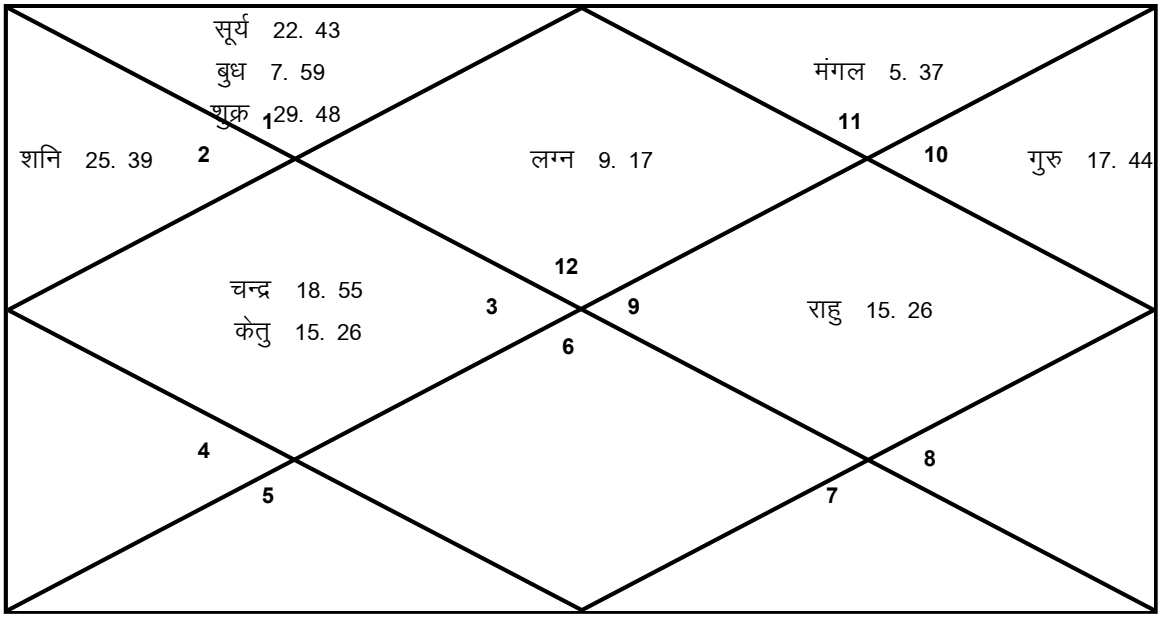

1. नलायोग

यदि लग्न द्विस्वभाव राशि में हो तथा कई ग्रह द्विस्वभाव राशि में हो तो नलायोग बनता हैं।

इस योग में जन्म लेने वाले जातको के हाथ या पैरों में शिकायत रह सकती हैं। वह विचारो में दृढ, स्थिर मस्तिष्क, तीव्र बुद्धि, आकर्षक व्यक्तित्व तथा मित्र एंव संबन्धीयों के करीब रहते हैं। वह हतोत्साही और उदास रहते हैं। उनका धन स्थाई नहर्ि होता।

2. संख्या पाश योग

सभी ग्रह जब पाँच भावों में हो तो पाश योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक विशाल परिवार वाले, कार्य में दक्ष, घन संग्रह करने में निपुन, चलाक, दुष्ट स्वभाव, वन में निवास करने कि इच्छा रखने वाले व कई त्रुटियाँ वाले होते हैं।

3. अनफा योग

सूर्य के अतिरिक्त दूसरा कोई भी ग्रह चन्द्रमा से द्वादश स्थान में हो तो अनफा योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक घनी, अच्छे स्वास्थ्य व भौतिक सुख ऐश्वर्य से युक्त, प्रतिष्ठित, भाषण में निपुन, कुशल, आकर्षक व्यक्तित्व के एवं सुखी होते हैं।

4. अनफा (शनि) योग

चन्द्रमा से द्वादश स्थान में शनि हो तो अनफा (शनि) योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक भूमि, चल तथा अचल सम्पत्ति व चौपए वाहन का उत्तम सुख तथा लाभ प्राप्त करने वाले, सच्चे, ईमानदार, छल–कपटी तथा दुष्टस्वभाव के मित्रों की

संगति में रहने, दूसरों कि सम्पत्ति से ईर्षा करने एवं दुश्चरित्र कार्यों में लीन रहने वाले होते हैं।

5. उत्तमदि (वरिष्ठ) योग

सूर्य से अपोक्लिम (3, 6, 9, 12) में चन्द्रमा हो तो वरिष्ठ योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक घन, ज्ञान, कुशलता व यश उत्तम रूप से प्राप्त करते हैं तथा इनके फल प्रचुर मात्रा में भोगते हैं।

6. शकट योग

बृहस्पति केन्द्र में न होकर चन्द्रमा से 8वें में हो तो शकट योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक असहाय, पराधीन, सदैव परिश्रम में लीन रहते हैं। इन जातकों की सामाजिक छवि घुमिल तथा घन स्थाई नहर्ि होता। यह जातक घनी परीवार से सम्बन्धित होने के बावजूद अस्वस्थ एवं दीन–दुखी रहते हैं।

7. वेशि योग

चन्द्रमा के अतिरिक्त दूसरा कोई भी ग्रह सूर्य से द्वितीय स्थान में हो तो वेशि योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक लम्बे, ईमानदार, आलसी, दानी, सत्यवादी, अच्छी स्मरण शक्ति के तथा सामान्यतया घनी होते हैं।

8. वेशि योग (अशुभ)

चन्द्रमा के अतिरिक्त दूसरा कोई भी अशुभ ग्रह सूर्य से द्वितीय स्थान में हो तो वेशि अशुभ योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक दुखी तथा छल–कपटी व दुष्ट स्वभाव के मित्रों की संगति में पड़ने वाले होते हैं।

9. वेशि योग (शनि)

सूर्य से द्वितीय स्थान में शनि हो तो वेशि (शनि) योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक व्यापारी,घोखेबाज तथा सलाह देने वालों से घृणा करने वाले होते हैं।

10. उभयचर योग

चन्द्रमा के अतिरिक्त दूसरा कोई भी ग्रह सूर्य से द्वितीय एवं द्वादश स्थान में हो तो उभयचर योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक बलवान, जिम्मेदार, विद्वान, आकर्षक व्यक्तित्व तथा भौतिक सुख ऐश्वर्यो का सुख प्राप्त करते हैं।

11. पाप कर्तरी योग

लग्न से द्वितीय एवं द्वादश स्थान में अशुभ ग्रह स्थित हो तो यह योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक गुनाह व वासना की ओर झुकाव रखने वाले, अस्वस्थ तथा दूसरों की घन से ईर्षा करने वाले होते हैं।

12. पर्वत योग

केन्द्र में शुभ ग्रह स्थित हो तथा 6ठे एवं 8वें स्थान में कोई ग्रह न हो या मात्र शुभ ग्रह हो तो पर्वत योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक विख्यात, प्रतिश्ठित, भाग्यवान, घनी, दानशील, विद्वान, वासनाप्रिय तथा विवेचना शक्ति से युक्त होते हैं।

13. निसव योग

द्वितीयेश की स्थिति 6ठे, 8ठे या 12वें भाव में हो।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक बातों में रूखेपन, अल्प मात्रा में विद्या प्राप्त करने, छल–कपटी व दुश्ट स्वभाव के मित्रों की संगति में रहने वाले, कमजोर तथा शत्रु पक्ष द्वारा कुछ विशेष हानि अनुभव करते हैं।

14. निर्भाग्य योग

नवमेश स्थान के स्वामी की स्थिति 6ठे, 8ठे या 12वें भाव में हो।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक अपना घन गवाँने, दूसरों से बदनामी हासिल करने वाले, नास्तिक, पराधीन तथा असहाय होते हैं।

15. धन योग

द्वतीयेश का सम्बन्घ पंचमेश, नवमेश या फिर एकयदेश से हो।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक घन तथा ऐश्वर्य से युक्त होते हैं।

16. कर्मजीव योग

लग्न, चन्द्रमा या फिर सूर्य से 10वें स्थान में गुरु हो तो कर्मजीव योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक व्यवसाय के रूप में अधिकतर विद्वानों, ज्ञान, कानून विभाग, मन्दिरों, तीर्थ यात्रा तथा घर्म से सम्बन्धित कार्यों का व्यापार करते हैं।

17. कर्मजीव योग

लग्न, चन्द्रमा या फिर सूर्य से 10वें स्थान में गुरु की युति या दृष्टि हो तो कर्मजीव योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक व्यवसाय के रूप में अधिकतर विद्वानों, ज्ञान, कानून विभाग, मन्दिरों, तीर्थ यात्रा तथा घर्म आदि से सम्बन्धित कार्यों का व्यापार करते हैं।

18. कर्मजीव योग

लग्न, चन्द्रमा या फिर सूर्य से 10वें स्थान में शनि की युति या दृष्टि हो तो कर्मजीव योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातकों का व्यवसाय अधिकतर शारीरिक परिश्रम से युक्त होने की सम्भावना है। यह जातक परिश्रम एवं संघर्षमय कार्य जैसे बोज उठाने एवं अन्य छोटे कार्य, कर्मचारी आदि सम्बन्धित कार्य कर सकते हैं।

19. देहपुष्टि योग

लग्नेश चर राशि में एवं किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो देहपुष्टि योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक घनी, सुखी, भौतिक सुखों से युक्त तथा चौड़ी शारीरिक आकृति के होते हैं।

20. दुर्मुख योग

पाप ग्रह की स्थिति द्वितीय भाव में हो तथा द्वितीयेश नीच या पाप ग्रह से युक्त हो तो दुर्मुख योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक दिखने में कुछ बदसूरत हो सकते हैं तथा उनका चहरा किसी दुर्घटना या फिर पैदाइश से कुछ खराब हो सकता हैं।

21. वाहन योग

लग्नेश की स्थिति चतुर्थ, नवम या एकादश भाव में हो तो वाहन योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक सांसारिक तथा वाहन के सुख से युक्त रहते हैं।

22. एकपुत्र योग

पंचमेश की स्थिति केन्द्र या त्रिकोण में हो तो एकपुत्र योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातकों के सम्भवतः एकमात्र पुत्र/पुत्री होगी।

23. सत्कलत्र योग

सप्तमेश या शुक्र से गुरु या बुध की युति या दृष्टि हो सत्कलत्र योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक स्वछ ह्रदय तथा मर्यादित जीवनसाथी से युक्त होते हैं।

24. अरिष्ट योग

लब्नेश की युति या दृष्टि षष्ठेश, अष्टमेश या द्वादेश से हो तो अरिष्ट योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक जीवन में शारीरिक अस्वस्थता से पीड़ित रहते हैं।

25. अरिष्ट योग

षष्ठेश की युति या दृष्टि अष्टमेश या द्वादेश से हो तो अरिष्ट योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक जीवन में शारीरिक अस्वस्थता से पीड़ित रहते हैं।

26. मुकबधिरम्ध योग

द्वितीय या द्वादश भाव में शुक्र अथवा मंगल हो।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक कान के रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

27. ज्योतिशिका योग

द्वितीय भाव में सूर्य एवं बुघ हो तो ज्योतिशिका योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक ज्योतिश शास्त्र का ज्ञान रखते हैं।

28. सूर्य बुध योग

सूर्य एवं बुघ की युति एक ही भाव में हो तो सूर्य बुघ योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक मघुर भाषी, चतुर, विद्वान, सच्चे, घनी, हर कार्य में निपुण तथा प्रतिष्ठत होते हैं।

29. सूर्य शुक्र योग

सूर्य एवं शुक्र की युति एक ही भाव में हो तो सूर्य शुक्र योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक चतुर, शस्त्रों में निपुण, नाटक एवं संगीत के माध्यम से आजीविका प्राप्त करने वाले तथा सम्भवतः इस योग के पुरुष, स्त्री द्वारा भी घन प्राप्त कर सकते हैं।

30. बुध शुक्र योग

बुघ एवं शुक्र की युति एक ही भाव में हो तो बुघ शुक्र योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक वार्ता में निपुण, सच्चे, ज्ञानी, घनवान, आकर्षक व्यक्तित्व के, सदैव हसमुख तथा विस्तृत भूमि से युक्त होते हैं।

31. सूर्य बुध शुक्र योग

सूर्य, बुघ एवं शुक्र एक ही भाव में हो तो सूर्य बुघ शुक्र योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक विद्वान, शारीरिक गठन में कुछ पतले, अधिक बोलने वाले, जगह–जगह भटकने वाले तथा गुरुजनों एवं माता–पिता से घुतकारे जा सकते हैं।

कालसर्प योग

जन्म पत्रियों में कई प्रकार के योग देखने का मिलते हैं जिनके विभिन्न प्रकार के फल होते हैं। कुछ अच्छे योग हैं तो कुछ बुरे। अच्छे योग शुभ फलदायक होते हैं तो बुरे योग अशुभ फलदायक होते हैं। ऐसा ही एक अशुभ फलदायक योग है कालसर्प योग। जब किसी भी जन्मपत्री में सारे ग्रह राहू और केतू के मध्य आ जाते हैं तो उसे कालसर्प योग कहते हैं। प्राचीन ग्रन्थों में प्रत्यक्ष से तो इस योग का वर्णन नहीं मिलता लेकिन इसे नकारा भी नहीं जा सकता।

महर्षि गर्ग, महर्षि पाराशर, महर्षि भृगु, वराह मिहिर आदि ज्योतिषाचार्यों ने कालसर्प योग को स्वीकार किया है। प्राचीन कालदर्शियों ने कालसर्प योग को विशेष महत्व दिया है। उन्होंने राहू–केतू को कार्मिक माना है, राहू पृथ्वी पर काल है और केतू सर्प। प्रायः किसी ने भी इस योग की प्रशंसा नहीं की है। राहू–केतू यद्यपि छाया ग्रह है, इनका अपना कोई शरीर नहीं है, फिर भी ये इतने क्रूर ग्रह हैं कि इनसे निर्मित कालसर्प योग अशुभ फलदायक ही कहलाता है।

आप की कुण्डली कालसर्प योग से ग्रस्त है।

जन्म लग्न

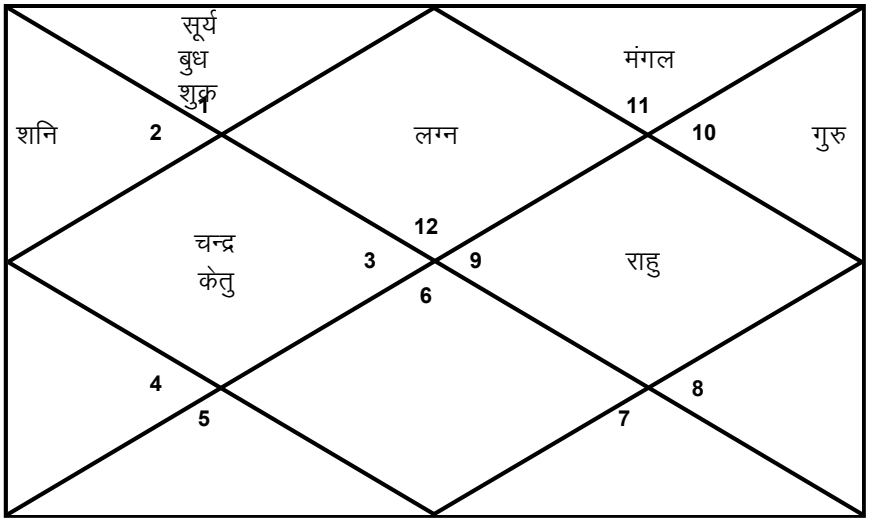

कालसर्प योग

जन्मपत्री में दशम भाव से चतुर्थ भाव के मध्य बने कालसर्प योग में राहू दशम भाव में तथा केतू चतुर्थ भाव में होता है तथा शेष सभी ग्रह दशम से चतुर्थ भाव में होते हैं। ऐसे जातक को माता–पिता का सुख नहीं मिलता, व्यवसाय में घोखा–घड़ी व हानि, कर्ज बढ़ता है, अच्छे कर्म नहीं कर पाते, खर्चा ही करते रहते हैं, कमा नहीं पाते। राहू के दशम भाव में होने से पैतृक सुख का अभाव होता है। संक्षेप में, ऐसे जातक को दशम भाव तथा चतुर्थ भाव सम्बन्धी बातों में कभी सुख नहीं मिलता।

कालसर्प योग मनुष्य के जीवन में 42 वर्ष तक अनेक बाघाएं पैदा करता है। यहां तक कि कभी कभी उसके बाद भी यह अपना प्रभाव दिखाता रहता है।

संक्षेप में कालसर्प से पीड़ित जातक को सदैव शारीरिक कष्ट उठाने पड़ते हैं। उसके रोग का कभी निदान नहीं हो पाता। विद्यार्जन में बाघाएं उपस्थित होती हैं। उसे प्राप्त शिक्षा का उपयोग उसके जीवन में नहीं होता। संकटों का तांता लगा रहता है। रिश्तेदारों द्वारा विरोघ होता है। पति, पुत्र या पत्नी का सुख नहीं मिलता। कोर्ट–कचहरी, झगड़े–मुकदमों में शक्ति व्यय होती है। जेल जाना पड़ता है। मित्र विश्वासघात करते हैं। पिशाच बाघा के कारण कभी कभी कष्ट उठाना पड़ता है। कर्ज बढ़ता जाता है। अतृप्त आत्माओं के कारण अनेक बार कष्ट पहुंचता है। पत्नी, पुत्र या पुत्री का व्यवहार ठीक नहीं होता। पुत्र–पुत्री का विवाह ठीक समय पर नहीं होता। संतान का अभाव रहता है। परिवार के व्यक्ति का वियोग होता है। घर का कोई व्यक्ति किसी कारण घर छोड़कर चला जाता है तो अनेक वर्षों तक उसका पता ही नहीं चलता। परिवार में से कोई डूबकर या दुर्घटना में अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है। काम घंघे में कंगाल हो जाता है।

उपाय

1. कालसर्प अंगूठी जो कि सर्पाकार होती है तथा चान्दी में बनी होती है को घारण करें। इस अंगूठी को प्राण–प्रतिष्ठा के बाद ही पहनें। यह अंगूठी किसी भी योग्य ज्योतिषी से प्राप्त हो जाती है। इस को बुघवार के दिन कनिष्ठिका अंगुली में पहनें। उस दिन सूखा नारियल, सरसों, जौ आदि का दान करें। राहू तथा केतू के मंत्र का भी जाप करें।

2. गनेशजी की पूजा करके सूर्योदय से पहले चान्दी में निर्मित सर्प–सर्पिणी को जोड़ा

शिवलिंग पर चढ़ाएं। यह काम भी किसी योग्य कर्मकान्डी पंडित से करवाएं।

3. शिवलिंग पर प्रतिदिन ऊँ नमः शिवाय मंत्र की एक माला जप कर जल चढ़ाएं।

4. कन्या को कन्यादान में शुद्ध चांदी की ईंट 20 ग्रम की दें जो कन्या सदा अपने पास रखें। यह उपाय सुखद गृहस्थ जीवन के लिए है।

5. ताजी मूली दान करें।

6. अपने वजन के बराबर कच्चे कोयले बुघवार को साफ बहते पानी में बहाएं।

7. मसूर की दाल और कुछ पैसे प्रातः काल भंगी को दान करें।

8. जौ अपने सिरहाने रखकर प्रातःकाल पक्षियों को दें।

9. घर के प्रवेश द्वार की चौखट पर चांदी का स्वास्तिक लगाएं।

10. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।

11. नारियल को समुद्र में बहाएं।

12. सोना, सीसा ;स्मंकद्धए काले तिल, नीला वस्त्र दान करें।

13. गोमेद पहनें।

14. एक नारियल तथा एक सिक्का 43 दिन लगातार बहते पानी में बहाएं।

15. नागपंचमी वाले दिन व्रत रखें तथा कालसर्प योग की पूजा करवाएं।

16. कालसर्प यंत्र पास में रखें तथा प्रतिदिन पूजन करें।

17. अपने घर में मोरपंख रखें।

18. जितने वर्ष आपकी आयु है उतने नाग–नागिन के जोड़े प्रत्येक वर्ष अपने जन्म दिन पर बहते पानी में बहाएं, 42 वर्ष तक।

19. हररोज़ अपने माता–पिता के चरण स्पर्श करके उनका आर्शीवाद लें।

20. किसी भी शुक्लपक्ष की पंचमी या नाग पंचमी को एक जोड़ा नाग–नागिन का किसी सपेरे से खरीदें तथा उन्हे दूघ पिला कर उनकी पूजा कर श्रद्धा भाव से उस जोड़े को आजाद कर दें।

21. किसी भी शुक्लपक्ष की पंचमी या नाग पंचमी को एक नाग–नागिन का जोड़ा चांदी में बनवा कर उसे एक दूघ से भरे कांसे के बर्तन में छोड़ें। फिर उस कांसे के बर्तन को, उस जोड़े समेत, बहते पानी में प्रवाहित करें।

मीन आपका लग्न चिन्ह है

बृहस्पति द्वारा शासित, राशि चक्र के बारहवें चिह्न, मीन राशि में आपका जन्म हुआ है। आपकी आँखें बड़ी बड़ी और प्रभावशाली होंगी। आप अत्यंत स्नेहशील, अपने जीवन साथी से अत्यंत स्नेह करने वाले व्यक्ति हैं। आपका सिर बड़ा होगा। आपको संतान से सुख मिलेगा। कभी कभी आप अत्यधिक अस्वस्थता और बेचैनी महसूस करते हैं। आप बहुत संवेगशील और शारीरिक सुखों के शौकीन हैं। आपको अप्रत्याशित हानि हो सकती है। बचपन में आपको साधारण सफलता प्राप्त हुई होगी। जीवन के मध्य में आपको कुछ बाधाएँ आ सकती हैं लेकिन जीवन के परवर्ती भाग में बहुत सुख मिलेंगे। 21 वर्ष की आयु के बाद भाग्योदय होगा। आपका चेहरा बच्चों की तरह गोल व मुलायम, वर्ण पीलापन, आँखें निंद्रामयी और सुस्त होंगी। आप दीर्घायु होंगे। आप खूब पानी पीते हैं। पानी में डूबने की दुर्घटनाओं के प्रति आपको सावधान रहना चाहिए। आप ईश्वर से डरने वाले, अत्यंत सत्कारशील, परिवार की परम्पराओं को निभाने वाले और धारा प्रवाह बोलने वाले व्यक्ति हैं। आप बुद्धिमान होंगे और अधिक लंबे नहीं होंगे। आप रूपवान, उन्नतनाक वाले, सुदृढ़ दंत पक्तियों वाले, घुंघराले बाल वाले और दूरदर्शी व्यक्ति हैं। पारिवारिक दृष्टि से आप सुखी होंगे। धनार्जन में कुछ कठिनाई की सम्भावना है। आपकी आय अच्छी होगी लेकिन व्यय भारी होंगे। आप धार्मिक हैं और विपक्षियों की भी सहायता करते हैं। आप और आपके साथी को विज्ञान में रुचि है। आपकी रुचि कविता और साहित्य में भी है।

चूंकि आप आद्रा नक्षत्र में पैदा हुए थे, आप कृतघ्न और खराब स्वभाव वाले व्यक्ति होंगे लेकिन आप बुद्धिमान और गुणी होंगे। आपको दूसरों को कष्ट पहुँचा कर खुशी मिलेगी और प्रायः आप कृतघ्न और रक्त–पिपासु होंगे। आपका जीवन प्रायः सुख रहित होगा और आपको मुश्किल समय का अनुभव करना पड़ सकता है। आप अपव्ययी होंगे और विपदाओं के समय भी आपको चिन्ता नहीं होगी। आपके शरीर के विभिन्न अंगों का अनुपात ठीक नहीं होगा। 25 वर्ष की आयु के बाद जीवन में लाभ प्राप्त होगा।

सूर्य ग्रह का प्रभाव

छठे गृह का स्वामी, दूसरे घर में सूर्य की उच्च स्थिति सूचित करती है कि आप चतुर और बुद्धिमान हैं। अपने वैभव के कारण आपका नाम है। आप प्रभावशाली ढंग से जीवन यापन करते हैं। आप अपने पारिवारिक जीवन में किसी वस्तु की कमी महसूस करते हैं। सम्भवतः

कभी–कभी आपका पारिवारिक जीवन अधिक सुखी न हैं। आपकी आँखों मेंसमस्या हो सकती है।

दूसरे घर में सूर्य दर्शाता है कि आप उदार लेकिन अपव्ययी होंगे। आपका वर्ग अच्छा नहीं होगा। आपको आँखों का कष्ट रहेगा। आप अविवेकी होंगे और घन का बहुत अपव्यय करेंगे। आप स्वाग्रही और आक्रामक है। आप अपने पद व शक्ति के बारे में अधिक सोचते हैं और आपका अधिक मित्रतापूर्ण रवैया नहीं है। आपको सत्ताधिकार पसंद है और दूसरे लोग आपको दबाएं यह आपको पसंद नहीं है। आप विचारों तथा कार्यों में मौलिक है। आपको शीघ्र परिणाम प्राप्त करना पसंद है और आप अपव्ययी हैं। जब कभी भी आवश्यकता पड़े आप अपने मातहतों को कार्य करने के लिए बाध्य करने में सफल होते हैं। आप कभी संतुष्ट नहीं होते।

चन्द्र ग्रह का प्रभाव

चंद्र के पंचमेश होकर चतुर्थ भाव में होने के कारण आप अपने पिता के आज्ञाकारी रहेंगे। परिवार की वसुधा बढ़ाऐंगे। संतान सुन्दर होगी। आप उत्तम शिक्षा प्राप्त करेंगे। बुद्धि और हृदय को लुभाने वाले सुख भोगेंगे। लोगों का मनोरंजन करना व हँसाना आपकी आदत होगी। बौद्विक शक्ति से महती सुख मिलेगा। सम्पत्ति से काफी फायदे मिलेंगे। भूमि, भवनादि के स्वामी होंगे। पिता से सम्बन्ध मधुर रहेंगे। अपने बौद्विक योग्यता से सुकृत्य करेंगे। सरकार व समाज से सम्मान पाएंगे। आपका व्यापार तथा अन्य सम्बन्धित संस्थान बढ़ेगा और प्रगतिवान् रहेगा।

माता दीर्घायु होंगी। अपना सुन्दर गृह आप बनाऐंगे तथा कई सवारियाँ आपके पास होंगी। अपना निवास आप बार–बार बदलना चाहेंगे भूमि और कृश से भाग्योन्नति प्राप्त करेंगे। शरीर के सुख आप जरूरत से अधिक भोगेंगे। आप प्रसिद्ध एवं जन–प्रिय होंगे। आप परोपकारी और शुभ कृत्य करेंगे।

चंद्र मिथुन में : आप लंबे कद एवं घुंघराले बालों वाले व्यक्ति होंगे। आपकी नाक चपटी, ताम्रवर्णी आँखें तथा समितियुक्त, पीला चेहरा होगा। आप चालाक, हाजिर जवाब, कर्मठ, पैनी बुद्धि वाले और अच्छे भोजन के प्रेमी व्यक्ति होंगे। संगीत एवं नृत्य के भी आप प्रेमी होंगे। दूसरों के मन का भाव आप फौरन ताड़ जाते हैं। प्रतिपदा, सप्तमी एवं द्वादशी तिथियाँ आपके लिए अशुभ होंगी। वृष, सिंह, कन्या एवं तुला चंद्र राशि वाले लोग आपके मित्र होंगे। वैज्ञानिक एवं साहित्यिक कृतियों में आपकी रुचि होगी। आप भ्रमण प्रेमी होंगे। अचानक एवं

अनपेक्षित घन संपत्ति मिलेगी। आपके एक से अघिक व्यवसाय होंगे। हरे नग युक्त अंगूठी आपके लिए शुभ सिद्ध होगी।

मंगल ग्रह का प्रभाव

दूसरे और नवें गृह का स्वामी, बारहवें गृह में मंगल दर्शाता है कि यात्रा की अधिकता रहेगी और व्यवसाय में कई बाघाएँ आएँगी। किसी मानसिक दुर्बलता के कारण हो सकता है कि आपकी मित्रता कुटिल व्यक्तियों से रहे। आप अपव्ययी हैं और घन हानि उठाएंगे। आप पारिवारिक कष्ट उठा सकते हैं और शिक्षा प्राप्ति में बाघाओं का सामना करना पड़ सकता है। शत्रुओं से कष्ट हो सकता है लेकिन आप उन पर अपना प्रभाव बनाए रखें।
बारहवें गृह में मंगल : गुप्त शत्रुओं और अभियोग के खतरें का सूचक है। लुटेरों के कारण चोट–ग्रस्त होने का योग है। कानों की व्याघि से कष्ट होगा और आपकी पीठ के पीछे बुराई करने की आदत होगी। आँखों की बीमारियाँ, कुकृत्य जीवन साथी की मृत्यु और तुच्छ प्रवृत्तियां मंगल के कारण होती है। आप निर्मम कार्यों में लिप्त रह सकते हैं। सम्पत्ति की हानि, दुख और कार्यों में बाघाएँ होंगी।
कुम्भ राशि में मंगल : आप लालची होंगे और कुकृत्य करेंगे।

बुध ग्रह का प्रभाव

बुघ के चतुर्थेश एवं सप्तमेश होकर द्वितीय भाव में होना यह बताता है कि आप अपनी माँ और पत्नी से प्रसन्न रहेंगे लेकिन उनसे पूरा संतोष नहीं मिलेगा। शिक्षा और सम्पत्ति में बढ़ोत्तरी होगी। शारीरिक सुखों के लिए आप व्यग्र रहेंगे लेकिन उनमें कुछ कमी महसूस करेंगे। कठिनाई और अड़चनो के साथ ही आप अपनी सम्पत्ति के मामलों का प्रबंघ कर सकेंगे।
आप एक उच्चकोटि के विद्वान हैं, अच्छे वक्ता हैं, घनी हैं। पारिवारिक जीवन शांतिपूर्ण है। अपने बुद्धि–चातुर्य से घन कमाते हैं तथा आप सुखी घनी एवं प्रसिद्ध हैं। आप एक अच्छे अभिनेता हैं, राजसी भोजन आपको प्रिय हैं तथा आप बहुत बुद्धिमान एवं सुशिक्षित व्यक्ति हैं।
बुघ मेष में : आपका शरीर बहुत बालों वाला है। आप चतुर, सत्य–निष्ठ, शारीरिक सुख – प्रेमी, अभिनय में निष्णात और कार्य गति के प्रेमी हैं।

गुरु ग्रह का प्रभाव

गुरु के लग्नेश और दशमेश हो कर एकादश भाव में होना आपके दीर्घायु होने का सूचक है। आप अत्यधिक धनी होंगे और सरकार की आप पर कृपा रहेगी। आप मशहूर होंगे और गहरे चिन्तक होंगे। तेजस्वी होंगे और संतान आज्ञाकारी होगी। कई सेवक होंगे। आप सदैव कामयाब रहेंगे और विरोधियों को पराभव कर देंगे। माँ–बाप का नाम रोशन करेंगे। कर्मठ और मेहनती आप व्यापार में खूब नाम कमाऐंगे। आपकी पत्नी सुशील, सुन्दर प्रभावशाली और शुभ सदाचारी होगी।

आप संगीत के शौकीन होंगे। चाचा, भाई या बहन से धन प्राप्त कर सकते हैं। आपके संतान होगी और मित्रगण श्रेष्ठ होंगे। आपको लाभ मिलेगा और धन–संपदा जुड़ सकेगी। आपका अपना घर होगा और वाहन होगा। आप अपनी प्रभुता के कारण उच्च पदस्थ श्रेष्ठ व्यक्तियों के सम्मान के पात्र रहेंगे। प्रसिद्धि आपको मिलेगी। रत्न–माणिक्य आप के पास होंगे और अच्छे–शुभ कार्यों के लिए व्यय करेंगे। आप स्वभावतः निड़र हैं और बड़ों की मदद करते हैं। आपका मन चंचल रहेगा। आप यात्रा अधिक करते हैं। कभी कभी आपकी मेहनत बेकार जाएगी। आप बहुत चतुर हैं।

शुक्र ग्रह का प्रभाव

शुक्र के तृतीयेश व अष्टमेश होकर द्वितीय भाव में होने के कारण आप विदेश भ्रमण पर जाएंगे। धार्मिक ग्रन्थों में आपकी रुचि होगी। अचानक लाभ प्राप्त करेंगे। आप मोटे होंगे। भाईयों पर आप खर्च करते हैं। पैतृक सम्पत्ति प्राप्त कर लेते हैं लेकिन धन नहर्िंबचा पाते। आसान लाभ को आप सदैव लालायित रहते हैं। आपका परिवार श्रेष्ठ हैं। आप पौष्टिक भोज्य पदार्थ ग्रहण करते हैं। विद्वानो की सहायतार्थ आप खुलकर योगदान देते हैं। आप अति चतुर बुद्धिमान व्यक्ति हैं व विदेशों में प्रसिद्धि व लाभ पाते हैं। लेन देन के सौदे में आपको लाभ होगा। आप धनी हैं और बड़ों का सम्मान करते हैं। आपकी प्रभावोत्पादक आँधें हैं। आप परिवार जनों के प्रिय हैं। वैवाहिक सुख भोगेंगे। स्त्री भद्र परिवार की होगी। आप कामयाब व्यक्ति हैं और बड़ी बड़ी मीटिंगों में भाग लेंगे। आप साहसी, कलाप्रेमी, विद्वान, वासना प्रिय एवं विलासी व्यक्ति हैं।

शुक्र के द्वितीय भाव में होने के कारण आप एक बड़े परिवार का भरण पोषण करेंगे। आप अपने काम में सफल रहेंगे और तेजोमय व्यक्तित्व के स्वामी होंगे। काव्य संगीत एवं कलाओं

में आपकी दिलचस्पी होगी। आप समृद्ध और सुखी रहेंगे। स्त्री वर्ग से अच्छे सम्बन्ध होंगे। रत्नाभूषण और वस्त्रों पर आप खूब खर्च करेंगे। बुद्धिमान लोगों का साथ होगा और उनसे लाभान्वित भी होंगे। आप मृदु–भाषी हैं। आपकी पत्नी बेहद खूबसूरत होगी। आँखों के रोग से पीड़ित रह सकते हैं।

आप की झगड़ालू प्रकृति है और अवांछित व्यक्तियों से सहयोग रहेगा। स्त्री वर्ग की ओर आप आकर्षित रहेंगे।

शनि ग्रह का प्रभाव

शनि के एकादशेश और द्वादशेश होकर तृतीय भाव में होने के कारण आप अपनी तन्दरुस्ती का बहुत ख्याल रखते हैं और दूसरों की परवाह नहिं करते। भाईयों और बुजुर्गों से अधिक सुख नहिं मिलता है। पैसे रुपए के मामलें में आप बहुत सतर्क रहते हैं। भाईयों से दूर कहीं सुदूर स्थान में आप निवास कर सकते हैं। कभी कभी घन प्राप्ति के लिए अनुचित साघनों का उपयोग भी करते हैं। माता–पिता के साथ आप सुखी नहिं रहते। आप कर्मठ एवं अध्यवसायी हैं। अपनी मेहनत से अपना भाग्य चमकाते है। कई लोग आपको पसंद करते हैं। परिवार का आप नाम ऊँचा करेंगे। घार्मिक स्थलों की यात्रा करेंगे। आप घनी हैं और उच्च पदस्थ लोगों से उच्च सम्मान प्राप्त करते हैं। अपने बुद्धि चातुर्य और व्यवहार कुशलता से शत्रुओं का पराभव कर देते हैं। भाईयों और मित्रों से मतभेद रहने के बावजूद आप उनकी सहायता करते हैं। आप कर्मठ और साहसी हैं और कला क्षेत्र में सम्मान प्राप्त करते हैं। आप वाक–पटु हैं और अच्छे वक्ता हैं।

शनि के तृतीय भाव में होना आपके पिता के रुग्ण होने का परिचायक है। आप कष्ट भोगेंगे, पैतृक सम्पत्ति का क्षय होगा तथा भाईयों और पड़ोसियों से झगड़े और विवाद होंगे। माता का भी स्वास्थ्य अच्छा नहिं रहेगा। कुत्तों से काटे जाने के कारण कष्ट भोगने का योग भी है। वाहनादि का भी कष्ट रहेगा। शनि भाईयों की बीमारी या मृत्यु या उनसे झग्ड़ों का कारण भी होता है। प्रचुर घन सम्पत्ति प्राप्त करेंगे और आमदनी बढ़ेगी। अपने बुद्धि चातुर्य से शत्रुओं का पराभव कर देंगे। सरकार और समाज में प्रसिद्ध होंगे। मंदिरों तथा अन्य दातव्य संस्थानों में रुचि रहेगी। आप स्वस्थ रहेंगे। आप एक संत महात्मा होंगे। आप बड़े बुद्धिमान हैं और बड़ी तेजी से अपना काम करते हैं। बड़े सम्मेलनों में भाग लेंगे। आप साहसी और निर्भीक हैं और अपने प्रयत्नों से प्रचुर सम्पत्ति प्राप्त करेंगे। आप एक चतुर कूटनीतिज्ञ हैं और एक सफल राजनीतिज्ञ। अच्छा स्वास्थ्य भोगेंगे और दीर्घायु होंगे। आप सुन्दर हैं।

शनि वृष में: अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए आप सत्य बोलने से कतरा सकते हैं। घूम्रपान या मदिरा सेवन का आपको व्यसन है। कभी–कभी आर्थिक हानियाँ झेलते हैं। अपनी भाषा के प्रति आप लापरवाह हैं। विषय भोगों के आप प्रेमी हैं। आप चतुर और बुद्धिमान हैं।

राहु ग्रह का प्रभाव

दसवें गृह में राहु दर्शाता है कि आप पैतृक सम्पत्ति में कुछ आभाव व दुर्बलता अनुभव करते हैं। आप अपने प्रयासों से भूमि व भवन अर्जित करते हैं। आप तर्क वितर्क में दक्ष हैं। अपने व्यवसाय में लाभार्जन करते हैं। आपका लोगों पर शासन है। संतान से कुछ विरोघ की सम्भावना है। आप देवी देवताओं की पूजा करेंगे और अपने साहसी कार्यों से घन सम्पत्ति अर्जित करेंगे। आप भौतिक सुखों के शौकीन हैं। विदेश भ्रमण की अधिकता रहेगी। सुदूर स्थानों में बड़े उद्यमों में सफलता मिलेगी। शोघ कार्य में आप विशेषज्ञ हैं। मित्रों व सम्बन्धियों से विरोघ होगा। कठोर व गुप्त कार्यों से आप अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे। आप उच्च पद व शक्ति के स्वामी हैं और अपने कार्यों में सफल रहेंगे। सत्ता व समाज में यश अर्जित करेंगे। आप पराक्रमी और विजयी हैं और अपने विरोघियों की परवाह नहīं करते हैं। आपके माता पिता हो सकता है आपसे अघिक प्रसन्न न हैं। आप एक योग्य कमाण्डर हैं।

केतु ग्रह का प्रभाव

चौथे गृह में केतु दर्शाता है कि आपकी माता की अस्वस्थता रहेगी। आपके पास जो भूमि है सम्भवतः आप उससे प्रसन्न न हैं। आप दूसरों की अत्यंत बुराई करते हैं। आप अस्वस्थता से ग्रस्त रहते हैं और माता पिता को हुई असुविघा के लिए आत्मग्लानि अनुभव करते हैं। आप हमेशा चिन्तित रहते हैं। आप इघर उघर भटकते रह सकते हैं। आपका चित्त अस्थिर है। आप अकर्मण्य चिन्ताओं व कष्टों के कारण दुखी हैं। शिक्षा प्राप्ति में बाघाएँ व रुकावटें आएँगी। लंबी यात्राएँ होंगी। पैतृक सम्पत्ति के बारे में कलह होने की सम्भावनाएँ हैं। मित्र व सम्बन्धी आपको घोखा दे सकते हैं। आप कई सुदूर स्थानों की यात्रा करेंगे। शैक्षिक प्रयासों में असफलता के कारण चिन्ता है। सम्बन्धियों से विरोघ होगा और शारीरिक कष्ट होगा। अपने विचारों में स्थिरता नहīं है। विषाक्त भोजन के सेवन से सावघान रहे।

शारीरिक गठन, व्यक्तित्व

आपके जन्म के समय प्रथम भाव में मीन राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति लग्नेश होकर ग्यारहवें स्थान में स्थित है, जिससे अपने फल में कमी प्रदर्शित कर रहा है। आपकी शारीरिक आकृति सामान्य रूप से सुन्दर तथा सुडौल होगी। शरीर सामान्य ठिगना तथा हाथ पाँव कम लंबे होंगे। आपका मन चंचल प्रवृत्ति, घार्मिक तथा दयालु होगा। आपके मन में सुख – शान्तिमय जीवन व्यतीत करने की लालसा रहेगी। आप हर समय किसी न किसी कार्य में व्यस्त रहना पसंद करेंगे। आपका व्यक्तित्व सामान्य आकर्षक होगा तथा अन्य लोग आपसे कम ही प्रभावित होंगे। जीवन में आपकी रुचि साहित्य, कला लेखन आदि के क्षेत्र में सामान्य रहेगी। जल तथा जलीय जीव जन्तुओं के प्रति आपका आकर्षण हो सकता है लेकिन आपको इनके प्रति सावघानी रखनी चाहिए। आप समय–समय पर साहस से काम लेंगे लेकिन कभी–कभी डरपोक स्वभाव के भी हो सकते हैं। आप अपने अनिश्चित विचार तथा अदृढ़ संकल्प से बने बनाए कार्यों को गँवा सकते हैं, इसलिए आपको दृढ़ संकल्प इच्छा शक्ति से कार्यों में लगे रहना चाहिए जिससे आप जीवन में अधिक उन्नति कर पाएँगे। आपके मित्र तथा सगे – सम्बन्धिजन कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे। आपको बचपन तथा युवावस्था के आरंभ में कुछ कष्ट होने की सम्भावना है।

धन, परिवार

आपके जन्म के समय द्वितीय भाव में मेष राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी मंगल है। मंगल द्वितीयेश होकर बारहवें स्थान में स्थित है, जिससे अपने फल में कमी प्रदर्शित कर रहा है। आपको अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ सकता है। जीवन में यदा–कदा कुछ आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ेगा। आपको परिश्रम करने के बावजूद भी परिश्रम का पूर्ण फल प्राप्त होने की कम ही सम्भावना है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ बनाने के लिए आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। पारिवारिक घन सम्पत्ति, आदि प्राप्त होन के अवसर कम ही हैं। आपकी पारिवारिक स्थिति सामान्य होगी। आपको कुटुम्बिजनों से कोई विशेष लाभ या संयोगात्मक व्यवहार की कम ही रहेगा। संयुक्त परिवार में रहने की आपकी रुचि कम रहेगी तथा अपने संयुक्त परिवार से दूर किसी दूसरे स्थान में निवास कर सकते हैं। आपको जमा घन के सम्बन्घ में सावघानी रखनी चाहिए। आप यदा–कदा उत्तेजना में आकर

अपने संचित घन का सही उपयोग न करके व्यय कर सकते हैं। आपको आर्थिक मामलों में उत्तेजना पूर्वक कोई शीघ्र निर्णय नहीं लेना चाहिए। बुद्धि से विचार पूर्वक निर्णय लेना श्रेयस्कर रहेगा। आपकी वाद्ययंत्र में सामान्य परेशानी हो सकती है जैसे बोलने में कुछ दोष होना। अनावश्यक वार्ताओं में आप तर्क कर सकते हैं, इससे आपको बचना चाहिए। स्वास्थ्य ठीक रहेगा, परंतु गला, मुख, जिह्वा, वाणी तथा दायीं आँख इत्यादि में कुछ परेशानी या रोग होने की सम्भावना हो सकती है।

पराक्रम, सहोदर

आपके जन्म के समय तीसरे भाव में वृष राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी शुक्र है। शुक्र तृतीयेश होकर दूसरे स्थान में स्थित है, जिससे अपना मध्यम फल प्रदर्शित कर रहा है। आप अपने पराक्रम धैर्य और साहस से जीवन में उन्नति प्राप्त करेंगे। आप जीवन में जितना अधिक परिश्रम करेंगे उतनी ही उन्नति की ओर अग्रसर होंगे। आप जीवन में यश, घन तथा ऐश्वर्य को प्राप्त करेंगे। आपकी प्रवृति सहनशील रहेगी। आप जीवन में अपने सगे – सम्बन्धियों और भाई–बहनो के साथ अपनी वैचारिक साम्यता को कायम रखने में सफल रहेंगे। आपके छोटे भाई–बहनो का यथासंभव स्नेह और सहयोग मिलता रहेगा। अपनी छोटी बहनों के प्रति आपका विशेष स्नेह तथा सहयोगात्मक व्यवहार रहेगा। जीवन में आप दूसरों को अच्छा उपदेश देंगे तथा दूसरों की सहायता भी करेंगे। आप दूर–समीप की सार्थक यात्राएँ करेंगे, इस तरह की यात्राएँ आपके लिए आर्थिक रूप से लाभकारी हो सकती है। आपकी आवाज मघुर होगी। गायन–वादन कला इत्यादि में आपकी रुचि हो सकती है। आपको ह्रदय रोग तथा दाएँ कान में परेशानी होने की सम्भावना कम ही है।

जायदाद, माता, शिक्षा

आपके जन्म के समय चौथे भाव में मिथुन राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी बुघ है। बुघ चतुर्थेश होकर दूसरे स्थान में स्थित है, जिससे अपना मध्यम फल प्रदर्शित कर रहा है। आप अपने जीवन में साघारणतया भौतिक ऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगे। जीवन में आप अपने परिश्रम तथा बुद्धि के द्वारा उन्नति प्राप्त करेंगे तथा आप आघुनिक सुख – सुविघाओं से युक्त होकर

जीवन यापन करेंगे। आपकी माताजी सामान्यतया सुन्दर, सुशिक्षित तथा अच्छे कुल की सौभाग्यवती महिला हैं। आपकी माताजी का अपने पारिवारिक जनों तथा रिश्तेदारों के प्रति सौम्य तथा सहयोगी व्यवहार रहेगा। आपकी माता जी का आपके प्रति विशेष स्नेह या सहयोग रहेगा तथा आपका भी अपनी माता के प्रति स्नेह तथा आदर रहेगा। आप अपने जीवन काल में उत्तम आवास प्राप्त कर सकेंगे। आपका आवास शिक्षित, सुसभ्य जनों के समीप में होगा। जीवन में आपको वाहन का सुख और वाहनो के द्वारा आपको लाभ हो सकता है। आप जीवन में चल तथा अचल सम्पत्ति से लाभ प्राप्त करेंगे। अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से कुछ अधिक लाभ होने की सम्भावना है। मातृ–पक्ष के लोगों से या उनके सहयोग से चल व अचल सम्पत्ति लाभ हो सकता है। विद्याध्ययन में आप परिश्रमपूर्वक अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं जिससे भविष्य में अच्छा यश तथा घन प्राप्त होगा। जीवन में आपके अच्छे मित्र तथा सम्बन्धी होंगे तथा आपके प्रति उनका व्यवहार सामान्यतया सहयोगी होने की सम्भावना है।

बुद्धि, सन्तान

आपके जन्म के समय पंचम भाव में कर्क राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी चंद्र है। चंद्र पंचमेश होकर चौथे स्थान में स्थित है, जिससे अपना उत्तम प्रभाव प्रकट कर रहा है। आप बुद्धिमान हैं और किसी भी बात पर शीघ्रता से उचित निर्णय लेने में सक्षम हैं। आपकी स्मरण शक्ति तथा विवेचना शक्ति भी उत्तम रहेगी, जिससे आप शीघ्रता से किसी भी विषय तथा परिस्थिति को जान सकते हैं। आपको अनेक सुअवसरों का लाभ प्राप्त होगा। आपकी पाश्चात्य साहित्य, आधुनिक विज्ञान, कला तथा इतिहास इत्यादि में विशेष रुचि रहेगी तथा इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य, दर्शन इत्यादि में भी आपकी कुछ रुचि हो सकती है। आप संतान पक्ष की ओर से संतुष्ट रहेंगे। आपकी संतति सुन्दर, स्वस्थ, दीर्घायु तथा बुद्धिमान होगी। वह विद्याध्ययन में परिश्रम पूर्वक वांछित सफलता अर्जित करेगी। आपकी संतान माता–पिता के प्रति आदर तथा सम्मान का भाव रखेगी तथा आप भी उनकी उन्नति के प्रति तन–मन–घन से सहायता प्रदान करेंगे। आपकी प्रेम प्रसंगों के प्रति रुचि रहेगी तथा प्रेम सम्बन्ध जोड़ने में अधिक समय नहीं लगेगा लेकिन सम्बन्ध को लंबे समय तक स्थापित रखने में परेशानी अनुभव होगी, जिससे आप शीघ्र ही दूसरे प्रेमी से जुड़ने की कोशिश कर सकते हैं। आप पूर्व जन्म के पुण्य कर्मों के फलस्वरूप इस जन्म में भी कोई सामाजिक तथा

परोपकार का कार्य कर सकते हैं, जिससे आपको जीवन में सम्मान एवं यश प्राप्त होगा।

रोग, शत्रु,

आपके जन्म के समय छठे भाव में सिंह राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी सूर्य है। सूर्य षष्ठेश होकर दूसरे स्थान में स्थित है, जिससे अपना उत्तम प्रभाव प्रकट कर रहा है। आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। आप किसी भी तरह से विशेष रोग ग्रस्त नहर्िरहेंगे। आप संयमपूर्वक जीवन यापन करेंगे। आपका जीवन वैभवशाली, ऐश्वर्य से युक्त होने की सम्भावना है। आपके वैभव एवं कार्य–कुशलता को देखकर आपके सम्बन्धियों तथा दूसरे लोगों के मन में कुछ ईर्ष्या तथा शत्रुता का भाव हो सकता है। जीवन में आपका राजपक्ष के बड़े अधिकारियों से सामान्य टकराव हो सकता है। आपको यह सब होने के बावजूद भी शत्रुपक्ष से कोई विशेष हानि नहर्िहोगी। यदा–कदा शत्रुओं से भी लाभ हो सकता है। आपको सेवक वर्ग से कोई विशेष क्षति या परेशानी नहर्िहोगी। सेवक वर्ग आपकी आज्ञा का हर समय पालन करने में तत्पर रहेगा। मातृ–पक्ष मामा–मामियों की ओर से आपको स्नेह तथा सहयोगात्मक व्यवहार मिलेगा। आप स्वाभिमानी होंगे, जिससे आप दूसरों से कम से कम सहायता लेंगे। जीवन में आप मानसिक रूप से कम चिन्ताग्रस्त रहेंगे। आप हर समय अपने को तनाव–मुक्त रखने का प्रयास करेंगे।

विवाह, दम्पति, साझेदारी

आपके जन्म के समय सातवें भाव में कन्या राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी बुध है। बुध सप्तमेश होकर दूसरे स्थान में स्थित है, जिससे अपना मध्यम फल प्रदर्शित कर रहा है। आपका जीवन–साथी विनम्र प्रकृति, कुछ मधुर भाषी, सामान्य सुन्दर शरीर, मिला–जुला रंग एवं तर्क सम्बन्धी वार्ता में चतुर होंगे। आपके जीवन–साथी की प्रकृति सामान्यतया सुशील होगी लेकिन यदा–कदा स्वभाव कुछ उग्र भी हो सकता है। आपके माता–पिता के साथ उनका सौम्य व्यवहार रहेगा, लेकिन अन्य कुटुम्बिजन, भाई–बहन इत्यादि के साथ कम संतोषजनक व्यवहार होने की सम्भावना रहेगी। आपका विवाह सामान्य कुल से होगा तथा उनकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति भी सामान्य रहेगी, लेकिन वे आपकी आवश्यकता के

समय पर सहयोग करेंगे। आपका दामपत्य जीवन सामान्य रूप से सुखी रहेगा। जीवन–साथी के साथ यदा–कदा सामान्य मतभेद उभर सकते हैं लेकिन जल्दी ही मतभेदों को भुलाया भी जा सकेगा। संगीतकला के क्षेत्र में भी आप दोनो की रुचि समान रहेगी। विवाह के पश्चात् ही आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यापार में साझेदारी करने पर सामान्य रूप से लाभ रहेगा एवं पुरुष वर्ग की अपेक्षा स्त्री वर्ग से साझेदारी करने से अधिक लाभ रहेगा। जीवन में स्वतन्त्र रूप से व्यापार करने में आपकी रुचि रहेगी तथा प्रारंभिक अवस्था में आप बिना किसी साझेदारी किए ही अपना व्यवसाय कर सकते हैं, जिसका परिणाम अन्ततः आपके लिए अच्छा ही रहेगा।

आयु, दुर्घटना

आपके जन्म के समय आठवें भाव में तुला राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी शुक्र है। शुक्र आठवें स्थान का स्वामी होकर दूसरे स्थान में स्थित है, जिससे अपना मध्यम फल प्रदर्शित कर रहा है। सामान्यतया आपकी आयु तथा अरोग्यता अच्छी रहेगी। आप यदा–कदा अपने आयु तथा स्वास्थ्य के विषय में चिन्तित रहेंगे। जीवन में संयमित दिनचर्या को अपनाने से आप स्वस्थ तथा दीर्घजीवि रहेंगे। आपके जीवन में आकस्मिक दुर्घटना आदि के अवसर कम ही हैं। चोरी–डकैती इत्यादि की घटनाएँ भी कम होंगी तथा इस तरह की घटनाएँ हो जाने से विशेष हानि नहीं होगी। आपको अपनी सम्पत्ति की सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए। अपने घन या किसी बहुमूल्य वस्तुओं की सुरक्षा के लिए आपको बीमा करवाना लाभकारी रहेगा। जीवन में आपको आकस्मिक लाभ होने की सामान्य सम्भावना रहेगी। विशेषतया सांसारिक सुख उपभोग की वस्तुओं का लाभ हो सकता है। अपने किसी प्रियजन के माध्यम से भी इस तरह के लाभ होने का योग है।

सौभाग्य, आध्यात्मिकता, प्रसिद्धि, यात्राएँ

आपके जन्म के समय नवम् भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी मंगल है। मंगल नवमेश होकर बारहवें स्थान में स्थित है, जिससे अपने फल में कमी प्रदर्शित कर रहा है। जीवन में आपको अच्छी स्थिति प्राप्त करने के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा तथा

उससे जितना लाभ मिलना चाहिए उससे कुछ कम ही लाभ प्राप्त होगा। आपके लिए आयु के 28 वें वर्ष से 32 वर्ष तक का समय सामान्यतया लाभकारी रहेगा। प्रयासरत रहने से कुछ सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका अपने घर्म संप्रदाय में सामान्य श्रद्धा तथा विश्वास रहेगा लेकिन घार्मिक क्रिया–कलापों को दैनिक रूप से करने में कम ही रुचि रहेगी। घार्मिक तथा आध्यात्मिक विषयों की वार्ताओं के सम्बन्घ में कुछ तर्क – वितर्क आदि करने का स्वभाव हो सकता है। इस तरह के तर्क – वितर्क से बचें। जीवन में आपको प्रसिद्धि एवं पुरस्कार आदि प्राप्त होने के सामान्य अवसर हैं। इनकी प्राप्ति के लिए आपको अघिक परिश्रम पूर्वक अच्छे कार्यों को सम्पादित करने की आवश्यकता रहेगी। लंबी यात्राओं से आपको किसी विशेष प्रकार के लाभ होने की सम्भावना कम रहेगी। इस प्रकार की यात्राओं में सावघानी रखें।

व्यवसाय, सामाजिक स्तर, आजीविका

आपके जन्म के समय दशम् भाव में घनु राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति दशमेश होकर ग्यारहवें स्थान में स्थित है, जिससे अपने फल में कमी प्रदर्शित कर रहा है। आपकी कुण्डली में दशमेश बृहस्पति की स्थिति के अनुसार जीविका प्राप्ति में विलम्ब व संघर्ष की सम्भावना रहेगी। नौकरी या व्यवसाय आदि में आपको परिश्रम के अनुकूल पूर्ण लाभ प्राप्त होने की सम्भावना कम रहेगी। आपके द्वारा किए गए परिश्रम का लाभ गुप्त रूप से दूसरे लोगों को मिल सकता है। आप जीविका की दृष्टि से सरकारी विभागों में या प्राइवेट विभागों में वकील, शिक्षक, वैद्य, घार्मिक प्रवक्ता आदि क्षेत्रों में अपनी योग्यता सामर्थ्य के अनुसार प्रयास करने से सफलता प्राप्त कर सकते हैं। व्यापारिक दृष्टि से विशेषतया अपनी रुचि के अनुसार कोई स्वतन्त्र व्यवसाय करने से लाभ रहेगा। पीले रंग से सम्बन्घित वस्तुओं का व्यापार करने से भी सामान्य लाभ होने की सम्भावना हो सकती है। जाँच परख करने के पश्चात् ही व्यापार करें,। आपका सामाजिक स्तर सामान्य ही रहेगा। सामाजिक क्षेत्र में आपका कोई विशेष प्रभाव नहिं रहेगा। मान–सम्मान तथा पद–प्रतिष्ठा प्राप्त होने की सम्भावना कम ही रहेगी। आपके पिता सरल, सामान्य बुद्धिमान, स्वाभिमानी तथा कुछ प्रभावी व्यक्तित्व के घनी हैं। उनका अपने पारिवारिक जनों तथा अन्य लोगों से व्यवहार सामान्य रहेगा। आपके लिए भी उनका योगदान कम ही रहेगा। पिता के साथ यदा–कदा सामान्य मतभेद हो सकते हैं।

लाभ, आकांक्षएँ, आय

आपके जन्म के समय ग्यारहवें भाव में मकर राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी शनि है। शनि ग्यारहवें स्थान का स्वामी होकर तीसरे स्थान में स्थित है, जिससे अपना मध्यम फल प्रदर्शित कर रहा है। आपको अपने आय स्रोत को बढ़ाने के लिए परिश्रम करना पड़ेगा। आप जीवन में भौतिक सुख ऐश्वर्यों का अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे। प्रारंभिक अवस्था में आपकी आय कुछ कम हो सकती है लेकिन तत्पश्चात आपके आय साघनों में वृद्धि होने की सम्भावना रहेगी। अपनी आर्थिक स्थिति को सदृढ बनाने के लिए आप अतिरिक्त मनोनुकूल व्यवसाय के द्वारा लाभ कर सकते हैं। आपकी जीवन में कई आकांक्षाएँ रहेंगी। महत्वाकांक्षाएँ पूर्ण होने की सम्भावना रहेगी लेकिन पूर्ण होने में कुछ विलम्ब हो सकता है। आपको आकांक्षाओं के प्रति कुछ सजग रहने की आवश्यकता है तथा पूर्ति के लिए परिश्रम पूर्वक उचित प्रयास करना चाहिए। अपने बड़े भाई–बहनो की ओर से यदा–कदा सहयोग मिलता रहेगा। बड़े भाईयों की अपेक्षा बड़ी बहनों की ओर से अधिक स्नेह तथा सहयोग प्राप्त होगा। बाएं कान में विशेष रोग तथा परेशानी हो सकती है परंतु उपचार से शीघ्र ही ठीक हो सकेगी।

व्यय, आवास परिवर्तन

आपके जन्म के समय बारहवें भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी शनि है। शनि बारहवें स्थान का स्वामी होकर तीसरे स्थान में स्थित है, जिससे अपना मध्यम फल प्रदर्शित कर रहा है। आप सामान्य रूप से अपने कुटुम्बिजनों, भाई बहनों तथा संतान के लिए घन खर्च करेंगे। आपको आकस्मिक घन आदि का लाभ हो सकता है लेकिन कभी–कभी अधिक घन व्यय होने की सम्भावना हो सकती है। आप किसी घार्मिक तथा सामाजिक कल्याण जैसी संस्थाओं व गरीब जनों के सहयोग के लिए तन, मन, घन से यथासंभव सहायता प्रदान करेंगे। जीवन में विशेष हानि आदि होने की सम्भावना कम रहेगी। आपको दूसरों से अनावश्यक विवाद करने तथा कर्ज लेने में सावघानी रखनी चाहिए जिससे भविष्य में किसी तरह की परेशानी से बचा जा सके। आपके जीवन में आवास परिवर्तन होने के सामान्य अवसर हैं परंतु आवास परिवर्तन होने से आपको कोई विशेष परेशानी का सामना नहर्ि करना पड़ेगा, फिर भी सोच समझ कर ही निर्णय लेना आपके लिए अच्छा रहेगा। आपकी मुक्ति

(मोक्ष) के सम्बन्ध कुछ जिज्ञासा हो सकती है तथा आपकी ध्यान जप, पूजा, संकीर्तन तथा अच्छे ग्रन्थों के स्वाध्याय में सामान्य अभिरुचि रहेगी।

15/04/2019 – 01/11/2021 में आप बुध की महादशा और राहु की अन्तरदशा के प्रभाव में रहेगें।

इस अवधि के दौरान आपको मिश्रित सफलताए मिल सकती है। आपको अपनी क्षमता दिखाने के काफी अवसर मिलेंगे। एक तरफ आपको चुनौती भरी परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। जिसे आप व्यापार या लेन देन से जुड़े हैं तो आप इस अवधि के दौरान काफी मुनाफा कमाएंगे। अच्छे भाग्य की मदद से आपको अच्छे प्रस्ताव भी मिल सकते हैं। यदि आप किसी एजेंसी प्रचार से जुड़े हैं तो काफी अच्छे परिणाम की उम्मीद कर सकते हैं। आपके लिए यह समय अच्छे मान–सम्मान वाला सिद्ध होगा। यदि आप नौकरी पेशा में है तो आपकी सेवा शर्तों में निरंतर सुधार होगा। आप पर किसी मुश्किल काम की जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है जिसे आप सफलतापूर्वक पूरा कर सकते हैं और इससे आपको शोहरत हासिल होगी। आप के सामने बाघाएँ भी आ सकती है। छात्र होने के नाते आपको मैरिट हासिल करने के लिए थोड़ा और प्रयास करने की जरूरत है। अपने का स्वास्थ्य ध्यान रखें क्योंकि यह गड़बड़ भी हो सकता है। कुल–मिलाकर घरेलु माहौल सौहार्दपूर्ण रहेगा। काफी इलाज के बावजूद आपके अभिभावकों का स्वास्थ्य ठीक नहर्िरह सकता है। भलाई इसी में है कि जरूरत पड़ने पर प्राकृतिक इलाज करवाऐं।

01/11/2021 – 07/02/2024 में आप बुध की महादशा और गुरु की अन्तरदशा के प्रभाव में रहेगें।

कुल मिलाकर यह आपको अपनी क्षमता को आंकनेवाला सिद्ध हो सकता है और अंजाने में होने वाली गलतियों के बारे में भी आप पता लगा सकते हैं। घर्म या जीवन के ऊँचे दर्शन के प्रति आपका झुकाव हो सकता है। अपने व्यापार या लेन देन में आपसे कोई भूल हो सकती है। जिसके कारण आपको नुकसान होगा। अंजाने में आप पर असुरक्षा की स्थिति हावी हो सकती है। अगर आप नौकरी पेशे में हैं तो काम अपने आप नहर्िबिगड़ेगा। अगर आप सही ढ़ंग से निष्कर्ष निकालेंगे तो आप इस निर्णय पर पहुँच जाएंगे कि आपसे गलतियाँ भी हुई है। अगर आप छात्र हैं तो नासमझी में अपना समय व्यर्थ न गँवाएं। अगर आप अपने लक्ष्य को पाना चाहते हैं तो यह समय आपके अनुकूल सिद्ध हो सकता है। घरेलु माहौल में तनाव हो सकता है।

07/02/2024 – 17/10/2026 में आप
बुध की महादशा और शनि की अन्तरदशा के प्रभाव में रहेगें।

आपके लिए यह समय अच्छा नहीं है। आपको अपने दैनिक कामों को करने में देरी या अड़चन का सामना करना पड़ सकता है। इस तरह के परिणाम से आप निराश हो सकते हैं। लेकिन यह ध्यान में अवश्य रखें कि यह समय ऐसा है जब आपको अपने आप सफलता मिलनी ही है। लेकिन कामों के बनाने में अपना समय लगेगा। अगर आप व्यापारी है तो बिना सोचे समझे किसी तरह का विस्तार नहीं करें। अगर आप नौकरी पेशा हैं तो आपकी सेवा शर्तों में निरंतर गिरावट आ सकती है। अपने काम के स्तर को सुधारने का प्रयत्न करें। आपकी समस्याएँ अपने आप कम होती जाएंगी। छात्र होने के नाते इस समय को अपने पर हावी मत होने दें। योगासन करें, इससे आप अपने अंदर ताजगी और शक्ति महसूस करेंगे और फिर अपनी परीक्षा या प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए जुट जाए। घरेलु माहौल के लिए यह समय अच्छा साबित नहीं हो सकता है। लेकिन यह आपकी परेशानियों का आखिरी दौर है इसलिए अपने आपको निराश न होने दें।

17/10/2026 – 15/03/2027 में आप
केतु की महादशा और केतु की अन्तरदशा के प्रभाव में रहेगें।

यह समय आपको जीवन के कुछ ऐसे विचित्र स्वादों का अनुभव देगा जो सभी को एक न एक दिन होते हैं। यदि आपको सीमाएं तोड़कर समस्याओं के आरपार देखने की कला आती है तो मौके आपकी मुट्ठी में रहेंगे। आप भले ही यह लक्ष्य कर लें कि सभी सम्भव स्रोतों से समस्याएँ पैदा हो रही हैं और आपके लिए शायद ही कोई विकल्प बाकी रखा हैं। महानता इसी में है कि आप महान व्यक्तित्व की तरह काम करें। आपके कुछ समस्याग्रस्त क्षेत्र होंगे नौकरी, व्यवसाय, घरेलु मामलें आदि। यदि आपको इनका पता नहीं है तो इन पर सोचते रहने से आपकी चिंता बढ़ेगी। आपकी भ्रामक अंतः स्फूर्तियाँ आपको भयानक तनाव में डाल सकती है और यदि भावुकता का सहारा लेते हैं तो जाल से निकलने का रास्ता आपको मिलना कठिन हो सकता है। अन्यथा आप भी सिंह गर्जना करके एक–एक को ललकार सकते हैं और आपको ताज्जुब होगा कि कोई भी आपके सामने आने का साहस नहीं करेंगे।

15/03/2027 – 14/05/2028 में आप

केतु की महादशा और शुक्र की अन्तरदशा के प्रभाव में रहेगें।

यह समय आपके लिए अच्छा नहर्िरहेगा। स्वयं अपने लोगों के साथ आपके सम्बन्ध खराब रहेंगे। अस्वस्थता से आप पीड़ित रहेंगे और आपको बराबर डॉक्टरी जाँच करवाना भी जरूरी हो सकता है। फटाफट पैसा कमाने की आपकी इच्छा काफी जोरदार रहेगी लेकिन सफलता नहर्िमिलेगी। बल्कि आप निराश हो जाएंगे। अपने व्यवसाय / व्यापार में अपने हालात सुधारने के लिए नए तरीकों और तकनीकों के परीक्षण पर काफी समय बर्बाद करेंगे। दुर्भाग्यवश उनमें से हो सकता है कि सभी सफल न रहे और आपको भारी नुकसान उठाना पड़े। यदि आप नौकरी–पेशा हैं तो यह समय आपके लिए अच्छा नहर्िहै। आपकी सेवा परिस्थितियाँ बत्तर हो सकती है तथा अपने अधिकारियों के साथ आपके झगड़े हो सकते हैं। आपके विरुद्ध कुछ मिथ्या आरोप भी लगाए जा सकते हैं। किसी प्रकार की घूस लेने से बचें क्योंकि इसमें आप पकड़े जाएंगे। यदि आप छात्र हैं, तो पढ़ाई में आपकी दिलचस्पी रहने की संभावना नहर्ि दिखती। बल्कि आप इश्कबाजी के चक्कर में रहेंगे इसलिए नतीजे खराब मिलेंगे। आपके पारिवारिक जीवन में आपके सामने आर्थिक समस्याएँ आ सकती हैं। आपकी पत्नी भी बीमार पड़ सकती हैं।

14/05/2028 – 19/09/2028 में आप केतु की महादशा और सूर्य की अन्तरदशा के प्रभाव में रहेगें।

इस अवधि में आप अच्छे खासे प्रतिक्रियावादी रहेंगे। परिस्थितियाँ जैसी चल रही है उससे आपको संतोष नहर्िहोगा और उन्हे बदलना चाहेंगे आप अपनी अंतःप्रेरणा पर काम करेंगे और इस तरह परेशानी में पड़ेंगे। आपका व्यवसाय / व्यापार काफी बत्तर चलने की सम्भावना है। आप चूंकि सतर्क नियोजन के लिए अधिक समय नहर्िदेते इसलिए आपको घाटे हो सकते हैं। आर्थिक संकट भी पैदा हो सकता है इसलिए रुपए–पैसे के मामलें में सावधानी बरतें। तनाव के प्रभाव के कारण आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। यदि आप नौकरी–पेशा हैं तो आपका सेवा वातावरण सामान्य रहेगा। लेकिन आप में अपने अधिकारियों से झगड़ने की पवृत्ति पनपेगी और इससे आप कठिनाई में पड़ेंगे। आपका दुर्व्यवहार उन्हे सहन नहर्िहोगा इसलिए गलत आचरण से बचें। यदि आप छात्र हैं तो किसी प्रतियोगिता परीक्षा में अच्छी सफलता की सम्भावना काफी जोरदार है, बशर्ते कि आप बहुत–बहुत गंभीरता से इसे लें। आपका पारिवारिक जीवन अधिक अच्छा नहर्िरहेगा। कुछ सदस्यों का स्वास्थ्य भी खराब हो

सकता है।

19/09/2028 – 20/04/2029 में आप केतु की महादशा और चन्द्र की अन्तरदशा के प्रभाव में रहेगें।

इस अवधि में आपको तमाम मुशालते रहेंगे तथा स्थितियाँ आपके मनोनुकूल न बनने पर आप निराशा का अनुभव करेंगे। अधिकतर समय भयग्रस्त रहेंगे। अधिक लोगों पर यहाँ तक कि अपने नजदीकियों पर भी आप भरोसा नहर्िकरेंगे। अपने व्यवसाय अथवा व्यापार में सही नजरिए के आभाव में आप अपने को गलत परिस्थितियों में फंसा पाएंगे। आप मूर्खता करेंगे और इसके लिए कष्ट भी पाएंगे। अपने तरीके अधिक तर्कसंगत बनाने की कोशिश करें। इस अवधि में आप आर्थिक संकट में भी पड़ सकते हैं। यदि आप नौकरी–पेशा हैं तो दूसरों से झगड़े मोल लेने की अपेक्षा बेहतर होगा कि आप अपने काम में मन लगाएँ। इसके चलते आप भारी कष्ट और मुसिबत में पड़ सकते हैं। यदि आप छात्र हैं, तो अच्छे नतीजे पाने के लिए अपने काम में अपने कौशल का उपयोग करें, तथा जैसी कि सम्भावना है अपना समय नष्ट न करें। आपके पारिवारिक जीवन में तनाव रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य बत्तर मोड़ ले सकता है।

20/04/2029 – 16/09/2029 में आप केतु की महादशा और मंगल की अन्तरदशा के प्रभाव में रहेगें।

इस अवधि में आपमें बदले की भावना और उतावलापन अधिक रहेगा। जबान के चलते आप तमाम दुश्मन पैदा करेंगे। जिनमें से कुछ आपको क्षति पहुँचा सकते हैं। अपने व्यवसाय / व्यापार में आपकी आकस्मिकता के कारण आपके लिए समस्याएँ पैदा होंगी। स्थिति पर विचार करना शायद ही गंवारा करें। एक के बाद दूसरे उतावले निर्णय आप लेते रहेंगे, इससे तमाम नुकसान होने के अलावा आपके विरोधियों को लाभ उठाने का भी मौका मिलेगा। पैसा ही आपकी सारी परेशानियों की जड़ में रहेगा और इस अवधि में आप आर्थिक संकट में भी पड़ सकते हैं। यदि आप नौकरी–पेशा हैं तो हो सकता है कि अपने काम से आप खुश न रहे। जटिल काम आपको निराश करेगा तथा आप में बदलाव के लिए उतावलापन भी पैदा हो सकता है। लेकिन भावनात्मक न बने, क्योंकि यह मात्र एक अस्थाई दौर है तथा शांत रहकर अपना काम किए जाना बेहतर रहेगा। यदि आप छात्र हैं तो आप अपनी सफलता की

बड़ी–बड़ी डींगे तो मारेंगे, किंतु यथार्थ यह है कि आपके लिए अपने काम पर ध्यान देना अनिवार्य है अन्यथा आप असफल रहेंगे। आपके पारिवारिक जीवन में विवादों और तनाव की भरमार रहेगी।

नक्षत्र फल

आपके जन्म के समय चंद्रमा आर्दा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में विचरण कर रहा था। इस कारण आपको आर्दा नक्षत्र का चतुर्थ चरण प्राप्त हुआ। आर्दा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने के फलस्वरूप आपकी जन्म राशि मिथुन तथा राशि का स्वामी बुध है। शास्त्रों के मतानुसार आर्दा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले जातक के नाम का प्रारंभिक अक्षर "छ" होना चाहिए।

ज्योतिष शास्त्र के विभिन्न ग्रंथों में आर्दा नक्षत्र की व्याख्या विभिन्न ढंगों से की गई है।

उदाहरणस्वरूप जातक–पारिजात नामक ग्रंथ के मतानुसारः
आर्दायामधनश्चलोऽधिकबलः क्षुद्रक्रियाशीलवान।

अर्थात आर्दा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक घन रहित, चंचल मन वाला, बलशाली, क्षुद्रकार्य करने वाला, शीलवान् तथा मूटात्मा होता है।

ज्योतिष शास्त्र के प्रसिद्ध ग्रंथ बृहतजातका के मतानुसार
शठगर्वितः कृतघ्नो हिंस्त्रः पापश्च रोद्रर्क्षो।

अर्थात आर्दा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक अपने हित के लिए कपट अथवा छल कर सकता है। वह अभिमानी, कृतघ्न क्रूर तथा दुष्ट कर्मी होता है।

ज्योतिष शास्त्र के एक अन्य ग्रंथ जातका भरणम के मतानुसारः
क्षुधाधिको रुक्षशरीरकान्तिर्बन्धुप्रियः कोपयुक्तः कृतघ्नः।
प्रसूतिकाले च भवेत्किलार्दा दयार्दयेचेता न भवेन्मनुष्यः।।

अर्थात आर्दा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक क्षुधातुर, रुक्ष शरीर वाला, परिवार जनों का प्रिय, कुपित रहने वाला, कृतघ्न तथा क्रूर होता है।

संक्षेप में आर्दा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक मूर्ख, अभिमानी, अन्य व्यक्तियों के पदार्थों का नाश करने वाला, दूसरों को दुख देने वाला, पापवृति वाला, घन रहित, चंचल मन वाला,

अतिबलवान, क्षुद्र कार्य करने वाला, क्रियाशील, घार्मिक व सामाजिक कार्यों में मन लगाने वाला होता है।

आपकी जन्म राशि मिथुन है। इसका स्वामी बुध है। विभिन्न ज्योतिष के ग्रंथों में विभिन्न श्लोकों द्धारा की गई है। उदाहरण स्वरूप एक प्रसिद्ध ग्रंथ जातक पारिजात के मतानुसारः
दीर्घायुः सुरतोपचारकुशलो हास्यप्रियो युग्मके।

अर्थात मिथुन राशि में जन्म लेने वाला जातक लंबी आयु वाला, काम कला में प्रवीण तथा हास्य प्रिय होता है।

मानसागरी ग्रंथ के मतानुसार :
मिष्टवाक्यो लोलदृटर्दयालुमैथुनप्रियः।
गान्धर्ववित्कणठरोगी कीर्तिभागी धनी गुणी।।
गौरो दीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृडव्रतः।
समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने नरः।।

अर्थात मिथुन राशि में जन्म लेने वाला जातक मीठे वचन बोलने वाला, चंचल दृष्टि वाला, दयावान, मैथुन प्रिय, गाना गाने वाला, कराठ में रोग वाला, कीर्तिमान, घनवान, गुणी, गोरे रंग वाला, लंबे शरीर वाला, चतुराई पूर्ण भाषा बोलने वाला, बुद्धिमान, दृढ़ संकल्प वाला, प्रत्येक कार्य में समर्थ तथा विभिन्न परिस्थितियों में न्याय करने वाला होता है।

सारावली नामक ज्योतिष के ग्रंथ में मिथुन राशि की व्याख्या निम्नलिखित ढंग से की गई है।
उन्नासश्यामचक्षुः सुरतविधिकलाकाव्यकृभ्दोगभोगी
हस्ते मत्स्याधिपांको विषयसुखरतो बुद्धिदक्षः सिरालः।
कान्तः सौभाग्यहास्यप्रियवचनयुतः स्त्रीजितो व्यायता
याति क्लीबैश्च सख्यं शशिनि मिथुनगे मातृयुग्मप्रपुष्टः।।

जिस जातक के जन्म के समय मिथुन राशि प्राप्त हो तो वह जातक ऊँची नाक व काली आँखों वाला होता है। वह काम कला में प्रवीण होता है। वह कविता करने वाला होता है।

वह नाना प्रकार के सुखों का भोग करने वाला होता है। उसके हाथ में मछली जैसा चिह्न होता है। वह विभिन्न विषय सुखों में लीन रहता है। वह बुद्धिमान तथा बड़े नेत्रों वाला होता है। वह सुंदर, भाग्यवान तथा हँसी मजाक करने वाला होता है। व मीठी वाणी बोलता है। वह स्त्री से पराजित होने वाला, लंबी देह वाला तथा दो माताओं द्वारा पाला जाने वाला होता है।

ज्योतिष के एक अन्य ग्रंथ ज्योतिशत्तवम के मतानुसारः
सुरतविधि कलाविन्नीलनेत्रोच्चनासो
विषय सुखसमेतो भोगभाग व्यायता□ः।
दयितवचनयुक्तः काव्यकृत कीत्बसख्यः
शशिनि नृयुजि हस्ते मत्स्यपावडः शिरालः।

अर्थात मिथुन राशि में जन्म लेने वाला जातक कई कलाओं को जानने वाला काली आँखों वाला, ऊँची नाक वाला, विषय सुखों से युक्त भोगी, बड़े शरीर वाला, मीठे वचन बोलने वाला, कविता पाठ करने वाला, मछली के हाथ पर निशान वाला होता है।

ज्योतिष शास्त्र के एक ग्रंथ फलदीपिका के मतानुसारः
श्यामेक्षणःकुण्ग्रचतमूर्द्धजः स्त्रीक्रीडानुरक्तश्च परेवडतज्ञः।
उतु□नासः प्रिसगीतनृत्रो वसन सदान्त सदने च युग्मे।।

अर्थात मिथुन लगन में जन्म लेने वाला जातक काली आँखों वाला तथा घुंघराले बालों वाला होता है। ऐसे जातक विलासी होते हैं। वह अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। तथा दूसरों की इच्छा जल्द समझने में समर्थ होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने घर के अंदर ही रहना पसंद करते हैं। अर्थात अधिक भ्रमणशील नहर्िहोते।

ज्योतिष शास्त्र के एक अन्य ग्रंथ जातका भरणम के मतानुसार
प्रियकरः करमत्स्ययुतो नरः सुरतसौख्यभरो युवतीप्रियः।
मिथुनराशिगते हिमगौ भवेत्सुजनताजनताकृतगौरवः।।

अर्थात मिथुन राशि में जन्म लेने वाला जातक जन मानस में लोकप्रिय, हथेली में मछली के चिह्न वाला, काम कला में प्रवीण, स्त्रियों का प्रिय तथा अपने समाज में अपनी सज्जनता से

सम्मान तथा गौरव प्राप्त करता है।

ज्योतिष शास्त्र के एक अन्य प्रसिद्ध ग्रंथ जातका दीपिका के मतानुसारः
मृदुरुपचितगात्रः श्लिष्टविस्पष्टवाक्यः।
परजनहितकर्ता पंडितो हास्य युक्तः।।
प्रकृति शुभचरित्रं श्लेष्मपित्तस्वभावो।
भवति मिथुन जातो गीतवद्यानुरक्तः।।

अर्थात मिथुन राशि में जन्म लेने वाला जातक कोमल व पुष्ट शरीर वाला होता है। वह स्पष्ट भाषा का प्रयोग करता है। वह समाज में अन्य व्यक्तियों की सहायता करने वाला, ज्ञानी, हास्यप्रिय व उत्तम आचरण वाला होता है। उसकी प्रकृति पित्त व कफ युक्त होती है। वह गाने बजाने में लिप्त रहता है।

संक्षेप में मिथुन राशि में जन्म लेने वाला जातक चतुर, बुद्धिमान, दृढ़ मित्रों वाला, सुशील, कम बोलने वाला, परिवार को पालने वाला, रतिप्रिय, गुणवान, भोगी, स्वभाव से दानी, विषयासक्त, नृत्य व गान विद्या का प्रेमी, शास्त्रों का ज्ञाता, मीठे व स्पष्ट वचनों का प्रयोग करने वाला, कुशाग्र–बुद्धि, पुस्तक प्रेमी, मानसिक एवं शारीरिक कार्य में तत्पर, भ्रमणशील, कभी कभी दृढ़ प्रतिज्ञा, सर्व प्रिय, सर्व प्रेमी, गौरवयुक्त, हास्य व जुआ इत्यादि जानने वाला व रूपवान होता है। उसकी नाक ऊँची, बाल घुघंराले, गोल आँखें तथा शरीर पे तिल अथवा लहसुन आदि चिह्न स्वरूप होते हैं। वह स्त्री सुखी होता है। उसे अचानक घन प्राप्ति का योग भी रहता है। ऐसे जातक के एक से अधिक व्यवसाय होते हैं। तथा व्यवसाय परिवर्तनशील होते हैं।

तिथियों में प्रतिपदा, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथि तथा आषाढ़ मास, स्वाती नक्षत्र तथा सोमवार अशुभ फलदायक होते हैं। वृषभ, सिंह, कन्या एवं तुला राशि वालों से जातक का उपकार होता है। कर्क राशि वालों से शत्रुता होती है। ऐसे जातक की अपने इष्ट गणेश जी की पूजा आराघना करनी चाहिए। पन्ना, हरे वस्त्र, गेहुँ, घी इत्यादि वस्तुओं का दान करना लाभकारी होता है। इसके अतिरिक्त मानसिक तनाव तथा अशुभ फलों का प्रभाव कम करने हेतु बुघ के तंत्रीय मंत्र का जाप या हवन करना या करवाना भी हितकारी सिद्ध होता है। बुघ का तंत्रीय मंत्र इस प्रकार है। :
ऊं ऐं स्त्री श्री बुधाम नमः।

शनि की साढ़ेसती

जन्म कुण्डली में जन्म राशि से बारहवीं राशि में गोचरस्थ शनि का प्रवेश साढ़े साती का आरंभ कहलाता है। साढ़े साती के तीन चरण है। गोचरस्थ शनि का जन्म राशि से बारहवीं राशि में प्रवेश पहला चरण, जन्म राशि में प्रवेश दूसरा चरण तथा जन्म राशि से द्वितीय राशि में प्रवेश तीसरा चरण होता है। चूंकि गोचरस्थ शनि प्रत्येक राशि में ढाई वर्ष तक रहता है। इसलिए इसे साढ़े साती कहते हैं। साढ़े सात वर्ष कभी भी केवल अशुभ ही नहर्िहोते शनि जिस राशि में हो उसके अधिपति की शनि से मित्रता, शत्रुता अथवा समता पर शनि की शुभता अथवा अशुभता निर्भर करती है। जन्म कुण्डली में शनि जिस भाव का अधिपति होगा शनि की शुभता अथवा अशुभता उसी के अनुरूप होगी।

शनि–साढ़ेसती की तिथि तालिका

पहला चक्र
पहला चरण 07/05/1973 – 10/06/1973
दूसरा चरण 10/06/1973 – 23/07/1975
तीसरा चरण 23/07/1975 – 07/09/1977

दूसरा चक्र
पहला चरण 06/06/2000 – 23/07/2002
दूसरा चरण 23/07/2002 – 05/09/2004
तीसरा चरण 06/09/2004 – 01/11/2006

तीसरा चक्र
पहला चरण 08/08/2029 – 30/05/2032
दूसरा चरण 30/05/2032 – 12/07/2034
तीसरा चरण 12/07/2034 – 27/08/2036

मिथन राशि वालों के लिए गोचरस्थ शनि का वृषभ राशि में प्रवेश साढ़े साती का प्रथम चरण आरंभ होगा तथा कर्क राशि तक शनि के भ्रमण तक साढ़े साती रहेगी। मिथुन राशि की कुण्डली में शनि अष्टमेश तथा भाग्येश है। प्रथम ढाई वर्ष शनि अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि में रहता है। पर अपनी राशि से केन्द्र व त्रिकोण में सम्बन्ध बनाता है। वृषभ राशि में

शनि की साढ़ेसती

स्थित होने पर शनि की दृष्टि द्वितीय षष्ठ व भाग्य भाव पर पड़ती है। द्वितीय तथा षष्ठ भाव शनि के शत्रु भाव हैं। परंतु भाग्य भाव उसका अपना भाव है। ऐसी स्थिति में जातक असभ्य भाषी कठोर चिड़चिड़े स्वभाव वाला बन जाता है। कार्य क्षेत्र में बाघाएँ आती हैं तथा योजनाएँ असफल होती हैं। घनाभाव भी कार्य क्षेत्र में पिछड़ने का कारण बनता है। मित्र वर्ग से घोखा मिलता है। ऐसे समय में जातक अपने बच्चों का व्यवस्थित रूप से पालन पोषण नहर्िकर पाता तथा संतान को कष्ट रहता है। शिक्षा के क्षेत्र में असफलता मिलती है। जातक नए व्यसनों में पड़ कर तथा व्यर्थ घूम कर समय नष्ट करता है। खाने–पीने में अनियमितता के कारण गले का कोई रोग हो सकता है। पेट के रोग, अपचन, अजीर्ण तथा वायु रोग से जातक पीड़ित रहता है। उच्च अधिकारियों से अनबन रहती है जिसके कारण जातक बदला लेने की ताक में रहता है। ऐसे समय जातक को अवनति अथवा स्थानांतरण का सामना करना पड़ सकता है। शनि की द्वितीय भाव पर दृष्टि पड़ने से कुटुम्ब स्थान को प्रभावित करती है जिसके कारण परिवार से अनबन रह सकती है अथवा परिवार के कारण जातक मानसिक व शारीरिक रूप से व्यथित रहता है। घर्म, आस्तिकता तथा पूजा पाठ इत्यादि से जातक सम्बन्घ नहर्िरखता। ऐसी स्थिति में दया, प्रेम, ममता, परोपकार आदि की भावनाओं में कमी आ जाती है। यह समय मातृ–कुल के लिए थोड़ी परेशानी का कारण भी बन सकता है। घन कमाने के लिए जातक को घर से दूर जाना पड़ सकता है। जातक किसी में विश्वास नहर्िकरता। व्यापार में साझेदार घोखा दे सकते हैं। घन का आभाव रहता है। स्त्री को स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियाँ रह सकती हैं। संतान को कष्ट रहता है विशेषकर कन्या संतति को। शनि के नवमेश होने से संभवतया विदेश जाना पड़ सकता है।

ढाई वर्ष पश्चात् शनि मिथुन राशि में प्रवेश करता है जो बुघ की राशि है। यहाँ से साढ़े साती का द्वितीय चरण आरंभ होता है। इस समय शनि की सुख भाव, आयु भाव तथा लाभ भाव पर दृष्टि पड़ती है। भाग्य स्थान से शनि का षडाष्टक योग बनता है जिसके फलस्वरूप जातक अपनी आर्थिक स्थिति सुघारने का प्रयास करता है। परंतु जिसमें वह पूर्णतः सफल नहर्िहो पाता। जातक सुख पाने के लिए भटकता रहता है। परंतु रोग व कष्ट से मुक्ति नहर्िमिलती। शनि की लगन में स्थिति घन व परिवार दोनो के लिए हानिकारक होती है। मित्रों से घोखा मिलता है। जातक की रुचि कुकर्मों में बढ़ जाती है तथा कई बार निम्नस्तरीय लोगों से जातक के संपर्क बन जाते हैं। दुर्घटना की सम्भावना अधिक रहती है। गिरने से चोट भी लग सकती है यदि विद्यार्थी जीवन हो तो इस समय असफलता ही हाथ लगती है। इस समय जातक अपने पराए या भले बुरे का भेद करने में असमर्थ होता है। शनि की यह स्थिति

शनि की साढ़ेसती

जातक की बुद्धि भ्रमित कर देती है। शनि की तृतीय दृष्टि भ्राता स्थान को प्रभावित करती है। मित्र राशि में स्थित होने पर भी भाई बहनों से विवाद का भय बना रहता है जातक का भाई बंधुओं से शत्रुता पूर्ण आचरण रहता है। इस काल में पुत्र प्राप्ति भी हो सकती है। यदि दशा–अन्तर्दशा का योग भी हो जाए तो जातक के संपर्क में दुष्ट व मूर्ख लोग ही रहते हैं। किसी विशेष विषय में जातक दक्षता प्राप्त कर सकता है। अंधेरे के कार्यों व पदार्थों से जातक को लाभ हो सकता है। ज्येष्ठ संतान से विरोघ का सामना करना पड़ सकता है। जातक को अपने क्रोघ पर नियंत्रण रखना चाहिए। अन्यथा उच्चाधिकारियों से विरोघ बढ़ सकता है। यात्राओं से हानि हो सकती है। शनि की सप्तम भाव पर दृष्टि पड़ने के परिणाम स्वरूप विवाह में विलम्ब हो सकता है। पति पत्नी में लड़ाई अथवा बिछोह हो सकता है। साझेदारी के व्यापार में हानि अथवा घोखा हो सकता है। इस समय साझेदारी का काम आरंभ न करें,। माता पिता से विरोघ हो सकता है। जातक व्यापक स्तर पर किए गए कार्य में सफल नहीं हो सकता। जातक अपने भाग्य के विषय में चिन्तित रहता है। यदि स्त्री जातक हो तो गर्भपात हो सकता है। जातक किसी न किसी रोग से पीड़ित रह सकता है। इस समय पिता को कष्ट व मातृ–सुख में कमी आ जाती है। सरकारी कामों में तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने में अड़चन आ सकती है। ढाई वर्ष के पश्चात् जातक खोया हुआ घन, बुद्धि, संतान, स्वयं का सुख प्राप्त करने में सफल होता है परंतु आचरण में कटुता लगी ही रहती है। जातक विदेश में घन कमा सकता है तथा सम्मानित भी होता है। उसे वाहन चलाते समय विशेष सावघानी रखनी चाहिए। शिक्षा के विषय में इस समय असफलता ही हाथ लगती है। जातक के बने बनाए काम बिगड़ जाते हैं। ऐसे समय निम्न वर्ग के लोग जैसे नौकर इत्यादि साथ देते हैं। परंतु जातक अपने स्वभाव के कारण उनका सहयोग भी नहीं ले पाता है।

तत्पश्चात शनि के अंतिम चरण में कर्क राशि में प्रवेश करते ही साढ़े साती का तीसरा चरण आरंभ हो जाता है। तीसरे चरण में शनि अपने शत्रु चंद्रमा की राशि कर्क में है। यह स्थिति कुटुम्ब स्थान को प्रभावित करती है। घन का संग्रह नहीं हो पाता। व्यापार के क्षेत्र में उतार–चढ़ाव का समय होता है। छोटे भाई बहनों को कष्ट बना रहता है। कई बार भाइयों में आपस में कलह रहती है। वाणी पर कठोरता आ जाती है। गले से सम्बन्धित कोई रोग भी हो सकता है। शनि की तीसरी दृष्टि मातृ भाव को प्रभावित करती है। इसलिए मातृ–सुखों में कमी अथवा घर में क्लेश हो सकता है। किन्तु जातक शीघ्रगामी हो जाता है। समाज तथा मित्रों से सम्मान प्राप्ति भी होती है शत्रु पराजित होने लगते हैं। किन्तु जातक की कटु वाणी होने के कारण शत्रु अधिक बन जाते हैं। जातक बुद्धिमान व पवित्र होता चला जाता है।

नौकर इत्यादि बढ़ जाते हैं तथा वाहन प्राप्ति भी हो सकती है। स्त्री जातकों को गर्भपात अथवा गर्भाशय सम्बन्धी रोग हो सकते हैं। माता तथा संतान को कष्ट होता है। अपव्यय लगा रहता है। शत्रुओं पर विजय होती है। अचानक घन प्राप्ति हो सकती है। चोरी गया अथवा खोया हुआ या किसी को दिया हुआ घन वापिस मिल सकता है परंतु थोड़ा थोड़ा करके ऐसे समय में लोहे के कार्य, अंघेरे के कार्य, तेल, घन आदि शनि की वस्तुओं के लेन देन से फायदा हो सकता है। शनि की साढ़े साती के लिए निम्नलिखित उपाय करें, अथवा किसी योग्य ज्योतिषी से परामर्श लें।

साढ़े साती का सम्पूर्ण समय एक जैसा नहर्िहोता तथा शुभ व अशुभ परिणाम इस बात पर निर्भर करते हैं कि गोचर में शनि किन नक्षत्रों में भ्रमण कर रहा है। साढ़े साती में अनिष्ट फलों को कम करने के उपाय मंत्र जाप, पूजा, सेवा तथा दान पर आघारित है। दोष शांति का उपाय जानने के लिए जन्म कुण्डली की सम्पूर्ण विवेचना आवश्यक है। फिर भी साढ़े साती के अरिष्ट फलों को कम करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं। ये उपाय यदि साढ़े साती के आरंभ होने से पहले ही कर लें तो विशेष लाभ की सम्भावना होती है।

1 प्रत्येक शनिवार को शनि देवता के मंदिर में जाकर पूजा करें, व तेल चढ़ाए।
2 शनि ग्रह का मंत्र जाप करें,। संध्या के समय 108 बार इस मंत्र का जाप करें, – " ऊँ सः शनैश्चराय नमः " या " ऊँ शं शनैश्चराय नमः " ।
3 शनिवार को वृत रखें। शुक्ल पक्ष में वृत का आरंभ करें, तथा कम से कम 40 शनिवार तक वृत रखें।
4 सरसों के तेल का दीपक प्रत्येक शनिवार पीपल के पेड़ के नीचे रखें ।
5 लोहा, काला सुरमा, सरसों का तेल, चमड़े के जूते, काला कपड़ा, शराब, काली उड़द की दाल आदि का शनिवार को दान करें,।
6 काले घोड़े की नाल या नाव की कील का छल्ला घारण करें, अथवा नीलम घारण करें,।
7 निम्न वर्ग के व्यक्तियों की सेवा करें, या उन्हे दान दें।
8 शराब व मांस का सेवन न करें,।
9 शनिवार को काला सुरमा जमीन में दबा दें।
10 नारियल अथवा बादाम शनिवार के दिन नदी में बहाएं।
11 रात्रि में दूघ न पीएं।

यद्यपि ये उपाय बता दिए गए हैं किन्तु इन्हें अपने आप आरंभ नहर्िकरना चाहिए। किसी विद्वान ज्योतिषी से परामर्श लेकर ही उपाय करने की विधि तथा उचित समय की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। यदि साढ़े साती के अरिष्ट फलों की शांति के लिए उचित रीति से उपाय किए जाए तो साढ़े साती के परिणाम उतने भयाकारी नहर्िहोंगे जितना कि उनसे भयभीत किया जाता है।

मंगलीक विचार

आपकी जन्मपत्रिका के बारहवें भाव में मंगल ग्रह स्थित है जिससे आप एक मांगलिक पुरुष हैं । मंगल के प्रभाव से आप जीवन में कई लंबी यात्राएँ करेंगे तथा इनसे आपको सामान्यतया लाभ रहेगा । आपका यदा–कदा आवश्यकता से अधिक व्यय हो सकता है । आपका शारीरिक स्वास्थ्य अधिकतया अच्छा रहेगा परंतु मानसिक रूप से आपके मन में सामान्य खिन्नता हो सकती है इसका कारण आपकी अधिक महत्वाकांक्षाएँ भी हो सकती हैं । आपके महत्वपूर्ण कार्यों में किंचित विलम्ब होने की सम्भावना रहेगी परंतु आप अपने परिश्रम तथा बुद्धि से प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में सफल होंगे । आपके विवाह होने में देरी हो सकती परंतु आपका विवाह सुख शांति पूर्वक सम्पन्न होगा । आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अधिकतया अच्छा रहेगा तथा पति पत्नी में परस्पर मधुर सम्बन्ध बने रहेंगे । आप सुख पूर्वक वैवाहिक जीवन यापन करेंगे ।

मंगल की बारहवें भाव से चतुर्थ पूर्ण दृष्टि तीसरे भाव पर होने से आप परिश्रमी तथा पराक्रमी होंगे लेकिन आत्म–विश्वास में कुछ कमी हो सकती है । आप प्रतिकूल परिस्थितियों के समय अपना धैर्य बनाए रखने में कठिनाई का अनुभव करते है । आप जितना परिश्रम करते है उस अनुपात में उसका फल प्राप्त होने की कम सम्भावना हो सकती है । जीवन में भाई–बहनो से आपको कोई विशेष सुख या लाभ प्राप्ति की सम्भावना कम रहेगी । मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि छठे भाव पर होने से यदा–कदा रक्त, पित्त, फोड़े – फुन्सी आदि होने की सम्भावना रहेगी । मंगल की सप्तम भाव पर आठवीं पूर्ण दृष्टि होने से आपका अपनी पत्नी से यदा–कदा सामान्य मन मुटाव रहेगा लेकिन इसका आपके दामपत्य जीवन पर कोई विशेष बुरा असर नहिं रहेगा पड़ेगा एवं आपके दामपत्य जीवन में मधुरता बनी रहेगी ।

अपने वैवाहिक जीवन को अत्यधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक लड़की से विवाह करना चाहिए जिससे एक दूसरे का परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके । इस दोष की निवृत्ति के लिए कन्या की कुण्डली के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में से किसी एक भाव में राहु, अथवा शनि सदृश पाप ग्रह को होना चाहिए । इस रीति से दोनो कुंडलियों का सम्यक मिलान हो जाने पर आप आदर्श वैवाहिक जीवन में प्रवेश करके सुख तथा ऐश्वर्य से परिपूर्ण रहेंगे ।

रत्न विचार

रत्न	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक	सोना	अनामिका	रवि	प्रातः	कृतिका, उ फाल्गुनी, उतराषाढा
मोती	चांदी	कनिष्ठिका	सोम	प्रातः	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	सोना	अनामिका	मंगल	प्रातः	मृगशिरा, चित्रा ,धनिष्ठा
पन्ना	सोना	कनिष्ठिका	बुध	प्रातः	अशलेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	सोना	तर्जनी	गुरू	प्रातः	पुर्नवसु, विशाखा, पूर्वाभद्रपद
हीरा	प्लेटीनम	कनिष्ठिका	शुक्र	प्रातः	भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा,
नीलम	चांदी	मध्यमा	शनि	सांयः	पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद
गोमेद	चांदी	मध्यमा	शनि	रात्रि	आद्रा, स्वाती, शतभिषा
लहसुनियां	चांदी	अनामिका	गुरू	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूला

रत्न विचार

रत्नों का उपयोग यदि उचित रूप से किया जाए तो रत्न वास्तव में उचित फल प्रदान करने में सहायक सिद्ध होते हैं। इस कार्य में रत्न का चुनाव अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके अतिरिक्त रत्न की उत्तमता भी अपना विशेष महत्त्व रखती है। किसी भी जातक के लिए निर्धारित किए गए शुभ रत्न, शुभ ग्रहों की किरणो को ग्रहण कर के मानव शरीर में उन किरणों का प्रसार कर शुभ फल प्रदान करने में उपयुक्त सिद्ध होते हैं। यहाँ तीन प्रकार के रत्नों का विवरण दिया गया है।

आजीवन रत्न : पुखराज
भाग्यवर्धक रत्न : मोती
शुभ रत्न : मूंगा

रत्न विचार

रत्न	मंत्र
माणिक	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मोती	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः।
मूंगा	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।
पन्ना	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।
पुखराज	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः।
हीरा	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
नीलम	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
गोमेद	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।
लहसुनियां	ऊँ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि किसी भी जातक की जन्म कुंडली में उत्तम ग्रहों की निर्बलता को दूर करने के लिए रत्नों का उपयोग किया जाता है तथा उसमें उपयुक्त रत्न का चुनाव तथा रत्न की उत्तमता अपना महत्त्व रखती है। ठीक इसी प्रकार किसी भी रत्न के धारण करने का समय भी अपना विशेष स्थान रखता है। उचित समय में किया गया कोई भी कार्य सिद्ध होता है। इसी उचित समय को हम मुहूर्त भी कहते हैं– ऐसा शास्त्रों में लिखा गया है। इस लिए रत्न धारण करते समय हमें निर्धारित दिवस, निर्धारित नक्षत्र तथा शुक्ल पक्ष का चुनाव करना चाहिए। किसी भी प्रकार का शुभ कार्य करते समय हमारे शास्त्रों में पूजा पाठ इत्यादि तथा अपने इष्ट देव का ध्यान करना बताया गया है। इस बात को ध्यान में रखकर हमें निर्धारित पूजा भी करनी चाहिए जिस से कि हमारे देवता हमें आशीर्वाद दें तथा हमारे कार्य को सफल बनाएं। रत्न जड़ित अंगूठी धारण करने से पहले इसे गंगा जल में धो लेना चहिए। इस कार्य में आप दूध का प्रयोग भी कर सकते हैं। इसके पश्चात् स्वच्छ मन से, आँखे बंद कर, प्रभु की उपासना करते हुए तथा निर्धारित मंत्रों का जाप संभव हो तो 108 बार करते हुए रत्न जड़ित अंगूठी को निर्धारित अंगुली में धारण करें तथा अपने शुभ चिंतकों में प्रसाद इत्यादि का वितरण करें। परिवार के बुजुर्ग सदस्यों से भी आशीर्वाद लें ताकि वे भी आपके मंगल भविष्य तथा आपकी इच्छाओं की पूर्ति हेतु कामना करें।

रत्नों द्वारा समस्याओं का निवारण

1 यदि आप अपने स्वास्थ्य को लेकर चिंतित हों अथवा अपना व्यक्तित्व आकर्षक बनाना चहाते हों तो आप पुखराज रत्न धारण कर सकते हैं।
2 यदि आप को धन अर्जित करने अथवा एकत्रित करने में समस्या आती हो अथवा आप जीवन में अपने पद ओहदे को लेकर चिंतित हों तो आप मूंगा रत्न धारण कर सकते हैं।
3 यदि आपको प्रतीत होता हो कि आप के द्वारा किए गए प्रयास उत्तम नतीजे लाने में असमर्थ होते हैं अथवा आपके द्वारा किए गए परिश्रम का फल आपकी क्षमता से कम प्राप्त होता है। इस के अतिरिक्त यदि आपको सहोदरों से या आपके सहोदरों को कुछ समस्याएं हैं तो आप मूंगा रत्न धारण कर सकते हैं।
4 यदि आपके माता–पिता को अथवा आपको माता–पिता से किसी प्रकार का कष्ट प्रतीत होता हो अथवा आपको वाहन /जमीन जायदाद खरीदने या बनवाने में परेशानी का सामना करना पड़ता हो। यदि विद्यार्थी जीवन में शिक्षा ग्रहण करने में बाधाओं का सामना करना पड़े अथवा घर के सुख में कमी का आभास होता हो तो आप पन्ना रत्न धारण कर सकते हैं।
5 यदि आपको बुद्धि, ज्ञान, भावुकता, संतान व पेट इत्यादि से समस्याएं हों अथवा आपको सट्टेबाजी में हानि देखनी पड़ती हो तो आप मोती रत्न धारण कर सकते हैं।
6 यदि आपके विवाह में अनचाहा विलंब हो रहा हो अथवा विवाहित जीवन में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हो। इसके अतिरिक्त यदि आप को किसी प्रकार की व्यापारिक साझेंदारी में नुकसान होता हो तो उस स्थिति में भी आप पन्ना रत्न धारण कर सकते हैं।
7 यदि आप अनुभव करते हों कि आपका भाग्य आपका समुचित साथ नहीं देता अथवा जीवन में आपको अत्यधिक संघर्ष करने पड़े हों या कर रहे हों। इसके अतिरिक्त धर्म की ओर ले जाने वाले मार्ग को प्रशस्त करना चाहते हों तो आप मूंगा रत्न धारण कर सकते हैं।
8 यदि आप अपनी नौकरी या व्यापार में अस्थिरता का अनुभव करते हों तो आप पुखराज रत्न धारण कर सकते हैं।
9 यदि आपको अपनी आय में उतार–चढ़ाव अनुभव करते हों तो आप मूंगा रत्न धारण कर सकते हैं।